अहिंसा, आगम और विज्ञान से आलोकित श्रेष्ठतम पत्रिका

भाव विज्ञान

BHAV VIGYAN

हमारी परंपरा के प्रथमाचार्य

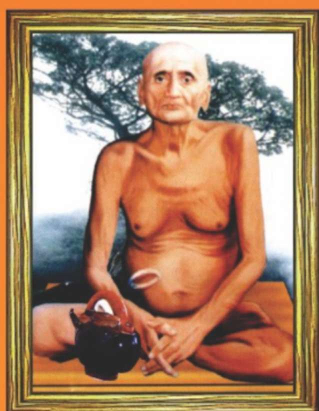

चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री
108 शांतिसागरजी महाराज

हमारे दीक्षा गुरु

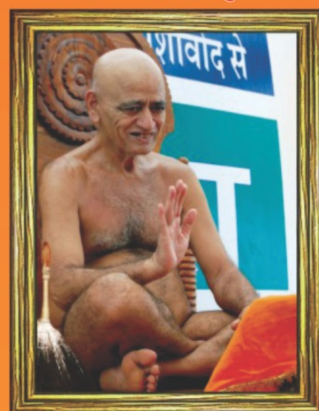

संत शिरोमणी आचार्यश्री 108 विद्यासागरजी महाराज
जन्म : 10 अक्टूबर 1946, मुनिदीक्षा : 30 जून 1968
आचार्य पद : 22 नवंबर 1972

आचार्य पद प्रदाता

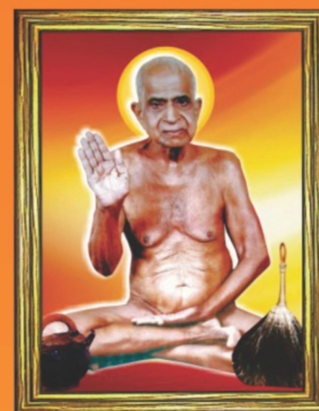

आचार्यश्री 108 सीमंधरसागरजी महाराज
जन्म : 26 मई 1926, मुनिदीक्षा : मगसिर शुक्ल पुर्णिमा 1958
आचार्य पद : मार्च 1974, संल्लेखना : 6 फरवरी 2015

सल्लेखना के समय 90 वर्ष की उम्र में
आचार्यश्री सीमंधरसागरजी महाराज
मुनिश्री अर्जवसागरजी महाराज को आचार्य पद प्रदान करते हुए

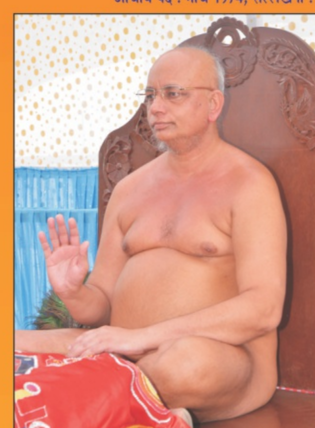

आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज
जन्म : 11.09.1967, मुनिदीक्षा : 31.03.1988
आचार्य पद : 25.01.2015

वीर निर्वाण संवत् - 2541
चैत्र शुक्ल पक्ष, वि.सं. 2071, मार्च 2015

वर्ष : आठ   अंक : इकतीस

मूल्य : 10/-

गुरुवर आर्जवसागरजी प्रवचन पूर्व
मंगलाचरण करते हुए ब्र. नितिन भैया।

हरदा नगरी में अर्हच्चक्र विधान
अभिषेक करते हुए इन्द्रगण

हरदा नगरी में अर्हच्चक्र विधान के समापन पर
शोभायात्रा में श्रीजी के साथ गुरुवर।

समवसरण में प्रवचन देते हुए
गुरुवर आर्जवसागरजी।

अर्हच्चक्र विधान में रात्रिकालीन
सांस्कृतिक कार्यक्रम इन्द्र सभा का दृश्य।

श्रीजी की शोभा यात्रा में
इन्द्रगण विमान ले जाते हुए।

आशीर्वाद व प्रेरणा

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
से दीक्षित
आचार्यश्री १०८ आर्जवसागर जी महाराज ।

रजिस्ट्रेशन क्रं. **MPHIN/2007/27127**

त्रैमासिक
भाव विज्ञान
(BHAV VIGYAN)

वर्ष-आठ
अंक - इकतीस

● *परामर्शदाता* ●
डॉ. प्रोफेसर एल.सी. जैन
जबलपुर, मोबा.: 9425386179
पंडित मूलचंद लुहाड़िया
किशनगढ़ (राजस्थान) मोबा.: 9352088800

● *सम्पादक* ●
श्रीपाल जैन 'दिवा'
शाकाहार सदन, एल.आई.जी.-75, केशर कुंज, हर्षवर्धन नगर, भोपाल-462003 (म.प्र.) फोन : 4221458

● *प्रबंध सम्पादक* ●
डॉ. सुधीर जैन, प्राध्यापक
85, डी.के. काटेज, ई-8 एक्सटेंशन, अरेरा कालोनी, भोपाल मो. 9425011357

● *सम्पादक मंडल* ●
डॉ. सी. देवकुमार, प्रमुख वैज्ञानिक, नई दिल्ली
पं. जय कुमार 'निशांत', टीकमगढ़ (म.प्र.)
डॉ. अजित कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
डॉ. संजय जैन, पथरिया, दमोह (म.प्र.)
डॉ. श्रीमती अल्पना जैन (मोदी), ग्वालियर (म.प्र.)
इंजी. महेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
श्री सुनील वेजीटेरियन, दमोह (म.प्र.)

● *कविता संकलन* ●
पं. लालचंद जैन 'राकेश', भोपाल

● *प्रकाशक* ●
श्रीमती सुषमा जैन धर्मपत्नी डॉ. अजित जैन

फोन : 0755-2673820, 9425601161

● *आजीवन सदस्यता शुल्क* ●

शिरोमणी संरक्षक	:	51,000
पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक	:	24,500
परम संरक्षक	:	21,000
पुण्यार्जक संरक्षक	:	18,000
सम्मानीय संरक्षक	:	11,000
संरक्षक	:	5,100
विशेष सदस्य	:	3100
आजीवन सदस्य	:	1100

कृपया सदस्यता शुल्क प्रकाशक के एवं रचनाएँ प्रबंध सम्पादक के पते पर भेजें।

पल्लव दर्शिका

विषय वस्तु एवं लेखक		पृष्ठ
1. एक महान आचार्य सीमंधरसागरजी	- सहसम्पादकीय	2
2. आचार्य बने आर्जवसागरजी	- ब्र. भूपेन्द्र भाई	8
3. भगवान महावीर का पावन जीवन	- आचार्यश्री आर्जवसागर	16
4. सत्पथ-दर्पण	- पं. अजित कुमार शास्त्री	19
5. गणितसार संग्रह	- अनुवादक : प्रो. एल.सी. जैन	21
6. पारसचंद से बने आर्जवसागर	- सहसम्पादकीय	24
7. गांधीजी के 94 वर्ष पूर्व में व्यक्त विचार	- संकलन : निर्मल पाटोदी	28
8. आँखों देखा सच	- भानुकुमार जैन (पत्रकार)	30
11. भारत में बदला इंसान (कविता)	- डॉ. अजित जैन	32
9. घोर तपस्वी साधक..... क्षमासागर	- वी एन आई न्यूज एजेंसी	33
14. मंगलकामना	- भ. महावीर आचरण संस्था समिति	34
10. इंदौर नगरी (कविता)	- आचार्यश्री आर्जवसागर	35
15. महावीर जयंती एवं 28वां दीक्षा दिवस समारोह सम्पन्न	- कैलाशचंद जैन	38
16. संयम सजग प्रहरी आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज	- श्रीमती मंजु गोधा	40
17. सद्‌गुणों की प्रतिमूर्ति हमारे गुरुदेव	- श्रीमती मंजु गोधा	40
12. गुरुवर की शरण में समर्पण (कविता)	- ब्र. किरीट भैया	41
18. गुरुवर 108 श्री आर्जवसागर जी का गुणानुवाद	- श्रवणकुमार जैन	42
19. समाचार		
20. प्रश्नोत्तरी		

लेखक एवं विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
भाव विज्ञान से संबंधित समस्त निर्णयों/न्यायों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल ही मान्य होगा।

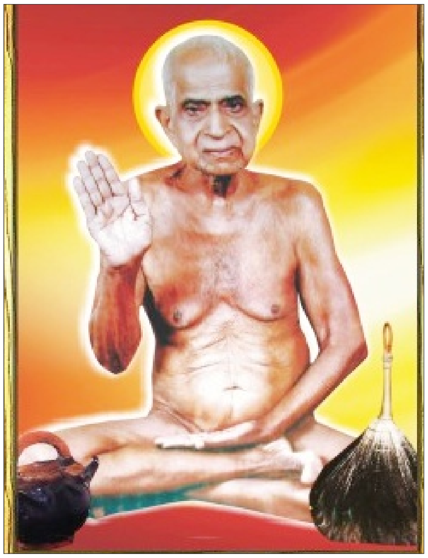

समाधि सम्राट-स्वर्गीय परम पूज्यनीय बाल ब्रह्मचारी श्री 108 सुपार्श्व सागरजी (आचार्य श्री 108 शान्ति सागर जी महाराज की परम्परा में) के शिष्य बाल ब्रह्मचारी, तपोनिष्ठ, चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री 108 सीमंधर सागरजी महाराज का जीवन-चरित्र एक सिंहावलोकन

एक महान आचार्य सीमंधरसागरजी

-सह.सम्पादकीय

आगम में कथित है कि पंचमकाल में निर्बाध रूप से मुनि परम्परा चलती रहेगी यथा काल मुनि होते रहेंगे और अन्तिम मुनि वीरांगज मुनि होंगे। लेकिन जो लोग कथन करते हैं कि पंचमकाल में मुनि दर्शन का अभाव है और कुछ लोग पंचमकाल की आड़ में शिथिलाचारी होकर आगमिक चर्या से दम तोड़ हिम्मत हारते हैं; उन्हें आचार्य सीमंधरसागरजी जैसे साधु एक चुनौती सिद्ध होते हैं। ऐसे धीर-वीर साधुओं की चर्या देखकर लगता है कि हम कहीं चौथेकाल में तो नहीं बैठे हैं; संयमी जीवन भर जिन्होंने नमक, शक्कर का आजीवन त्याग किया हो, वर्षों से एक अन्न के साथ आहार लिया हो और अनेक प्रदेशों में हजारों किलोमीटर पद विहार किया हो और उपवासों के साथ णमोकार मंत्र और तत्त्व चिंतन पूर्वक 90 (नब्बे) वर्ष की उम्र में समाधि प्राप्त की हो ऐसे महातपस्वी आचार्य सीमंधरसागरजी को कौन भुला सकता है।

चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शान्तिसागरजी की परम्परा के पुराने आचार्यश्री 108 सीमंधरसागरजी का परिचय चम्पाबाग मन्दिर, लश्कर, ग्वालियर की दिगम्बर जैन समाज ने दिनांक 23 मई 1995 में आराधना प्रिंटिंग प्रेस, दाना ओली, लश्कर वालों ने जिस तरह प्रकाशित करवाया था उसी तरह यहाँ शब्द सह प्रस्तुत कर रहे हैं। जिस परिचय को जानकर आप सभी का हृदय प्रफुल्लित हुये बिना नहीं रहेगा। समाधि सम्राट-स्वर्गीय परम पूज्यनीय बाल ब्रह्मचारीश्री 108 सुपार्श्वसागरजी (आचार्यश्री 108 चा.च. शान्तिसागरजी महाराज की परम्परा में) के शिष्य बाल ब्रह्मचारी, तपोनिष्ठ चारित्र-चक्रवर्ती आचार्यश्री 108 सीमंधरसागरजी महाराज का जीवन चरित्र एक सिंहावलोकन निम्नानुसार है:-

प्रिय धर्म स्नेहीजन,

यह हमारा परम सौभाग्य है कि अपने नगर में आचार्यश्री 108 सीमंधर सागरजी महाराज का 30 वर्ष के पश्चात् पुन: पदार्पण हुआ। आचार्यश्री चम्पाबाग मन्दिर, दानाओली, लश्कर में विराजमान हैं।

जो बुजुर्ग हैं वे; आचार्यश्री का लश्कर में सन् 1964 में वर्षायोग एवं उस अवधि में सम्बोधित अमृतमयी वाणी में धर्म-उपदेश को भूले नहीं होंगे। नई पीढ़ी के लिए उनका परिचय आवश्यक प्रतीत होने से, यहाँ अत्यन्त संक्षिप्त में, आचार्यश्री से यदा-कदा वार्ता के आधार पर उपलब्ध जानकारी के अनुसार दिया जा रहा है।

जन्म, गृहस्थ-अवस्था के माता-पिता-

आचार्यश्री का जन्म 26 मई 1926 में ग्राम हलगे, जिला बेलगांव कर्नाटक प्रान्त में हुआ था। आपके पिता का नाम श्री मलप्पा साह (भगवान मल्लिनाथ के नाम पर मलप्पा) एवं माताजी का नाम श्रीमती पद्मावती था। सम्पन्न एवं धार्मिक वातावरण में जन्मे श्री बालक ''जिनप्पा'' के चार भाई और दो बहिनें थीं और ये दूसरे पुत्र थे।

क्षुल्लक, एलक एवं मुनि-दीक्षा-

बालक ''जिनप्पा'' का बचपन में ही धर्म के प्रति रुझान था। युवावस्था प्राप्त होने पर विवाह का प्रस्ताव अस्वीकृत कर अखंड-आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत ले श्रावक धर्म का निर्दोष पालन करने लगे। संसार शरीर भोगों से विरक्तता रूप सप्तम प्रतिमा व्रत के लिये कार्तिक शुक्ल दोज सोमवार सन् 1953 में ग्राम 'देवरसिंगी हल्ली' कर्नाटक प्रांत में आचार्यश्री 108 वीरसागरजी महाराज से क्षुल्लक दीक्षा ली एवं मल्लिसागर नाम धारण किया। अब आपका अधिकतम समय धर्म ध्यान में लगने लगा। एक वर्ष तक गुरु के साथ देश भ्रमण किया एवं शिखरजी की वंदना की।

पाँच वर्ष पश्चात् सन् 1958 (आषाढ़ शुक्ल) आचार्यश्री 108 सुपार्श्व सागरजी महाराज से जालना (महाराष्ट्र प्रान्त) में एलक दीक्षा एवं उसी वर्ष मंगसिर शुक्ल पूर्णिमा की कुंथलगिरि सिद्ध क्षेत्र में सम्पूर्ण परिग्रह छोड़ मुनि दीक्षा ली एवं आपका नाम ''सीमन्धर सागर'' प्रसिद्ध हुआ। समाधि सम्राट स्व.प.पू. श्री 108 आचार्य सुपार्श्वसागर जी, आचार्यश्री 108 शान्तिसागर जी महाराज की परम्परा के थे।

आचार्य पदवी-

आपके पावन प्रवचनों एवं पंचाचार का आचरण करते कराते हुए देख श्री 108 आचार्य सुबाहुसागर जी, श्री 108 मुनि सिद्धसागर जी, आर्यिकामाता श्री सुमति माताजी, समाजसेवी विद्वान श्री बाबूलाल जी जमादार बड़ोद, श्री नारेजी प्रतिष्ठाचार्य बम्बई की सानिध्य एवं श्रावक-श्राविकाओं ने एकत्रित हो मार्च 1974 को त्रिलोकपुर, वाराबंकी जिला बिहार प्रान्त में शुभ मुहूर्त्त में ''आचार्य पदवी'' से विभूषित किया।

नगर-नगर, डगर-डगर भ्रमण एवं चातुर्मास-

मुनि अवस्था में प्रथम चातुर्मास कन्नड़ (महाराष्ट्र) में किया। तदन्तर अन्तरिक्ष पार्श्वनाथ, शिरड सापुर, अतिशय क्षेत्र नवागढ़ अनसिंग (महाराष्ट्र) चातुर्मास लौटकर शिरड सापुर चातुर्मास, संघ सहित श्री सम्मेद शिखरजी की यात्रा लौटकर यवतमाल, वर्धा, रामटेक अतिशय क्षेत्र, सुशिवनी, जबलपुर, कटनी, रीवा, मिर्जापुर, बनारस, ईसरी में चातुर्मास, वैजनाथजी, श्री मंदारगिरि, भागलपुर, नवादा, पावापुरी, गुणावा, पटना,

आरा, कटनी (चातुर्मास) दमोह, कुंडलपुर, अतिशय क्षेत्र-पपोराजी, अहारजी, टीकमगढ़, सोनागिर, लश्कर (ग्वालियर) (चातुर्मास), शौरीपुर, अलीगढ़, मेरठ (चातुर्मास)-गिरनारजी के लिये प्रस्थान, दिल्ली होते हुए-जयपुर, अजमेर, सिद्धक्षेत्र तारंगाजी, मेहसाना, राजकोट, जूनागढ़, गिरनारजी, अहमदाबाद (चातुर्मास) सिद्धक्षेत्र शत्रुन्जय से श्रवण वेलगोल (गोमटस्वामी के अभिषेक के समय) पावागढ़, मांगी तुंगी, गजपंथा, औरंगाबाद, कचनेर, कुंथलगिरि, मैसूर, हुबली, इन्डी (चातुर्मास), लातुर, हैदराबाद, (चातुर्मास), पूसद महाराष्ट्र (चातुर्मास), सम्मेद शिखरजी की संघ सहित यात्रा के लिये प्रस्थान-आरा, राजगिर, शिरडी, सम्मेद शिखरजी (चातुर्मास), रांची (चातुर्मास), टिकेत नगर (चातुर्मास), त्रिलोकपुर (आचार्य पदवी से विभूषित) टिकेत नगर (पंच कल्याणक प्रतिष्ठा), बहराइच (चातुर्मास), महमूदाबाद (चातुर्मास), इटावा (चातुर्मास), अलवर, मालपुरा नासरदा, उदयपुर, अतिशय क्षेत्र अडिन्दा पार्श्वनाथ, फुलेज, आष्टा, सूरत, खुड़ई, कन्नोज सभी में (चातुर्मास) देश की राजधानी दिल्ली में दो बार चातुर्मास किये।

धर्म प्रभावना एवं दीक्षा समारोह-

उपरोक्तानुसार-महाराष्ट्र, गुजरात, कर्नाटक, राजस्थान, बिहार, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, उड़ीसा प्रान्तों के नगरों एवं सिद्ध क्षेत्रों, अतिशय क्षेत्रों में विहार करते हुए जैन धर्म की प्रभावना/प्रचार का महान व्रत का निर्वाह कर रहे हैं। सिद्ध क्षेत्र गिरनार जी की यात्रा से लौटते समय सोनगढ़ में कानजी स्वामी से दो घण्टे चर्चा एवं उनका आचार्य श्री से प्रभावित होना उल्लेखनीय है।

आचार्यश्री ने पात्रता पर ध्यान देते हुए ब्रह्मचारी, क्षुल्लक, एलक, मुनि की दीक्षायें दी। कुछ प्रमुख निम्नानुसार हैं-

1. सन् 1964 फाल्गुन की अष्टान्हिका में सोनागिर सिद्धक्षेत्र पर क्षुल्लिका की दीक्षा दी एवं सुशीलमति माता जी का नाम दिया।
2. सन् 1965 में एटा उत्तरप्रदेश में ब्रह्मचारी नेनोराम को क्षुल्लक दीक्षा नाम-सुमतिसागर।
3. सन् 1966 गिरनार सिद्ध क्षेत्र पर ब्रह्मचारी रमेशचन्द (फिरोजाबाद) क्षुल्लक दीक्षा नाम नेमीसागर-वर्तमान में आचार्यश्री 108 निर्मल सागरजी महाराज।
4. ज्ञानाबाई की क्षुल्लिका दीक्षा नाम-राजमति।
5. जालना में मुनि दीक्षा नाम मल्लिसागर जी।
6. मद्रास में ब्रह्मचारी को क्षुल्लक दीक्षा नाम-सुपार्श्व सागरजी।
7. सन् 1971 में मधुवन (श्री सम्मेद शिखरजी) 13 पंथी कोठी में ब्रह्मचारी मोतीलाल जी (कोटा निवासी) को मुनि दीक्षा नाम-सिद्धसागर से सुशोभित।

   इसके अतिरिक्त और दीक्षा सम्बन्धित जानकारी समयाभाव के कारण एकत्रित नहीं की जा सकी इसका खेद है।

वर्तमान में विभिन्न कारणों/उद्देश्यों से दिगम्बर साधुओं के प्रति समाज में उदासीन भाव की प्रवत्ति देखने को मिल रही है। प्रसन्नता है कि इस कलिकाल में भी अपने मध्य ऐसे आचार्य / मुनि / त्यागी वृति विद्यमान हैं जिनके दर्शन मात्र से सभी भ्रान्तियाँ निर्मूल हो जाती हैं। आसातादि कार्यों की उदीरणा के अर्थ उग्रोग्रतप धारण

करते, शरीर की कुशलता की ओर ध्यान न देते हुए आत्म-दिव्य शक्ति सह होते हैं, ऐसे संतों को शतशत अभिनंदन/ नमन।

आचार्य सीमान्धर सागरजी महाराज को तपस्वी जीवन-यापन करते हुए 42 वर्षों से अधिक का समय हो रहा है। आगामी 26 मई 1995 को वे अपने इस जीवन के 70वें वर्ष में प्रवेश कर रहे हैं। हम लोगों की कामना है कि रागद्वेष के अधीन न होकर स्वात्मोत्थ परमानन्द की ओर सतत् प्रयत्नशील रहें एवं हम लोगों को धर्म का सदुपदेश देते रहें। उन्हें शत्-शत् नमन।

इस प्रकार आचार्य सीमंधरसागरजी के 23 मई 1995 में मई ग्रीष्मकालीन प्रवास पर ग्वालियर वालों ने यह परिचय प्रस्तुत किया था, तथा महावीर ट्रस्ट इन्दौर से सन् 2008 में प्रकाशित 'अखिल भारतीय दिगम्बर जैन मन्दिर निर्देशिका' पुस्तक के पेज क्र. 48 में दिये गये चा.च.आ. शान्तिसागरजी की परम्परा के चार्ट में दर्शाया है कि आ. शान्तिसागरजी के बाद क्रमशः आ. वीरसागरजी को, आ. वीरसागरजी से आ. शिवसागरजी को और आ. शिवसागरजी को आचार्य पद मिलने के बाद एक साथ इनकी परम्परा की चार धारायें उत्पन्न हुयीं। जिसमें एक धारा आ. धर्मसागरजी से आ. अजितसागरजी वाली, और एक धारा आ. ज्ञानसागरजी से आ. विद्यासागरजी वाली, और एक धारा मुनिश्री सम्मानसागरजी से मुनिश्री दयासागरजी वाली और एक धारा आ. सुपार्श्वसागरजी से आ. सीमंधरसागरजी वाली दर्शायी गई है। इस धारा के अनुसार आ. सीमंधरसागरजी आ. शान्तिसागरजी के चतुर्थ आचार्य सिद्ध होते हैं। ये आचार्य विद्यासागरजी के समकक्ष रहे। लेकिन अन्तर इतना ही है आचार्य विद्यासागरजी का आचार्यपद 1972 में हुआ और आ. सीमंधरसागरजी को आचार्य पद 1974 में हुआ। इसलिए आचार्य विद्यासागरजी गुरु भाई के नाते वयोवृद्ध आ. सीमंधरसागरजी की स्वास्थ आदि की जानकारी लेकर वात्सल्य प्रकट किया करते थे।

तदुपरान्त कुछ देखी, सुनी खबरों से ज्ञात हुआ कि आ.सीमंधरसागरजी ने मध्यप्रदेश के आष्टा, बानापुरा, बनेड़िया में भी वर्षायोग किये। इसी तरह 17 दिसम्बर 2000 से इन्दौर के उपनगर छावनी में 2001, 2002 का वर्षायोग, छत्रपति नगर में 2003 का, फिर छावनी में 2004 का, जँवरीबाग की नसिया में 2005 का, तिलक नगर में 2006, 2007, 2008 का, इसके बाद एम.एस.जे. फार्म हाऊस, आदि तथा अन्तिम वर्षायोग बड़नगर में सम्पन्न किया। आपने इस प्रकार करीब 15 वर्षों से अपनी सल्लेखना की साधना हेतु मध्यप्रदेश की भूमि को और यहाँ के श्रावक और व्रतियों की भावनाओं को अपने सुयोग्य उत्कृष्ट समझते हुए उपयुक्त माना था।

आर्जवसागर मुनिराज को दिया आचार्यपद

आपको यह भी खोज थी कि मेरी 12 वर्ष की सल्लेखना सम्पूर्ण होने वाली है और मुझे अपनी चा.च.आ. शान्तिसागरजी की परम्परा के कोई प्रभावक, चारित्रवान, साधक साधु यहीं पर उपलब्ध होंगे, जिन्हें कि मैं अपनी परम्परा का उत्तरदायित्त्व सौंप सकूँगा। जिससे कि हमारे उत्तरदायित्त्व को ग्रहण करने वाले चा.च.आ. शान्तिसागरजी की जयकार ध्वनि हमेशा गुंजायमान करते रहें। वैसा ही योग बना कि कुछ वर्षों से इंदौर के वे सुनील सेठिया तिलक नगर, भानुकुमार जैन एच.आई.जी. कॉलोनी और पीयूष जैन सोनकच्छ आदि लोग गुरुवर आर्जवसागरजी मुनिराज को आपका स्वास्थ आदि शुभ समाचार देते-लेते रहते थे। एक दिन इस भारत

में भद्रबाहु जैसा संघ लेकर विचरण करने वाले चतुर्थ कालीन चर्या के साधक सन्त शिरोमणी आ. विद्यासागरजी महाराज के प्रियतम शिष्य सत्ताईस वर्षों से दीक्षित, बहु भाषाविद् साहित्य सृजक, धर्मप्रभावक मुनिवर आर्जवसागरजी मुनिराज को आपने अपने उत्तरदायित्त्व के योग्य जानकर स्मरण किया और उन्हें अपने पास बुलाया। तब गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज की करुणा देखो कि मात्र करीब 10 दिन में सुबह, शाम विहार करते हुए अपने घुटने का दर्द, और पैरों के छालों को भी न देखते हुए मानो उड़ते पैर ही इतनी सुदूर करीब साढ़े तीन सौ किलोमीटर हरदा से सिद्धवरकूट होते हुए वैय्यावृत्ति और सेवा के निमित्त बड़े वात्सल्य पूर्वक इन्दौर के पास विराजमान आ. सीमंधरसागर जी के पास पहुँचे। आगम में कहते हैं कि अगर कोई मुनि संघ सम्मेद शिखरजी की यात्रा को भी जा रहे हों तो और उन्हें यह ज्ञात हो जाय कि कहीं पर मुनिराज की सल्लेखना चल रही है तो सम्मेद शिखर जैसी महत्त्वपूर्ण यात्रा को स्थगित कर सर्व प्रथम समाधि को देखें। क्योंकि अपने जीवन में भी इसे अवश्य धारण करना है। इससे महत्त्वपूर्ण और क्या कार्य हो सकता है? ऐसे उत्तम समय में क्षपक मुनिराज का दर्शन करना बहुत महत्त्वपूर्ण और दुर्लभ बात होती है।

आ. सीमंधरसागरजी ने अपनी समाधि का अन्तिम काल निकट जानकर माघ शुक्ल षष्ठी वीर.नि. संवत् 2541 ता. 25.1.2015 को देश, कुल, जाति से शुद्ध मुनिवर आर्जवसागरजी को चतुर्विध संघ के बीच अपना आचार्य पद सौंप दिया। यह समाचार भूपेन्द्र भैय्या, सुरेश भाई गांधी सूरत और अरविन्द जैन सागर आदि से जानकर अपूर्व आनन्द हुआ। हम पहले से ही जानते थे कि जिन्होंने सन् 1984 से बुन्देलखण्ड की भूमि से वैराग्य धारणकर आचार्य विद्यासागरजी संघ को स्वीकारा और उन्हीं गुरु के चरणों में ब्रह्मचर्य व्रत लेकर सप्तम प्रतिमा, और क्षुल्लक, एलक तथा मुनि पद को धारण कर इस भारत के तेरह प्रदेशों में अपूर्व प्रभावना की। तथाहि ऐसे गुरुवर आर्जवसागरजी द्वारा **'तीर्थोदय काव्य'** एक अनोखी कृति है जिस में तीर्थंकर बनाने वाली षोडसभावानाओं को सात सौ पद्यों में ज्ञानोदय छन्द और मुरज बंध के भी दोहों के साथ रचा गया है ऐसी कृति कई शताब्दियों से भी देखने को नहीं मिल सकती। इस काव्य कृति में सम्यग्दर्शन का सम्पूर्ण वर्णन और सम्पूर्ण श्रावकाचार और सम्पूर्ण मुनि आचार समाहित है। भव्य लोग मुक्तकण्ठ से इसे गाकर फूले नहीं समाते। वास्तव में गुरुवर की ऐसे ही **'जैनागम संस्कार'** कृति इक्कीस अध्यायों में आठ सौ प्रश्नोत्तरों में है। इसका तमिल, कन्नड़, मराठी आदि अनेक भाषाओं में अनुवाद पूर्वक प्रकाशन हो चुका है। जिसे उत्तर से दक्षिण तक के लोग स्वाध्याय में अध्ययन कर अपना मोक्षमार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। **'पर्यूषण पीयूष'** तो ऐसी कृति है जिसमें विस्तृत रूप में दश धर्मों पर व्याख्यान किया गया है। साधु, विद्वानों के लिए तो ये बहुत अमूल्य कृति है। इसी तरह वर्तमान परिपेक्ष में जैनदर्शन के अनुसार ध्यान कैसे करना इसके लिए **'सम्यक् ध्यान शतक'** दोहा काव्य में रची गयी है। इसी प्रकार चाहे **'परमार्थसाधना'** कृति हो या **'बचपन का संस्कार'** और **'जैन धर्म में कर्म व्यवस्था'** कृति ये सभी कृतियाँ पचासों शास्त्रों के संदर्भ पूर्वक सारे जैनागम के निचोड़ या सार रूप से रची गई हैं ऐसा समझना चाहिए। गुरुवर द्वारा अनेक भाषाओं में शताधिक कविताओं सह छन्दोबद्ध और छन्द मुक्त कविताओं वाली कृति **'आर्जव कविताएँ'** तो लोक प्रसिद्ध है। इन सबको देखा जाय तो ऐसा प्रतीत होते हैं इन कृतियों की रचना से गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज को पी.एच.डी. ही नहीं डी.लिट्. की उपाधि देने के समान है, लेकिन साधु चर्या के सामने ये उपाधियाँ सब नगण्य मानी जाती हैं।

ऐसा तीर्थोदय काव्य सुनाकर हजारों लोगों को सोलहकारण कराने वाले, विभिन्न राज्यों में धार्मिक पाठशालाओं की स्थापना कराने वाले, गोम्मटेश बाहुबली, पोन्नूरमलै, सम्मेदशिखरजी, गिरनार, हस्तिनापुर महावीरजी आदि क्षेत्रों हेतु करीब 15000 कि.मी. विहार करने वाले, अमूल्य कृतियों की रचना और अपनी ओजस्वी वाणी से हजारों सम्यक्‌दृष्टि बनाने वाले, एक वर्ष तक मौन धारण करने वाले, आडम्बर रहित, कम से कम वस्तु रखने वाले, वृत्ति परिसंख्यान रूप एक चौके में जाने के बाद लौटने पर अलाभ मानने वाले, रसादि में नमक, शक्कर, खोवा, पकवान, विभिन्न मेवा का त्याग करने वाले, हजारों किलोमीटर अनियत विहार करने वाले, विद्वत् संगोष्ठी, डाक्टर्स सम्मेलन, अहिंसा सम्मेलन, कवि सम्मेलन, धार्मिक पाठशाला सम्मेलन कराने वाले, दशलक्षण पर्व और ग्रीष्मकाल आदि में अनेक शिविर कराने वाले, हिन्दी, तमिल, कन्नड़, मराठी आदि में अनेक काव्य रचना करने वाले, सूर्य प्रकाश में विहार करने वाले, कुएँ के पानी से बने चौके में आहार लेने वाले, कोई धन, वाहन, लौकिक साधन नहीं रखने वाले और जिनके पास हमने उनसे ही दीक्षित सदलगा तक साथ आये मुनिश्री सुभद्रसागरजी को दक्षिण में देखा है। क्षुल्लक तथा ऐलक बने श्री अर्पणसागरजी को देखा है। क्षुल्लक बने श्री हर्षितसागरजी को भी देखा है। इन तीनों को दीक्षित कर अनेक प्रतिमाधारी बनाकर उन ब्रह्मचारी भैय्या, बहिनों को प्रतिमा आदिक के व्रत देकर मोक्षमार्ग बतलाने वाले और जिनके पास से ब्रह्मचर्य व प्रतिमा के व्रत लेकर आगे बढ़े और आचार्यश्री विद्यासागरजी से दीक्षित हुए हैं वे मुनि पायसागरजी व मुनि नमिसागरजी तथा आर्यिका उपशममति और आर्यिका संगतमति बनी। ऐसे धर्म प्रभावक और आत्म साधक; पद की आशा से विरहित, निस्पृह वृत्ति से चर्या करने वाले, गुरु की गरिमा बढ़ाने वाले, गुरुवर 108 आर्जवसागरजी महाराज इस पद के लायक तो पूर्व में ही ज्ञात होते थे। लेकिन किन्हीं लोगों के द्वारा धोखे से भी आचार्य पुकारे जाने पर डाँट लगा दिया करते थे; कि हमारे संघ में यह परम्परा नहीं है हमारे तो एक ही आचार्य हैं वे हैं आचार्य विद्यासागरजी ऐसा कह दिया करते थे। लेकिन परिस्थिति वश उन्हें किसी आचार्य की आत्मिक शान्ति हेतु उनकी सल्लेखना में उनको निर्भार करने हेतु यह पद स्वीकार करना पड़ा।

अब जब इतने ज्ञानवृद्ध, तपोवृद्ध, वयोवृद्ध आ.सीमंधरसागरजी ने जिनको सुयोग्य चुना तो हम उन्हें स्वीकार किये बिना कैसे रहेंगे? और जिनकी प्रभावना एवं ख्याति पूरे भारत में हो चुकी है उन नवीन बने आचार्य आर्जवसागरजी के चरणों में अनेकानेक शुभकामनाओं पूर्वक यही भावना भाते हैं कि आपका रत्नत्रय हमेशा कुशल बना रहे, और आपका संघ बढ़ता रहे, आपकी ख्याति दिग्दिगन्त तक फैलती रहे। वास्तव में सब कुछ गुरुओं के आशीर्वाद का ही फल है। इसलिए कहते हैं कि गुरु कृपा जगत में सबसे निराली है यही हमें खुशहाली है।

हमारे गुरु और हम सबको मिली सेवा ऐसे आ. सीमंधरसागरजी की साधु संघ द्वारा सेवा पाते हुए, चैत्य, सिद्धान्त के घोष के साथ इन्दौर के एम.एस.जे. फार्म हाऊस पर एक उपवन में चतुर्विध संघ के बीच ता. 6.2.15 को मध्यान्ह 12:40 पर तीन दिन के उपवास पूर्वक णमोकार मंत्र और तत्त्वचिंतन के साथ सल्लेखना पूर्ण हुयी। उन्होंने अपनी रत्नत्रय की साधना के फलस्वरूप स्वर्ग को पाकर और विदेहक्षेत्र जाकर सीमंधर, युगमंधर आदि तीर्थंकरों का दर्शन किया होगा, और हम भी यही भावना भाते हैं कि हम सबकी नमोस्तु भी उन तीर्थंकरों तक पहुँच जाय, हमारा भी जीवन धन्य हो जाय।

डॉ. अजित जैन एवं डॉ. संजय जैन, एडवोकेट

आचार्य बने आर्जवसागरजी

ब्र. भूपेन्द्र भाई, सूरत

ऐसे मिला था आचार्य पद-

हरदा नगरी में गुरुवर आचार्य श्री विद्यासागरजी का दर्शन तो संघ सहित आर्जवसागरजी को हुआ ही था और उनके मंगल आशीर्वाद से एक-दो महिने के भीतर ही अनेक सुअवसर भी प्राप्त हुये। जैसे कि हरदा नगरी में रचाये बड़े पैमाने पर सम्पन्न हुये श्री अर्हच्चक्र विधान के उपरान्त देवास के पास सोनकच्छ नगर से गुरुवर आर्जवसागरजी के चरणों में अपने नगर में पधारने का निवेदन लेकर दिगम्बर जैन मन्दिर के कमेटी के लोग पधारे और निवेदन करते हुए कहा कि इस वर्ष के वर्षायोग का लाभ सोनकच्छ नगर को मिले। हम सभी लोग सन् 2004 से प्रतीक्षारत हैं। इन्हीं के साथ आये पीयूष जैन छाबड़ा ने चारित्र चक्रवर्ती आचार्य शांतिसागरजी परम्परा के करीब बानवें वर्ष के वयोवृद्ध आचार्य श्री सीमंधरसागरजी के स्वास्थ के अनुकूल न रहने का समाचार दिया और साथ में यह भी कहा है कि हे गुरुदेव! आपको हमने पूर्व में भी विदित कराया था कि उन्हें अपनी सल्लेखना की साधना में अपनी ही परम्परा के किन्हीं साधु संघ की आवश्यकता है। क्योंकि दोनों महाराज का संपर्क कुछ वर्षों से नमोस्तु और साहित्य प्रदान के रूप में चल ही रहा था। आचार्यश्री सीमंधरसागरजी कहते हैं कि आर्जवसागर से पूछना कि वे चाहते क्या हैं? ऐसा सुनकर उनके घुटने में लगी चोट की जानकारी मिलते ही गुरुवर आर्जवसागरजी ने पीयूष छाबड़ा के हाथों में कुछ नवीन साहित्य और नमोस्तु प्रेषित कर सिद्धक्षेत्र सिद्धवरकूट की ओर विहार करने का विचार बनाया। फिर गमन करते हुए खिड़किया, वीड़, सनावद आदि से विहार करते हुए लोगों के द्वारा ठहरने का अति आग्रह होते हुए भी आगे बढ़ते चले गये। क्योंकि सनावद के पास बीच में एक शुभ समाचार श्री भानुकुमार जैन इन्दौर द्वारा प्राप्त हुआ कि आचार्यश्री सीमंधरसागरजी महाराज पुन: पुन: यही बात कह रहे हैं कि आर्जवसागर महाराज दूर से नमोस्तु तो भेजते हैं लेकिन आते तो हैं नहीं। ऐसे आचार्य वयोवृद्ध श्री सीमंधरसागर जी महाराज के समाचार में विशेष भावना व्यक्त की गयी थी। जिसे साक्षात् शीघ्र जानने की उत्कण्ठा मुनिवर आर्जवसागरजी के मन में आयी। मिलने और सेवा के कार्य के साथ-साथ ज्ञात होता है कि उनकी इस विशेष भावना में उनकी ही अन्तिम अवस्था में कुछ विशेष जिम्मेदारी सौंपने के साथ अपने जीवन की अन्तिम अवस्था का अवसर जान पड़ता है। बस; इस समाचार मिलने के तुरन्त बाद ही गुरुवर ने अपने विहार की गति को बढ़ा दिया और सि. सिद्धवरकूट में एक ही दिन में दर्शन करके बड़वाह नगर में मंगल प्रवेश किया। वहाँ पर दोनों मन्दिरों के अध्यक्षों के द्वारा रुकने का निवेदन किये जाने पर भी इन्दौर की ओर गमन करते चले गये। कुछ ही दिनों में इन्दौर-देवास रोड में विहार के समय दर्शनार्थ एवं चौके आदि की व्यवस्था देखने श्री जिनेश झांझरी, और सपत्नीक सनतकुमार झांझरी आदि लोग भी आये थे। इसी समय गुरुवर आर्जवसागरजी ने श्री जिनेश झांझरी आदि को संकेत दिया था कि आचार्य सीमंधरसागरजी के पास पहुँचने पर आप लोग अपने-अपने ग्रुप के साथ समूह रूप से जरूर आयें, क्योंकि आ.सीमंधरसागरजी ने किसी विशेष कार्य के लिए हमें याद किया है। फिर गुरुवर आर्जवसागरजी इन्दौर-देवास

बायपास से होते हुए एम.एस.जे. फार्म हाऊस पहुँचे। विहार में साथ थे श्रीमति गुणवन्ती जैन, श्री सुरेश भाई गांधी धर्मपत्नी श्रीमति नीला जैन गांधी-सूरत, श्री अरविन्द जैन-सागर, श्री अशोक जैन-भोपाल, सी.कुमार-तामिलनाडु और संघ के साथ सात प्रतिमाधारी ब्र.भूपेन्द्र जैन और आठ प्रतिमाधारी व्रती ब्र. पद्ममालिनी जैन, सात प्रतिमाधारी ब्र. राजकुमारी जैन, सात प्रतिमाधारी ब्र. माया देवी जैन। इसके पूर्व हरदा से लेकर सनावद तक हरदा के कमेटी के लोगों का चौका साथ रहा। फिर भोपाल से आये चौके के साथ स्थानीय लोगों ने भी चौके लगाकर गुरुसेवा का लाभ उठाया था। पहुँचने के करीब चार दिन पूर्व गुरुवर आर्जवसागरजी ने फार्म हाऊस पर भानुकुमार जैन को भेजकर अपने पहुँचने की जानकारी देकर यह मालूम करवाया था कि वहाँ फार्म हाउस पर कुछ दिन ठहरने हेतु व्यवस्था बन जायेगी तभी वहाँ पर पहुँचे।

ता. 24.1.15 को पहुँचते ही मन्दिर से थोड़ी दूर पहले वहाँ पर पूर्व से ही ठहरे आ. प्रसन्न ऋषि की आर्यिका, क्षुल्लक, क्षुल्लिका आगवानी के लिए आये। तदुपरान्त जब गुरुवर आर्जवसागरजी निर्माणधीन जिनालय में पहुँचे तब आगवानी के लिए आ. प्रसन्न ऋषि आये थे। ये आ. प्रसन्न ऋषि गुरुवर आर्जवसागरजी से बाद में दीक्षित थे और चा.च.आचार्य शान्तिसागरजी के परम्परा के नहीं थे, ये आ. कुशाग्रनन्दी की परम्परा के थे। जिनालय का दर्शन होते ही और आ. सीमन्धरसागरजी की आहार चर्या पूर्ण होते ही गुरुवर आर्जवसागरजी आ. सीमंधरसागरजी के दर्शन हेतु उनकी वसतिका में पहुँचे। भक्ति पूर्वक गुरु वन्दना की और वन्दना प्रतिवन्दना के उपरान्त रत्नत्रय एवं स्वास्थ की क्षेम-कुशलता पूछी। आ.सीमंधरसागरजी ने भी मुनिवर के विहार एवं स्वास्थ की कुशलता पूछी, तथा आ. विद्यासागरजी का भी क्षेम, कुशल पूछा। इसके बाद आ. प्रसन्न ऋषि के साथ विहार आदि की चर्चायें हुयीं। तदुपरान्त आहार चर्या सम्पन्न हुई।

आहार चर्या सम्पन्न होने के बाद मुनिवर आर्जवसागरजी आ. सीमंधरसागरजी के पास पहुँचे और प्रत्याख्यान लेकर उनका तैलादि लगाकर औषधोपचार किया और कहा कि ऐसी सल्लेखना के समय सेवा बड़ी दुर्लभता से प्राप्त होती है। हम भी यही भावना भाते हैं कि जीवन के अन्त में हमें भी आप जैसी विधिवत् सल्लेखना प्राप्त हो। सुना है कि आप बारह वर्ष की सल्लेखना की साधना कर रहे हैं। इसी तरह से आपने वर्षों से नमक, शक्कर आजीवन त्याग कर रखा है, एक ही धान्य ले रहे हैं वह भी घृत के बिना; दो, तीन ग्रास ही आहार चलता है। फिर आप पेय ही ग्रहण करते हैं। आपने अपनी कषाय और काया को बहुत ही कृश कर लिया है। फिर भी आप बेसहारे आहार लेते हैं और इतनी बड़ी 90 वर्ष की उम्र में छप्पन वर्ष से मुनिपद पालन कर रहे हैं, आप बिना चश्मा के पढ़ रहे हैं, दाँत भी काम कर रहे हैं। आप बहुत पुण्यशाली हैं। बहुत दिनों की भावना के बाद आपका दर्शन हुआ। जो भावना (अपनी उत्तरदायित्व रूप आचार्य पद प्रदान करने की) आपने परोक्ष रूप में प्रेषित कर व्यक्त की थी आपकी उसी भावना के अनुरूप मैं आपके समक्ष आ चुका हूँ। लेकिन मैं बहुत छोटा हूँ, शरमिन्दा हूँ क्योंकि मेरे को मात्र मुनि दीक्षा लिये 27 वर्ष ही हुये हैं। तब आ. सीमंधरसागरजी बोले 27 वर्ष हुये तो क्या हुआ मोक्षमार्ग का अनुभव जरूरी है कुछ लोगों को बहुत थोड़े ही वर्ष में हो जाता है। तुमने तो इतने वर्षों से अनेक प्रान्तों में भ्रमण किया, और दक्षिणी भाषायें भी सीखीं, और साहित्य का सृजन भी किया। मैंने भी पढ़ा तुम्हारा साहित्य देखो ये सामने ही तीर्थोदय काव्य है। अत: अपनी चा.च.आ. शांतिसागरजी की परम्परा को

सुरक्षित रखते हुए आगे बढ़ना है। हमारे इस पद के भार को स्वीकार करो। इस चर्चा के समय सामने उपस्थित थे भानुकुमार जैन-इन्दौर, सुरेश भाई गांधी-सूरत जो कैमरे द्वारा फोटो भी ले रहे थे और श्री अरविन्द जैन आदि। फिर मुनिवर आर्जवसागरजी ने आ. सीमंधरसागरजी से कहा कि हम लोग पहले से ही सोचकर एक नवीन पिच्छिका उपकरण दान हेतु लाये हैं। आपको मध्यान्ह में प्रदान करेंगे। तब आ.सीमंधरसागरजी ने कहा कि मध्यान्ह में नहीं; कल सुबह पिच्छिका का कार्यक्रम रखना, कल के दिन प्रातः फिर आपको जल्दी 8.00 बजे ही आहार चर्या को उठा देंगे और करीब 9 बजे यह कार्यक्रम रखेंगे। तो आ. सीमंधरसागरजी ने कहा ठीक है। पुनः आचार्यश्री ने कहा कि कल जो हम संस्कार देंगे(आचार्य पद के) तब उसकी जिम्मेवारी के लिए कोई लोग भी तो चाहिए तब उस समय भानुकुमार इन्दौर आदि ने बोला हम इसके जिम्मेवार हैं। आप निश्चिन्तता से कार्यक्रम सम्पन्न करें जो भी आवश्यकतायें होंगी उसकी हम पूर्ति करेंगे। और आ.सीमंधरसागरजी ने अपना उत्तरदायित्व सौंपते हुए मुनिश्री के सर पर हाथ रखा और आचार्य चा.च. शांतिसागर परम्परा की रक्षा करते रहना। मुनि गुरुकुल का निर्माण करना ऐसा कहते हुए मुनिवर आर्जवसागरजी के सर पर पिच्छिका रखकर विशेष आशीर्वाद प्रदान किया। इसके उपरान्त आ.सीमंधरसागरजी की इच्छा अनुसार उन्हें मुनिवर आर्जवसागरजी आदि धूप के स्थान में ले गये और बिठाकर उनकी तैलादि से वैयावृत्ति की। फिर उनको जपमाला देकर और पुस्तक सामने रखकर और मुनिवर आर्जवसागरजी ने यह कहकर कि अब मैं सामायिक के लिए जा रहा हूँ। और अलग स्थान में सामायिक के लिए बैठ गये। फिर मध्यान्ह काल में पुनः मुनिवर आर्जवसागरजी आ. सीमंधरसागरजी के पास पहुँचे और अपनी विशेष विशुद्धि हेतु उनसे चौंसठ ऋद्धि के उपवासों के व्रत हेतु आशीर्वाद ग्रहण किया। और दूसरे दिन केशलोंच हेतु निवेदन किया। तब आ.सीमंधरसागरजी बोले अभी तो बाल बड़े दिखते नहीं हैं। फिर मुनिवर आर्जवसागरजी ने कहा कि केशलोंच का समय आ गया है, तो कहा ठीक है। फिर प्रतिक्रमण के उपरान्त चतुर्विध संघ के साथ गुरु भक्ति सम्पन्न हुई तदुपरान्त आ. श्रीसीमंधरसागरजी ने समयसार शास्त्र को पढ़ते हुए कुछ-छोटा-सा आत्मा के सम्बन्ध में उपदेशित किया। सभी को उनकी अमृतवाणी सुनकर बड़ा आनन्द हुआ। और मुनिवर आर्जवसागरजी ने कहा कि बिना चश्मा के आप इतना अच्छा पढ़ते हैं और कुछ संस्मरण सुनाने का निवेदन किया। तब आ. सीमंधरसागरजी ने सि.क्षे. गिरनार के सम्बन्ध चर्चा करते हुए पूछा कि गिरनार का क्या हो रहा है? तब मुनिवर आर्जवसागरजी ने अपनी यात्रा में देखी गिरनार की दयनीय अवस्था का वर्णन किया। तब आ.सीमंधरसागरजी ने कहा कि पंचम काल में मिथ्यात्व बढ़ रहा है। जैन-धर्म मिथ्यात्व का खण्डन करता है।

इसलिए मिथ्यावादी लोग इसको नष्ट करने में लगे हैं। फिर इसी के साथ आचार्यश्री सीमंधरसागरजी ने शाश्वत सि.क्षे. सम्मेदशिखरजी की जानकारी ली। तब मुनिवर आर्जवसागरजी अपनी सम्मेदशिखरजी की यात्रा के संदर्भ में वहाँ की सुरक्षा आदि रूप आवश्यकताओं के बारे में सुनाया। तब आ. सीमंधरसागरजी ने दो बार दोहराते हुए एक ही बात कही कि सम्मेदशिखरजी को तो कोलकता वाले अच्छे से सम्हाल सकते हैं क्योंकि वहाँ पर जैन समाज बहुत संख्या में है। इस प्रकार कुछ धार्मिक चर्चायें हुई। तदुपरान्त गुरुवर आर्जवसागरजी ने जो हृदय से और विनय से उनकी वैयावृत्ति की वह सेवा मानो दो या अनेक वर्षों की सेवा के समान प्रशंसनीय थी। पश्चात् सब लोग सामायिक यथास्थान करने लगे।

दि. 25.1.15 को नित्य आवश्यक कार्यों के उपरान्त आचार्य भक्ति कर आचार्यश्री सीमंधरसागरजी के विशेष आशीर्वाद पूर्वक मुनिवर श्री आर्जवसागरजी ने अपने केशलोंच की क्रिया प्रारम्भ की। व्रतियों एवं सभी लोगों ने स्तोत्र, भक्ति पाठ वगैरह किया। इसी बीच आ. सीमंधरसागरजी की संक्षिप्त आहार चर्या हुई। और भी मुनि, आर्यिका, क्षुल्लक, क्षुल्लिका आहार चर्या को जाते-आते रहे और मुनिवर का कार्यक्रम चलता रहा। आ. सीमंधरसागरजी ने मुनिवर श्री आर्जवसागरजी के सर पर भक्ति, पाठ एवं मंत्र पूर्वक आचार्य पद की क्रिया प्रारम्भ की। व्रतीगण द्वारा गणधर वलय के अर्घ समर्पित किये गये। पाद प्रक्षालन हुआ। केसर का संस्कार हुआ और आ. सीमंधरसागरजी ने अपने उत्कृष्ट भाव प्रकट करते हुए कहा कि **''चारित्र चक्रवर्ती आ. शान्तिसागरजी महाराज से आती हुयी एक धारा रूप परम्परा आ. सुपार्श्वसागरजी से मुझे प्राप्त हुई है। उसी तरह की एक धारा रूप परम्परा चा.च.आ. शान्तिसागरजी आ. वीरसागरजी, आ. शिवसागरजी, आ. ज्ञानसागरजी और आ. विद्यासागरजी को प्राप्त को प्राप्त हुई। अब मेरी वृद्धावस्था में इस नश्वर काया की उम्र अधिक होने के कारण शरीर को शिथिल देखते हुए समाधि-सल्लेखना के निमित्त मैं परम्परा को स्थिर निर्बाध रखने हेतु मुनियों के गुरुकुल बढ़ाने की भावना रखते हुए माघ शुक्ल षष्ठी तिथि वी.नि.सं. 2541 ईश्वी सन् 25.1.2015 के शुभ दिन अपने आचार्य पद को चा.च.आ.शान्तिसागरजी परम्परा के आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के बहुभाषा विद्, चिर दीक्षित, साहित्य सृजक, धर्मप्रभावक शिष्य मुनिश्री आर्जवसागर महाराज को आचार्य पद प्रदान करता हूँ। आप सभी इस धर्मप्रभावना में अनुमोदन कर पुण्य भाजक बनें।''** तदुपरान्त नवीन आचार्य आर्जवसागरजी ने कहा कि आपकी सल्लेखना की साधना में जो त्याग की भावना है वह बड़ी पूज्यनीय है। आपसे यह भावना भाते हैं कि आप मेरे लायक सेवा अवश्य बतलाते रहें तथा हम आपकी जो चा.च.आ. शान्तिसागरजी महाराज से चली आ रही परम्परा की धारा को अनवरत बहाते रहेंगे। उसे नष्ट नहीं होने देंगे और आ. सीमंधरसागरजी ने मुनिवर आर्जवसागरजी पर पिच्छिका रखते हुए आचार्य पद से अलंकृत किया। फिर नवीन पिच्छिका प्रदान कार्यक्रम हुआ। इस कार्यक्रम में वहाँ सभी श्रावक-श्राविकायें, व्रती, ब्रह्मचारी, आर्यिका, क्षुल्लक और क्षुल्लिकायें उपस्थित रहे। लोग कैमरे से फोटो ले रहे थे। कोई विडियो रिकार्डिंग कर रहे थे। आ. प्रसन्न ऋषि भी उपस्थित हुये। और युगपत् चतुर्विध संघ के बीच आचार्य पद की क्रिया की सम्पूर्णता और कुछ मार्ग दर्शन रूप धार्मिक चर्चायें बड़ी प्रसन्नता के साथ सम्पन्न हुईं।

ऐसे सार्वजनिक हुये कार्यक्रम में श्री जिनेश झांझरी, सनत झांझरी आदि के ग्रुप समूह को भी उपस्थित रहने के लिए विदित कराया गया था। कुछ लोग उपस्थित हुये और कुछ लोग वर्षात और ठण्डी लहर के कारण अनुपस्थित भी रहे होंगे लेकिन इस कार्यक्रम के दृश्य को ब्र. भूपेन्द्र भैया के सामने रहते हुए श्री भानुकुमार जैन इन्दौर, श्री अरविन्द जैन सागर और अशोक जैन आदि लोगों ने अपने कैमरे में भरने का सफल प्रयास किया था। जो दृश्य भारत के या देश-विदेश के कोने-कोने तक पहुँचाने का पुरुषार्थ भी किया गया। आगम विधि विधान पूर्वक आचार्य पद के संस्कार होने के उपरान्त सब लोग अपनी मध्यान्ह की सामायिक में लीन हो गये और दूसरी तरफ श्रावक लोग अपने भोजनादि क्रिया में व्यस्त हुए।

फिर मध्यान्ह में सामायिक के उपरान्त व्रती गण और श्रावक गण आपस में नवीन बने आचार्यश्री आर्जवसागरजी के समक्ष नये उपकरण परिवर्तन आदि की कुछ क्रियायें करने में हर्ष मना रहे थे और जिनको भी यह कार्यक्रम का ज्ञात हुआ वे श्रावक गण इन्दौर, देवास, सोनकच्छ, हरदा आदि से आकर चतुर्विध संघ का दर्शन कर आ. आर्जवसागरजी से रत्नत्रय की कुशलता आदि पूछकर मंगल आशीर्वाद ले रहे थे और कह रहे थे कि हमको कुछ दिन पूर्व इस कार्यक्रम का शुभ समाचार ज्ञात हो जाता तो हम सबको साथ लाकर बड़ी संख्या में उपस्थित होते। तब आ. आर्जवसागरजी ने कहा कि जैसी व्यवस्था वैसी अवस्था को ध्यान रखना चाहिए। यहाँ पर स्थान की कमी थी, मौसम अनुकूल नहीं था और सल्लेखना लेने वाले क्षपक का भी ध्यान रखना पड़ता है। अधिक भीड़-भाड़ से उनको अशांति हो सकती है और पंचमकाल में मात्सर्य भाव की अधिकता है। एक समूह को बुलायें तो दूसरा समूह नाराज होता है और बुलाने के लिए हमारे पास क्या है? यह मुनिसंघ का काम नहीं ये तो श्रावकों का काम है। उनकी जैसी व्यवस्था और भावना होती है वैसे ही भावना अनुरूप कार्यक्रम होता है। साधु लोग तो किसी से राग-द्वेष किये बिना ही अधिक से अधिक धर्म प्रभावना करने की भावना रखते हैं। इस प्रकार सुबह से रात होने तक आ. आर्जवसागरजी के दर्शनार्थ इंदौर शहर के महावीर नगर (पास गोयल नगर) से खुशालचन्द जैन, तत् पुत्र अजय जैन धर्म पत्नी अर्चना जैन आदि और विजय नगर से मनीष जैन आदि और हरदा से नीलेश जैन परिवार आदि सोनकच्छ से पीयूष जैन आदि तथा देवास आदि से और उदय नगर इन्दौर से भरत जैन, अमित जैन, आशीष जैन, तोतला नगर से सुनील जैन आदि भक्तों का आवागमन बना रहा, और सभी लोग नवीन बने आचार्यश्री आर्जवसागरजी को अर्घ समर्पित कर या जय-जयकार की ध्वनि के साथ अपनी शुभ कामनाएँ देते रहे।

दूसरे दिन प्रात:काल जब गमन के समय स्थानीय लोगों को ज्ञात हुआ तो वे कहने लगे कि यहाँ ही रुकिये यहीं पर आहार चर्या सम्पन्न हो फिर विहार करना; तब आ. आर्जवसागरजी ने कहा कि यहाँ पर कुये के पानी की समस्या है बहुत दूर से श्रावकों को पानी लाना पड़ रहा है। आगे और भी कोई संघ आने वाला है। ऐसा कहा और फिर क्षपक आ. सीमंधरसागरजी के साथ सभी लोगों ने गुरु भक्ति की और स्वास्थ आदि की अनुकूलता पूछी। तब आ.सीमंधरसागरजी ने विहार आदि के बारे में पूछा और कहा कि कहाँ जायेंगे तो कहा कि बस पास में ही देवास रोड पर और उन्होंने कहा अपने साथ कौन-कौन है? तो बताया कि ये सब लोग साथ हैं कोई चिंता की बात नहीं। फिर पूछा कि अपना आगे वर्षायोग कहाँ होगा? तो बोला कि अभी निश्चित नहीं किया है। तो क्षपक मुनिराज आ. सीमंधरसागरजी ने कहा कि हाँ, जहाँ पुण्य होगा वहीं तो होगा। फिर अन्त में आचार्य श्री 108 आर्जवसागरजी ने कहा कि आप संदेशा देते रहना हम भी आपका संदेश लेते रहेंगे और आपकी सेवा में तत्पर रहेंगे। और सल्लेखना धारक क्षपक श्री आ. सीमंधरसागरजी की काया को स्पर्श करते हुए सभी को और आ. प्रसन्न ऋषि को क्षपक की सेवा का संकेत करते हुए नजदीक ही विहार कर लिया। दिशा थी देवास और हाटपीपल्या। नजदीक ही विहार हो नहीं पाया और भक्तों का आने-जाने का तांता शुरु हो गया। थोड़े दूर एक गाँव के निकट बंगले पर लगे चौके में आहार चर्या सम्पन्न हुई।

इसी दिन ता. 26.1.15 को भी बड़ी भावना पूर्वक भक्तों का आना-जाना आ. आर्जवसागरजी के

दर्शनार्थ चलता रहा। सब लोग रत्नत्रय की कुशलता आदि पूछते रहे और कोई सेवा करने लगे और बहुत संख्या में आहार के लिए सोले के वस्त्र पहने विधिवत् आहार भी करवाया। जिन लोगों में इन्दौर उदय नगर से पी.सी. जैन सपत्नीक, सुनील जैन सपरिवार, नीरज जैन, आशीष जैन, नीलेश मोदी, प्रजेश जैन सपत्नीक आदि समवसरण मन्दिर के पास से सुनील जैन के परिवार के लोग देवास से भी कई लोग, हरदा से नीलेश अजमेरा के परिवार के लोग, एच.आई.जी. कॉलोनी, इन्दौर से भानुकुमार जैन, दिल्ली से लोकेश जैन व मित्र गण तथा भोपाल, सागर आदि से भी लोग आये थे। सभी लोग यह जानकर कि मुनिवर आर्जवसागरजी आचार्य बन गये हैं बड़ी खुशी व्यक्त कर रहे थे और आहार देकर और आहार देखकर आ. आर्जवसागरजी की जय-जयकार लगा रहे थे। देवास के पास भी संगम नगर इन्दौर से इस आचार्य पद का समाचार सुनकर अपनी शुभ कामनायें देने श्री पारस जैन भी सपत्नीक आये थे। तदुपरान्त हाटपीपल्या के समाज के बहुत संख्या में लोग तथा गोयल नगर इन्दौर से परमेष्ठी दास सोगानी (रतनलाल जी बैनाड़ा, आगरा के बहनोई सपत्नीक के साथ) आये और आचार्य पद की शुभ कामनाएँ देते हुए बड़ी खुशी व्यक्त की।

इसके बाद आगे मार्ग में आ. आर्जवसागरजी से किन्हीं ने पूछा कि- हे गुरुदेव! आ. श्री सीमंधरसागरजी द्वारा आपको आचार्य पद दिये जाने पर आपने किन प्रशस्त भावों के साथ स्वीकार कर लिया?

तो कहा कि हमने उनकी आत्म शान्ति के लिए अपना कर्त्तव्य मानकर स्वीकार कर लिया। चूंकि हमारा सम्बन्ध उनसे नमोस्तु पूर्वक साहित्य प्रदान आदि के रूप में पूर्व से ही चल रहा था। हम उनके स्वास्थ आदि का ध्यान रखते हुए समाचार लेते रहते थे और उन्होंने अपने जीवन का अन्तिम समय निकट जानकर हमें याद कर संदेश भेजा। हम उनके पास शीघ्र ही पहुँचे, क्योंकि उनकी चर्चा से मालूम पड़ा कि पूर्व से ही उन्हें अपने ही चा.च.आ. शान्तिसागरजी की परम्परा के रूढ़ी, आडम्बर, मिथ्यात्व से दूर साधु की आवश्यकता थी। वे ऐसा ही विकल्प मन में धारण किये हुए थे और मुझे पाकर वे बड़ी शान्ति को प्राप्त हुये और थोड़े समय की सेवा ही उन्होंने मुझे मेवा के समान आचार्य पद को स्वस्थ और प्रसन्नचित्त के साथ प्रदान कर दिया अन्यथा उनके समाधि के काल को कौन जानता था? यह सब उनके अनुकूल ही तो हुआ, क्योंकि अन्य परम्परा वाले चा.च.आ. शान्तिसागरजी की जयकार आदिक से परम्परा निभाने में सक्षम कैसे हो सकते थे? जिसकी परम्परा की जो वस्तु है उसकी परम्परा के व्यक्ति द्वारा अपने पूर्वजों का ऋण चुकाते हुए उसके आगे उसी रूप में निभाने हेतु जो सक्षम होता है उसे ही वह वस्तु मिलना श्रेयस्कर है और उसी में खुशहाली है।

आचार्य श्री 108 आर्जवसागरजी द्वारा आचार्य पद सम्बन्धी अधिक प्रचार-प्रसार पर रोक लगाने का संकेत किये जाने पर भी लोगों ने भक्ति वश पूरी बात नहीं मानी और आचार्य पद से अलंकृत करने का संदेश एस.एम.एस., वाट्सअप् आदि द्वारा पूरे देश में फैला दिया। यहाँ तक कि भारत के अनेक और इन्दौर में भी अनेक समाचार पत्र जैसे कि दबंग दुनिया, राज एक्सप्रेस, लोक स्वामी, इन्दौर समाचार, स्वदेश, सांध्य दैनिक, नव-भारत, दस्तक, सिटी ब्लास्ट, शनिवार दर्पण, दिव्य महानगर, दिगम्बर जैन ज्योति-जयपुर, और जैन मित्र-सूरत, आदि में आचार्य श्री आर्जवसागरजी का पदारोहण का समाचार प्रकाशित करवा दिया और लखनऊ, दिल्ली, कोलकत्ता, महाराष्ट्र, कर्नाटक और तमिलनाडु आदि जगह भी समाचार पत्रों में प्रकाशन हेतु प्रेषित कर

दिया। साथ ही नजदीक समय में ही पारस-चैनल पर पट्टी द्वारा करीब दस दिनों तक आ. आर्जवसागरजी के आचार्य पदारोहण का प्रसार चलता रहा।

क्षपक आचार्य श्री सीमंधरसागरजी महा मुनिराज आहार में अन्न की वस्तु छोड़कर मात्र पेय वस्तु ग्रहण करने लगे। तदुपरान्त उनका शरीर इतना कृश और शक्तिहीन हो गया कि स्वत: खड़े होकर आहार ग्रहण करने की शक्ति नहीं रही। तब उन्होंने अन्त में तीन दिन के उपवास के साथ अपनी सल्लेखना की अन्तिम आराधना अनवरत जागृति पूर्वक सुचारू रखी। आचार्य आर्जवसागरजी ने यह तो साक्षात् ही देखा था कि उन्हें वे क्षपक श्री आ. सीमंधरसागरजी लेटे नहीं दिखे। हमेशा तत्त्व चिंतन, धर्म वार्ता, और जाप आदि में बैठकर तल्लीन रहते थे। उनके सल्लेखना के पूर्व अन्तिम समय में मुनि तन्मयसागरजी भी पधारे थे और समाधि के समय मंत्र पाठ आदि सुनाकर उन्होंने भी सेवा का अवसर प्राप्त किया। तदुपरान्त ता. 6.2.15 को मध्यान्ह 12.40 पर क्षपक आ. श्री सीमंधरसागरजी का सल्लेखना पूर्वक समाधिमरण हो गया और उनके अन्तिम संस्कार की क्रिया हेतु मुनिराज विप्रणसागर आदि भी पहुँचे और विधिवत् संस्कार-विधि सायंकाल में सम्पन्न हुयी।

आ. सीमंधरसागरजी को श्रद्धांजलि कार्यक्रम एवं आचार्य आर्जवसागरजी प्रथम अभिनन्दन समारोह सम्पन्न-

प.पू. आचार्य श्री 108 आर्जवसागरजी देवास से विहार करते हुए हाटपीपल्या पधारे। और वहाँ ता. 8.2.15 को प्रात: काल 8 बजे दिगम्बर जैन मन्दिर के परिसर में आ. सीमंधरसागरजी की श्रद्धांजलि समारोह एवं आ. आर्जवसागरजी का प्रथम अभिनन्दन समारोह दूर-दूर से आये भक्त गणों के समक्ष सामूहिक रूप से चित्र अनावरण दीप प्रज्ज्वलन और शास्त्र दान आदि के साथ सम्पन्न हुआ। जिसमें जिन्होंने आचार्य श्री 108 आर्जवसागरजी को श्री फल भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया वे थे श्री अशोक जैन छाबड़ा, प्रदीप जैन पाटनी, भानुकुमार जैन इन्दौर, हेमन्त जैन टोंग्या, सुभाष जैन पाटनी, कैलाश चन्द जैन बांझल, पवन जैन चांदवाड़, देवकुमार जैन छाबड़ा, राजेन्द्र जैन टोंग्या, लोकेश जैन दिल्ली, निर्मल जैन दिल्ली, एवं श्रीमति रुचि टोंग्या व श्रीमति मनीषा जैन ने मंगलाचरण किया था।

यहीं पर दर्शनार्थ आचार्य श्री आर्जवसागरजी के निकट के भक्त लोग डॉ. अजित जैन, डॉ. सुधीर जैन सपत्नीक, इंजी. महेन्द्र जैन और बाद में पवन जैन आदि पधारे थे। उन्होंने भक्ति पूर्वक वंदना की और प्रवचन सुनकर आहार देने आदि का लाभ लिया और इसी दौरान आचार्य श्री आर्जवसागरजी से पूछा गया कि ये सब कुछ जो हुआ सो विधि और योग्यतानुसार हुआ और हम सब लोगों को खुशी का कारण है। लेकिन हम लोगों से कोई इस संदर्भ में पूछेंगे तो हम उन्हें इस संदर्भ को कैसे बतलायेंगे जिससे कि अपनी संघ परम्परा और इस परिस्थिति का सच्चा समाधान उन्हें मिल जाय। तब महाराज श्री ने कहा कि कहाँ तक बतलाऊँ फिर भी कहता हूँ कि बहुत दिनों से जिन आ. सीमंधरसागरजी का समाचार ज्ञात होता रहता था। उनसे हम अपनी व्यवहारिकता निभाने हेतु उनके याद करने पर उनके पास पहुँचे थे सेवा करने; लेकिन थोड़ी-सी सेवा से ही मिल गया मेवा के समान आचार्य पद; हम नहीं जानते थे कि उनकी सल्लेखना का अन्तिम समय ही आ गया है उनके सामने जाते

ही एक दिन की सेवा के बाद ही उन्होंने अपनी भावना व्यक्त कर दी कि मुझे अपना यह चा.च.आचार्य शान्तिसागरजी की परम्परा से प्राप्त आचार्य पद का भार तुम्हें सौंपना है; लेकिन हमें कोई पद की आशा न होते हुये भी हमने उनकी परम्परा की रक्षार्थ और अन्तिम समय उनका भार हल्का होने के साथ उनकी आत्मिक शान्ति पूर्वक प्रसन्नता हेतु उनका पद परिस्थिति वश स्वीकार कर लिया और उनकी जो एक अन्तिम भावना थी कि शिष्यों को मोक्षमार्ग में आगे बढ़ाना और चा.च.आ. शान्तिसागरजी की जयकार हमारी परम्परा के आप लोग ही लगा सकते हैं अन्य परम्परा के लोग नहीं। यह भी एक दीक्षा देने वाले परोपकारी गुरुओं का ऋण है इसको अवश्य चुकाना चाहिए। ऐसे भावों को सुनकर मैंने उनकी त्याग और आस्था की भावना की सराहना की वास्तव में यह गुरुवर आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के आशीर्वाद का फल मानता हूँ।

इस आचार्य पद का महत्त्व तो उनके लिए है जो मोक्षमार्ग पर आगे बढ़ने वाले हैं। दूसरे लोग माने या ना माने इससे कोई मतलब नहीं। जो योग्य भव्य दीक्षा प्रायश्चित्त आदि लेकर मोक्षमार्ग पर आगे बढ़ना चाहते हैं उनके लिए ही वे आचार्य हैं आशीर्वाद देकर उनका अनुग्रह करते हैं इस पद के लिए मात्र शास्त्र की विधि ही अनिवार्य होती है और किन्हीं आडम्बर औपचारिकताओं की आवश्यकता नहीं होती। यह प्रचार-प्रसार आदि तो श्रावकों की अपनी एक भक्ति है जो अपनी अनुकूलता के अनुरूप किया करते हैं। यह उनकी पुण्य वृद्धि का कारण हो सकता है।

गुरु लोग तो मात्र आशीर्वाद देकर इस कार्य में निमित्त मात्र हैं। जो जिस श्रद्धा से स्वीकार करेंगे उसे वैसे ही फल की प्राप्ति होगी। तो किसी ने पूछा कि- हे गुरुवर! प्रत्यक्ष रूप से आप श्री के लिए योग्यतानुसार सार्थक कार्य हो चुकने पर परोक्ष में अन्य किसी को अन्तिम यात्रा के समय पद प्रदान आदि ऐसा कार्य करना क्या संभव है? तो महाराजजी ने कहा जब तक शिव बनने का शक्ति रखने वाली आत्मा इस शरीर में होता है तब तक खुशी पूर्वक किये गये कुछ कार्य शोभा पाते हैं और शिव की शक्ति रखने वाली आत्मा जब इस स्थल से निकल जाता है तब यह शरीर शव हो जाता है और शव के सामने केवल दुःख का ही नजारा सामने रहता है। दुख के नजारे से किये गये खुशी के कार्य गंध रहित कागज के पुष्प की तरह काल्पनिक होते हैं और सार्थकता और वास्तविकता तो जिसकी वस्तु है उसके कर कमलों के द्वारा स्वस्थ चित्त पूर्वक साक्षात् प्रदान करने में है। पश्चात् आ. 108 श्री आर्जवसागरजी महाराज ने कुछ दिनों के बाद हाटपीपल्या से विहार करके चापड़ा, बागली, पुंजापुरा होते हुए उदय नगर की ओर विहार किया। महाराज श्री का जगह-जगह पर ग्रामीण क्षेत्रों में श्रावकों के चौकों में आहार हुए और प्रवचन हुए, जयकारों के नारों के साथ कई ग्रामीण क्षेत्रों के आदिवासी भी प्रभावित हुए एवं अन्य समाज के लोगों ने भी आरती, पाद प्रक्षालन कर पुण्यार्जन किया। जिसमें न्यायाधीश बागली के श्री आदेश जैन, अन्यत्र से भानुकुमार जैन, नरेन्द्र जैन, शांतिलाल जैन, राजेन्द्र जैन, अशोक जैन, अभय जैन, अरविन्द जैन के साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों के पंच सरपंचों एवं महिला पुरुषों ने स्वागत किया और पू. आचार्यश्री के साथ चलकर विहार में सम्मिलित हुए। उदय नगर में कुछ दिन ठहरकर, पश्चात वहाँ से पोटला वालों के नम्र निवेदन से वहाँ पर विहार किया। पश्चात् पोटला से जंगल के मार्ग से होते हुए सि.क्षे. सिद्धवरकूट पहुँचे।

भगवान महावीर का पावन जीवन

कर्मों की महानता में जन्म की सार्थकता

आचार्यश्री आर्जवसागर

ज्ञानीजन कहते हैं कि आवश्यकता अविष्कार की जननी है। एक समय वह था जब ढ़ाई हजार वर्ष पहले मानव दानवता पर उतर आया था। देश में हिंसा का तांडव नृत्य होने लगा था। धर्म के नाम पर पशुओं की बलि और बकरों, अश्वों और कहाँ तक कहें कि नरों को भी होम कर यज्ञ होने लगे थे। साथ यह भी प्रचार था कि इससे परलोक सुधर जाता है लेकिन जैन धर्म मात्र क्या; सभी धर्म अहिंसा की शिक्षा देते हैं लेकिन धर्म ग्रन्थों का उपदेश केवल शास्त्रों तक सीमित रह गया था। केवल भारत में कुछ जिन धर्मी अहिंसक इसे अमल में ला रहे थे और कुछ जानकर भी उपदेश देने में कतरा रहे थे। कहते हैं कि समय की लहर एक समान नहीं बहती। प्रकृति भी कहती है कि राहगीर को कहीं धूप कहीं छांव कभी उतार तो कभी चढ़ाव मिलता ही है। जब एक दिन लोगों ने कहा कि अब इस अति की इति कब होगी, वर्तमान में वर्द्धमान की आवश्यकता है, ऐसा अनुभव हुआ। तब बिहार के वैशाली नगर में राजा सिद्धार्थ के यहाँ राजा चेटक की पुत्री त्रिशला (प्रियकारणी) जो राजा सिद्धार्थ की धर्म पत्नी थी उनकी कूख से स्वर्ग से आये वर्द्धमान महावीर चैत्र शुक्ल तेरस के दिन उत्पन्न हुये। सारे लोगों में खुशियाँ छायीं। देवलोक में घण्टे और गृहों के सामने बधाईयों के वाद्य बजने लगे। राज-भवन में रत्नों की वर्षा की गई। इन्द्र ने मंगल ताण्डव नृत्य रचाया जन्माभिषेक और शचिदेवी व देवों द्वारा की गई सेवा के साथ वर्द्धमान का ज्ञान विद्या पराक्रम क्रमशः वृद्धिगत होने लगा।

जन्म होते ही धन, वैभव, ऐश्वर्य, सुख-शान्ति, आनन्द में वृद्धि होने लगी इस कारण उनका नाम **वर्द्धमान** रखा गया। जब संजयंत और विजयंत नामक दो मुनिराजों को तत्त्वार्थ के विषय में कुछ शंका थी, उस शंका का राजकुमार महावीर के दर्शन मात्र से ही समाधान हो गया तब उन मुनियों ने उनका नाम **सन्मति** रख दिया गया। जब मदोन्मत्त हाथी को राजकुमार वर्द्धमान ने एक क्षण में वश में कर लिया तब सबने मिलकर उनका नाम **वीर** रख दिया। जब देव ने परीक्षा करने के लिए भयंकर नाग का रूप धारण कर लिया और निर्भय वर्द्धमान उसके फण पर पैर रखकर उतरे और उसे खूब घुमकर निर्मद कर दिया तब देव ने प्रगट हो नमस्कार करके **महावीर** नाम रख दिया। जब देव ने परीक्षा करने के लिए अप्सराओं को भेजकर, हर प्रकार से तप से डिगाना चाहा किन्तु महावीर सुमेरु की तरह अडिग साधना में तल्लीन रहे तब देव उनका **अतिवीर** नाम रखकर चरणों में गिर पड़ा। इस प्रकार इनके पाँच नाम प्रसिद्ध हुए।

महावीर का बचपन का नाम वर्द्धमान था। जब वे बचपन में थे, तभी से वे करुणामय ह्रदय के स्वामी थे और उनकी संवेदनशील और चिंतनशील प्रकृति ने उन्हें विभिन्न बुराईयों के कारणों और उनके निवारण की खोज करने के लिए प्रेरित किया जो उन्होंने समाज के चारों ओर देखीं। 30 वर्ष की आयु तक गृहस्थ जीवन में व्यतीत करने के उपरांत उन्होंने सत्य की खोज करने के लिए संसार का त्याग कर दिया और सन्यासी बन गए। उन्होंने 12 वर्षों तक विभिन्न स्थानों का भ्रमण किया और एक उत्तम साधक तपस्वी आत्म सयंमी और आत्म

शोधक का जीवन व्यतीत किया। 42 वर्ष की आयु में उन्होंने ईश्वरीय ज्ञान(केवल ज्ञान अथवा कैवल्य) प्राप्त हुआ और कठोर साधना द्वारा जीवन और विश्वव्यापी सभी समस्याओं का समाधान मिल गया। इस प्रकार कैवल्य द्वारा उन्होंने सुख और दुख पर विजय प्राप्त की। उनकी इस विजय के कारण उन्हें **महावीर** के रूप में जाना जाने लगा।

महावीर ने अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह रूप पाँच महान सिद्धान्तों की शिक्षा दी। उन्होंने समस्त प्राणी जगत के प्रति प्रेम और करुणा का संदेश दिया। महावीर का मत था कि मनुष्य अपने भाग्य का स्वामी स्वयं है और प्रत्येक आत्मा में इतनी क्षमता है कि वह परम सिद्धि तक उठकर चरमावस्था को प्राप्त कर सके जिसे प्राप्त करने पर वह पुनर्जन्म के बंधन से मुक्त हो जाता है। भगवान महावीर ने समाज में प्रचलित सभी बुराईयों के विरुद्ध धर्म युद्ध छेड़ा। अहिंसा और अनेकांत महावीर के उपदेशों का मर्म थे। उन्होंने अपने अनुयायियों को किसी भी जीव की हत्या ना करने, किसी को पीड़ा ना पहुँचाने, किसी को दास ना बनाने, किसी को यातना ना देने, और किसी का शोषण ना करने उपदेश दिया। विश्व में जैन धर्म की अहिंसा का उपदेश ना केवल मनुष्य के लिए बल्कि जीवन के सभी रूपों के लिए एक विशेष महत्व रखता है।

जैन दर्शन में अहिंसा अपने शाब्दिक अर्थ की अपेक्षा अत्यंत व्यापक अभिप्राय रखती है। इसमें करुणा, सहानुभूति, दान, विश्वबन्धुता और सर्वक्षमा समाविष्ट है। भगवान महावीर के उपदेश शाश्वत प्रासंगिक हैं और यदि इन्हें व्यवहार में लाया जाये तो न केवल ये किसी के भी जीवन को नया अर्थ देंगे बल्कि विश्व को भी रहने के लिए अत्यंत बेहतर स्वरूप प्रदान करेंगे।

ईस्वी सन् से 527 वर्ष, विक्रम संवत से 470 वर्ष, शक संवत से 305 वर्ष 5 माह पूर्व कार्तिक वदी सोमवार और अमावस्या मंगलवार के मध्य में प्रातःकाल, जब चौथे काल के समाप्त होने में तीन वर्ष साढ़े आठ माह शेष रह गये थे और केवल ज्ञान की प्राप्ति होने के उपरांत 29 वर्ष 5 माह 20 दिन बाद अर्थात् 71 वर्ष 3 माह 25 दिन की आयु में भगवान महावीर ने महलों की पावापुर नगरी के पद्म सरोवर के मध्य खड्गासन मुद्रा में निर्वाण को प्राप्त किया। कुछ ही समय के अंदर देवताओं ने उस अंधेरी रात्रि में रत्न वर्षा कर रोशनी की, जनता ने दीपक जला कर उत्साह मनाया। राजाओं ने वीर निर्वाण की यादगार में कार्तिक अमावस्या की रात्रि को प्रति वर्ष दीपावली पर्व की स्थापना की। तब से आज तक सभी वर्गों के लोग उत्साहपूर्वक दीपावली पर्व मनाते चले आ रहे हैं।

प्रो. जोसेफ मेरी ए.बी.एस. जर्मनी ने ''**भगवान महावीर का आदर्श जीवन**'' पुस्तक में पृष्ठ क्रमांक 17 पर कहा है कि भगवान महावीर की आदर्श शिक्षाएं अत्यंत बलशाली आध्यात्मिक प्रतिक्रियाएं हैं। उन्होंने अपने जीवन से यह सिद्ध कर दिया है कि आत्मा शरीर की गुलाम नहीं है। उन्होंने भौतिक लालसाओं और इच्छाओं की दुनिया को नष्ट किया और हम उन्हें बहुत ही शानदार सुपरमैन कहते हैं। हम उनके लिए जर्मन विचारक हार्डर की निम्न पंक्तियों का उल्लेख करते हैं:-

''**वह रण क्षेत्र के विजेताओं के नायक हैं। वह शेर के शिकारियों के विजेताओं के नायक हैं। किन्तु वह नायकों के नायक हैं एवं स्वयं के विजेता हैं।**'' मिस्टर हर्बट वॉरेन इंग्लैण्ड ने '**वीर**' पुस्तक पर

पृष्ठ क्रमांक 2 में कहा है कि ''भगवान महावीर का जीवन पूरी तरह सत्य ईमानदारी एवं पवित्रता से पूर्ण था। एवं उनका जीवन समस्त प्राणीयों को सुरक्षा देता है, उन्होंने किसी भी सम्पत्ति का बिलकुल भी संचय या परिग्रह नहीं किया यहाँ तक की वस्त्र भी त्यागे। उनका जीवन उस प्रत्येक व्यक्ति के लिए उदाहरण है जो कि दु:खों से छुटकारा या मुक्ति पाना चाहता है।'' प्रो. टेन युनसेन चाईना (चीन) ने ''महावीर कममेमोरेशन'' पुस्तक वाल्यूम वन में कहा है कि सर्व प्रथम अहिंसा का पाठ अत्यंत गहराई में एवं सुव्यवस्थित तरीके से जैन तीर्थंकरों विशेष रूप से चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर वर्द्धमान द्वारा समझाया गया। इसके बाद पुन: भगवान बुद्ध द्वारा अंत में महात्मा गांधी के विचारों, शब्दों एवं कार्यों में परिलक्षित हुआ। विश्व के अप्रतिम विद्वान जार्ज बर्नाड्शा ने ''जैन शासन'' पुस्तक में पृष्ठ क्रमांक 30 पर कहा है कि जैन धर्म के सिद्धांत मुझे अत्यंत प्रिय हैं। मेरी आकांक्षा है कि मृत्यु के पश्चात् मैं जैन परिवार में जन्म धारण करूं। डॉ. श्री राधाकृष्णन जी (राष्ट्रपति) ने ''शांति दूत महावीर'' पुस्तक में पृष्ठ क्रमांक 30 पर कहा है कि ''यदि मानवता को विनाश से बचाना है और कल्याण में मार्ग पर चलना है तो भगवान महावीर के संदेशों को और उनके बताए गए मार्ग को ग्रहण किये बिना और कोई रास्ता नहीं है''। आचार्यश्री काका कालेलकर जी ने ''ज्ञानोदय'' पुस्तक में पृष्ठ क्रमांक 66 पर कहा है कि मैं भगवान महावीर को परम आस्तिक मानता हूँ। श्री भगवान महावीर ने केवल मानव जाति के लिए ही नहीं वरन समस्त प्राणीयों के विकास के लिए अहिंसा का प्रचार किया। उनके हृदय में प्राणी मात्र के कल्याण की भावना सदैव प्रबल थी। इसलिए वह विश्व कल्याण का प्रशस्त मार्ग स्वीकार कर सके। मैं दृढ़ता के साथ कह सकता हूँ कि उनके अहिंसा सिद्धांत से ही विश्व कल्याण तथा शांति की स्थापना हो सकती है।

इत्यलं!

आर्जवसागरजी के आचार्य पद को शुभकामनाएँ

डॉ. प्रो. एल.सी. जैन, जबलपुर

अरे! आर्जवसागरजी को आचार्य पद मिल गया है वे तो आचार्यश्री के प्रभावक शिष्य तो थे ही। पहले भी सन् अट्ठासी में मढ़िया जी चातुर्मास में हमने देखा था कि वे अधिकतर मौन ही रहते थे और घंटों तक के लिए एक आसन में ध्यान करते थे। और जब वे आचार्य श्री के प्रवचन में बैठते थे तो कुछ लोग उनकी मुद्रा देखकर उन्हें तो भगवान कहके पुकारते थे। वैसे तो वे भारत की लम्बी-लम्बी यात्रायें करके आये और वहाँ की भाषायें भी सीख ली थीं और काव्य भी बहुत रचा है। और मैंने तो जब 2004 में भोपाल संगोष्ठी के लिए उनके ही सान्निध्य पढ़ने के लिए आलेख लिखा था तो उसमें मैंने तीर्थोदय काव्य से प्रभावित होने से उन्हें आचार्य लिख दिया था। लेकिन महाराजजी ने स्वयं ही वो शब्द उस समय निकाल दिया था। वे उस समय तो अपने आपको आचार्य लगाना बिलकुल नहीं चाहते थे। लेकिन चा.च.आ. शान्तिसागरजी की परम्परा के वयोवृद्ध आ. सीमंधरसागरजी ने उन्हें सल्लेखना के समय अपना आचार्य पद सौंप दिया तो अच्छा ही हुआ। बड़ी खुशी की बात है। अरे! सल्लेखना के समय तो पद छोड़ना ही चाहिए; पद के साथ थोड़ी ही सल्लेखना होती है, किसी योग्य शिष्य के ऊपर भार उतारना अच्छा माना जाता और वह भी जो हुआ आचार्यश्री विद्यासागरजी के संघ के सुयोग्य शिष्य को सौंप करके उन्होंने अच्छा महान कार्य किया। हम सब लोगों को इस कार्य की अनुमोदना कर हर्ष मनाना चाहिए।

ॐ नमः सिद्धेभ्यः।

शान्तिर्जिनो मे भगवान् शरण्यः।

सत्पथ-दर्पण

गतांक से आगे.....

पं. अजित कुमार शास्त्री

कर्म

आत्मा का शत्रु पौद्गलिक 'द्रव्यकर्म' (ज्ञानावरण आदि) तो है ही, किन्तु इसके साथ ही उसका अपना अन्तरङ्ग शत्रु 'भावकर्म' (राग, द्वेष, मोह आदि विकृत भाव) भी है। 'चोर चोर मौसेरे भाई' कहावत के अनुसार 'द्रव्य कर्म' और 'भाव कर्म' एक दूसरे के सहायक निमित्त है। भावकर्म के निमित्त से द्रव्यकर्म बनता है या बन्धता है तथा द्रव्य कर्म के निमित्त से भावकर्म होता है। आत्मा का राग द्वेष आदि विकृत भावरूप 'भावकर्म' ऐसा नहीं है जो द्रव्यकर्म के निमित्त के बिना (ज्ञानावरण मोहनीय आदि के उदय के बिना) होता हो। इस तरह द्रव्यकर्म से भावकर्म और भावकर्म से द्रव्यकर्म बनने की परम्परा संसारी आत्मा के सदा से (अनादिकाल से) चली आ रही है।

पाप रूप द्रव्यकर्म

आठ द्रव्यकर्मों में से ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय और अन्तराय ये चार घाती कर्म हैं। ये आत्मा के ज्ञान, दर्शन, सम्यक्त्व, चारित्र और वीर्य नामक अनुजीवी गुणों का घात करते हैं, अतः ये चारों कर्म पापरूप या अशुभ माने गये हैं।

घाती कर्मों के सिवाय चार अघाती कर्मों में भी असाता वेदनीय, नरक आयु, नीच गोत्र और नाम कर्म की नरकगति तिर्यञ्चगति आदि प्रकृतियां भी पाप कर्म रूप हैं। इस तरह आठों कर्मों में पापरूप प्रकृतियाँ अशुभ प्रकृतियाँ हैं। इन पाप प्रकृतियों के उदय से न तो सांसारिक सुख साता मिलती है, न मुक्तिमार्ग का सहायक साधन प्राप्त होता है।

पुण्य द्रव्य कर्म

पूर्वोक्त पाप प्रकृतियों (कर्मों) के सिवाय क्षेत्र 68 प्रकृतियाँ 'पुण्य कर्म' रूप है, साता वेदनीय, तिर्यञ्च, मनुष्य, देव आयु (तिर्यञ्च जीव मरना नहीं चाहता, अतः तिर्यञ्च आयु भी शुभ मानी गई है), उच्च गोत्र (मुनि दीक्षा करने योग्य कुल) तथा कर्म की 63 प्रकृतियाँ- मनुष्यगति, मनुष्यगत्यानुपूर्वी, देवगति, देवगत्यानुपूर्वी, पंचेन्द्रिय जाति, निर्माण, 5 शरीर, 5 बंधन, 5 संघात, 3 अंगोपांग, 5 वर्ण, 5 रस, 2 गन्ध, 8 स्पर्श, समचतुरस्र संस्थान, वज्रऋषभनाराच संहनन, अगुरुलघु, परघात, उच्छ्वास, आतप, उद्योत, प्रशस्त विहायोगति, त्रस, बादर, पर्याप्त, प्रत्येक, स्थिर, शुभ, सुभग, सुस्वर, आदेय, यशःकीर्ति और तीर्थंकर।

इन पुण्य प्रकृतियों के उदय होने पर सांसारिक सुख-सुविधा आत्मा को मिला करती है तथा मुक्ति-साधना के लिये योग्यता प्रकट होती है। जैसे मनुष्य भव, वज्रऋषभनाराच संहनन, तीर्थंकर आदि का उदय होने पर मुक्ति के साधन सम्यक्त्व, ज्ञान, चारित्र प्राप्त करना सुलभ होता है।

जैसे कांटे द्वारा पैर में चुभा हुआ कांटा निकलता है, उसी तरह संसार-भ्रमण के कारण भूत आठों कर्मों का क्षय भी मनुष्य आयु, उच्चगोत्र, तीर्थंकर आदि पुण्य कर्मों के समागन से होता है। मुक्ति की प्राप्ति मनुष्य आयु, उच्च गोत्र, वज्रऋषभनाराच संहनन आदि कर्मों के उदय होने पर भी संभव है। यदि इन पुण्य कर्मों का

उदय न हो तो त्रिकाल में भी मुक्ति मिलना असंभव है।

मनुष्य आयु आदि के मिलने पर भी मुक्ति न हो, यह अन्य बात है परन्तु यदि मुक्ति मिलेगी तो मनुष्य की आयु, उच्च गोत्र, वज्रऋषभनाराच संहनन आदि कर्म-उदय होने पर ही मिलेगी। तीर्थंकर प्रकृति के उदय से तो नियम से मुक्ति मिलती ही है।

इस तरह पुण्य द्रव्यकर्म सांसारिक सुख शांति का कारण तो है ही किन्तु इसके साथ ही भव्य जीव के लिये मुक्ति का भी अविनाभावी कारण है।

पाप-भावकर्म

आत्मा के तीव्र कषाय के उदय से मिथ्यात्व क्रोध, मान, माया, लोभ, रागद्वेष, काम वासना, हिंसा, असत्य भाषण, चोरी, व्यभिचार, विश्वासघात, धोखा, अन्याय, अनीति, आर्तध्यान, रौद्रध्यान आदि के परिणाम पापमय भावकर्म हैं। इन भावकर्मों से अशुभ द्रव्यकर्मों का आस्रव-बंध हुआ करता है।

पुण्य-भावकर्म

जो आत्मा को पवित्र करे सो पुण्य कर्म है। मिथ्यात्व और अनन्तानुबन्धी, अप्रत्याख्यान, प्रत्याख्यान कषाय के अनुदय होने पर तथा सरागसम्यक्त्व सराग चारित्र के दया, दान करने, वीतराग देव, निर्ग्रन्थ गुरु एवं जिनवाणी की भक्ति पूजा, अहिंसा आदि 5 व्रत, ईर्या आदि 5 समिति, 3 गुप्ति, उत्तम क्षमा मार्दव आदि दस धर्म, धर्मध्यान आदिक रूप शुभ भाव होते हैं, वे पुण्य भाव हैं।

इन पुण्य भावों से सांसारिक सुख तो मिलते ही हैं किन्तु इसके साथ ही ये पुण्य भाव शुक्लध्यान के साक्षात् तथा परम्परा कारण हैं। शुक्ल ध्यान की पूर्ववर्ती पर्याय-धर्मध्यान पुण्य रूप ही है इसलिए तो पुण्यभाव शुक्लध्यान का साक्षात् कारण है।

अप्रमत्त नामक सातवें गुणस्थान का साक्षात कारण अणुव्रत, महाव्रत वाला पांचवा छठा गुणस्थान है, अतः पुण्य भाव शुक्लध्यान का परम्परा कारण है। दशवें गुणस्थान तक शुक्लध्यान भी पुण्य भाव है।

श्री कुन्दकुन्द आचार्य ने 'पुणफला अरहंता' वाक्य द्वारा अर्हन्त पद की प्राप्ति पुण्य का सर्वश्रेष्ठ फल बतलाया है।

इस तरह 'पुण्य' का अभिप्राय उक्त तीन अर्थों में लिया जाता है। इसको प्रकारान्तर से साधन, साध्य और फल; या कारण, कार्य और फल भी कह सकते हैं।

जिस तरह बहुत मैले वस्त्र को निर्मल करने के लिए उस कपड़े पर साबुन लगाया जाता है और उसे पानी से धोया जाता है तो कपड़े का मैल धीरे-धीरे दूर होता जाता है और वह वस्त्र स्वच्छ होता जाता है। इसी प्रकार कर्ममैल से मैला आत्मा जब अपनी स्वच्छ मानसिक वाचनिक और शारीरिक क्रिया से आत्मा का अशुभ मैल धोने लगता है तो आत्मा से अशुभ कर्म मल छूटने लगता है जिससे आत्मा का पाप मल भार हलका होने लगता है।

क्रमशः....

महावीराचार्यप्रणीतः
गणितसारसंग्रहः

गतांक-से आगे..... **कलासवर्णव्यवहारः** अनुवादक : प्रो. एल.सी. जैन

अर्धत्रिभागपादाः पञ्चांशकषष्ठसप्तमाष्टांशाः । दृष्टा नवमश्चैषां पृथक् पृथग्ब्रूहि गणक घनम् ॥१८॥
त्रितयादि चतुश्चयकोंऽशगणो द्विमुखद्विचयोऽत्र हरप्रचयः ।
दशकं पदमाशु तदीयघनं कथय प्रिय सूक्ष्ममते गणिते ॥१९॥
शतकस्य पञ्चविंशस्याष्टविभक्तस्य कथय घनमूलम् ।
नवयुतसप्तशतानां विंशानामष्टभक्तानाम् ॥२०॥
भिन्नघने परिदृष्टघनानां मूलमुदग्रमते वद मित्र ।
त्र्यूनशतद्वययुग्द्विसहस्र्या श्चापि नवप्रहतत्रिहतायाः ॥२१॥

इति भिन्नवर्गवर्गमूलघनघनमूलानि ।

भिन्नसंकलितम्

भिन्नसंकलिते करणसूत्रं यथा—

पदमिष्टं प्रचयहतं द्विगुणप्रभवान्वितं चयेनोनम् ।
गच्छार्धेनाभ्यस्तं भवति फलं भिन्नसंकलिते ॥२२॥

---

१ M सप्तशतस्यापि सखे व्येकोनत्रिंशकाष्टकाप्तस्य ।

$\frac{1}{2}$, $\frac{1}{3}$, $\frac{1}{4}$, $\frac{1}{5}$, $\frac{1}{6}$, $\frac{1}{7}$, $\frac{1}{8}$ और $\frac{1}{9}$ राशियाँ दी गई हैं; इनके घन अलग-अलग बतलाओ ॥१८॥ दिये गये भिन्नों के अंश ३ से आरम्भ होकर ४ द्वारा उत्तरोत्तर बढ़ते हैं; हर २ से आरम्भ होकर उत्तरोत्तर २ द्वारा बढ़ते हैं । ऐसे भिन्नात्मक पदों की संख्या १० है । हे तीव्र बुद्धिधारी गणक मित्र ! बतलाओ कि उनके घन क्या होंगे ? ॥१९॥ $\frac{125}{8}$ और $\frac{729}{8}$ के घनमूल निकालो ॥२०॥ हे अग्रमते मित्र ! भिन्नों के घन निकालने के प्रश्नों में प्राप्त घन राशियों के घनमूल और $\frac{2197}{27}$ का घनमूल निकालकर बतलाओ ।

इस प्रकार कलासवर्ण व्यवहार में भिन्न सम्बन्धी वर्ग, वर्गमूल, घन, घनमूल नामक परिच्छेद समाप्त हुआ ।

भिन्न संकलित (भिन्नात्मक श्रेढियों का योगकरण)

भिन्नात्मक श्रेढियों का संकलन सम्बन्धी नियम—

समान्तर श्रेढि में भिन्नात्मक श्रेढि को बनाने वाले पदों की चुनी हुई संख्या को प्रचय द्वारा गुणित करते हैं और प्रथमपद की द्विगुणित राशि में मिलाते हैं । प्राप्त फल को प्रचय से ह्रासित करते हैं । जब यह परिणामी राशि पदों की संख्या की आधी राशि से गुणित की जाती है, तब वह समान्तर श्रेढि की भिन्नात्मक श्रेढि के योग को उत्पन्न करती है ॥२२॥

---

(२२) बीजीयरूप से, य = (नब + २अ − ब) $\frac{न}{२}$ है । इसके लिये द्वितीय अध्याय की ६२वीं गाथा देखिये ।

अत्रोद्देशकः

द्वित्र्यंशः षड्भागस्त्रिचरणभागो मुखं चयो गच्छः ।
द्वौ पञ्चमौ त्रिपादो द्वित्र्यंशोऽन्यस्य कथय किं वित्तम् ॥२३॥
आदिः प्रचयो गच्छस्त्रिपञ्चमः पञ्चमस्त्रिपादांशः ।
सर्वांशहरौ वृद्धौ द्वित्रिभिरा सप्तकाच्च का चितिः ॥२४॥

इष्टगच्छस्याद्युत्तरवर्गरूपघनरूपधनानयनसूत्रम्—

पदमिष्टमेकमादिर्व्येकेष्टदलोद्धृतं मुखोनपदम् । प्रचयो वित्तं तेषां वर्गो गच्छाहतं वृन्दम् ॥२५॥

उदाहरणार्थं प्रश्न

जिस श्रेढि में प्रथम पद, प्रचय और पदों की संख्या क्रमशः $\frac{२}{३}$, $\frac{१}{६}$ और $\frac{३}{४}$ हों तथा ऐसी ही एक और श्रेढि में ये क्रमशः $\frac{२}{५}$, $\frac{३}{४}$ और $\frac{२}{३}$ हों तो इन श्रेढियों के योग बतलाओ ॥२३॥ समानान्तर श्रेढि में दी गई एक श्रेढि के प्रथम पद, प्रचय और पदों की संख्या क्रमशः $\frac{१}{३}$, $\frac{१}{५}$ और $\frac{३}{४}$ है। इन सब भिन्नात्मक राशियों के अंश और हर उत्तरोत्तर २ और ३ द्वारा क्रमशः बढ़ाये जाते हैं जब तक कि ७ श्रेढियाँ इस प्रकार तैयार नहीं हो जातीं। बतलाओ कि इनमें से प्रत्येक श्रेढि का योग क्या है ?॥२४॥

जब योग, दी हुई श्रेढि के पदों की संख्या का वर्गरूप या घनरूप हो तो चुने हुए पदों वाली श्रेढि के सम्बन्ध में प्रथम पद, प्रचय और योग निकालने का नियम—

जो भी पदों की संख्या चुनी गई हो उसे लो और प्रथम पद को एक मान लो। पदों की संख्या को प्रथम पद द्वारा ह्रासित कर और तब एक कम पदों की संख्या की आधी राशि द्वारा भाजित करने से प्रचय प्राप्त होता है। इनके सम्बन्ध में श्रेढि का योग पदों की संख्या की राशि का वर्ग होता है। यह जब पदों की संख्या द्वारा गुणित किया जाता है तो योग का घन प्राप्त होता है ॥२५॥

---

(२३) जब श्रेढि में पदों की संख्या भिन्न के रूप में दी गई हो तो स्पष्ट है कि ऐसी श्रेढि साधारणतः बनाई नहीं जा सकती। परन्तु, अभिप्राय यह प्रतीत होता है कि दिया गया नियम इन दशाओं में ठीक उतरता है।

(२५) स्पष्ट है कि, सूत्र में $य = \frac{न}{२}(२अ + \overline{न-१}\,ब)$, और जब $अ = १$ और $ब = \frac{२(न-अ)}{न-१}$ हो तो य का मान $न^२$ के तुल्य हो जाता है। इस योग में न का गुणन करने में, अ और ब का न द्वारा गुणन भी अंतर्भूत है ताकि जब $अ = न$ और $ब = \frac{न-अ}{न-१}२न$ हो, तब $य = न^३$ हो। कुछ और विचार करने पर ज्ञात होगा कि अ का मान चाहे पूर्णांक अथवा भिन्नीय हो फिर भी ब का $\frac{२(न \sim अ)}{न-१}$ रूपवाला मान य की अर्हा को $न^२$ के रूप में ला सकता है।

'$\sim$' चिह्न का अर्थ अन्तर होता है।

अत्रोद्देशकः

[1]पदमिष्टं द्वित्र्यंशो रूपेणांशो हरश्च संवृद्धः। यावद्दशपदमेषां वद मुखचयवर्गवृन्दानि ॥२६॥

इष्टघनधनाद्युत्तरगच्छानयनसूत्रम्—

इष्टचतुर्थः प्रभवः प्रभवात्प्रचयो भवेद्द्विसंगुणितः।
प्रचयश्चतुरभ्यस्तो गच्छस्तेषां युतिर्वृन्दम् ॥२७॥

अत्रोद्देशकः

द्विमुखैकचया अंशास्त्रिप्रभवैकोत्तरा हरा उभये।
पञ्चपदा वद तेषां घनधनमुखचयपदानि सखे ॥२८॥

---

१ यह श्लोक M में अप्राप्य है।

उदाहरणार्थ प्रश्न

दी हुई श्रेढि में पदों की चुनी हुई संख्या $\frac{२}{३}$ है; इस भिन्न के अंश और हर उत्तरोत्तर एक द्वारा बढ़ाये जाते हैं जब तक कि १० विभिन्न भिन्नात्मक पद प्राप्त नहीं होते। इन भिन्नों को संवादी समान्तर श्रेढियों के पदों की संख्या मानकर उनके सम्बन्ध में प्रथम पद, प्रचय और योग के वर्ग तथा घन निकालो ॥२६॥

समान्तर श्रेढि के दिये हुए योग (जो कि किसी इष्ट राशि का घन हो) के सम्बन्ध में प्रथम पद, प्रचय और पदों की संख्या निकालने का नियम—

इष्ट राशि का चतुर्थांश प्रथम पद है। इस प्रथम पद में दो का गुणन करने पर प्रचय उत्पन्न होता है। प्रचय में चार का गुणा करने पर (एक) इष्ट श्रेढि के पदों की संख्या प्राप्त होती है। इनसे सम्बन्धित योग इष्ट राशि का घन होता है ॥२७॥

उदाहरणार्थ प्रश्न

अंश २ से आरम्भ होते हैं और उत्तरोत्तर १ द्वारा बढ़ते हैं; हर को १ द्वारा बढ़ाते हैं जो कि आरम्भ में ३ है। ये दोनों प्रकार के पद (अंश और हर) में से प्रत्येक संख्या में पाँच है। इन चुनी हुई भिन्नात्मक राशियों के सम्बन्ध में, हे मित्र, घनात्मक योग और संवादी प्रथमपद, प्रचय और पदों की संख्या निकालो ॥२८॥

---

(२७) यह नियम केवल विशेष दशा में प्रयुक्त किया गया है। यह साधारण रूप से भी प्रयोग में लाया जा सकता है। नियम इस तरह है :

$$\frac{क}{४}+\frac{३क}{४}+\frac{५क}{४}+\cdots\cdots २ \text{ क पदों तक} = \frac{क}{४}(\,२\ क\,)^{२} = क^{३}$$

इस क्रिया की साधारण प्रयोज्यता, समीकरण $\frac{क}{प^{२}}\times(\text{पक})^{२}=क^{३}$ से शीघ्र स्पष्ट हो सकती है। इन सब दशाओं में श्रेढिके पदों की संख्या प्रथम पद को $प^{३}$ से गुणित करने पर प्राप्त हो सकती है क्योंकि प्रथम पद $\frac{क}{प^{२}}$ है। प्रत्येक दशा में प्रचय प्रथमपद से द्विगुणित लिया जाता है।

ग० सा० सं०—६

क्रमशः....

गतांक से आगे.....

पारसचन्द से बने आर्जवसागर

तपो निलय में पञ्चकल्याणक महामहोत्सवः-

श्री विशाखाचार्य तपोनिलय में बड़े विशाल रूप में ता. 21.02.99 से 26.02.99 तक श्री मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक महामहोत्सव गुरुवर मुनि श्री आर्जवसागरजी के ससंघ सान्निध्य में सानन्द सम्पन्न हुआ। जिसमें नवनिर्मित तपोनिलय के जिनालय के मूलनायक श्री अजितनाथ भगवान, ऊपर मंजिल के मूलनायक श्री अनन्तनाथ भगवान, द्वय समवसरण की प्रतिमाएँ, मानस्तम्भ की प्रतिमाएँ, पन्रुट्टी नगर की प्रतिमाएँ, ईरोड़ नगर की प्रतिमाएँ, गुणंबाड़ी के मानस्तम्भ की प्रतिमाएँ, विशाखाचार्य की मूर्ति आदि करीब शताधिक प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा इस पंचकल्याणक में गुरुवर श्री आर्जवसागरजी के कर कमलों से सम्पन्न की गयी थी। इस पंचकल्याणक में प्रतिष्ठाचार्य ब्र. जिनेश जी व ब्र. महेश जी, ब्र. प्रदीप पीयूष आदि, जबलपुर (मढ़िया जी) गुरुकुल से आये थे। इनके निर्देशन में एवं श्री सिंहचन्द्र शास्त्री, मद्रास के सहयोग से सम्पन्न हुआ। इस भव्य महोत्सव में मुनिश्री के आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत लेकर ब्राह्मी, सुन्दरी बनने का भाग्य श्री वाणी श्री (चेय्यार) व क्षेमश्री (एरम्बूर) के लिए मिला। इसी शुभ अवसर पर युवा शांतकुमार (मद्रास) ने भी मुनिश्री से आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया। पंचकल्याणक में सौधर्म इन्द्र बनने का सौभाग्य श्रीमान् सोहनलालजी कोठारी सेलम वालों के लिए मिला था। मुख्य व्यवस्थाओं को सम्हालने वाले श्रीमान् बुधराज कासलीवाल पाण्डिचेरी एवं तपो निलय के ट्रस्टी गण थे। इस पंच कल्याणक में आरग (महाराष्ट्र) से सेवादल भी आया था। सेवादल के युवाओं ने अपने दिव्यघोष के साथ कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई तथा मुनिश्री को पण्डाल तक लाना व ले जाना तथा पण्डाल की शुद्धि देखना आदि अनेक सेवायें दी थीं। इसी अवसर पर मुनिश्री आर्जवसागरजी के पूर्व अवस्था की माता श्रीमती माया देवी, पिता श्री शिखरचन्दजी एवं छोटे भाई संजय जैन पहली बार उत्तर भारत से तमिलनाडु में मुनिश्री के दर्शनार्थ आये थे। इसी समय दयोदय गौशाला का शुभारम्भ मुहूर्त्त भी श्री बाबूलाल पहाड़िया, हैदराबाद वालों के करकमलों द्वारा विशेष सहयोग राशि देकर किया गया।

तपोनिलय में मूलनायक अजितनाथ भगवान की प्रतिमा कन्नलम् के श्रीमान् वृषभदास जैन धर्मपत्नि नागलक्ष्मी दम्पति के ओर से एवं ऊपर मंजिल के अनन्त भगवान की प्रतिमा पेरणमल्लूर अय्यास्वामी जैन की ओर से प्रदान की गयी। श्रीमान् सेलवराज जैन दम्पति कलवै (चेन्नै) वालों के ओर से मानस्तम्भ का निर्माण कराया था। सभी के सहयोग से तमिलनाडु में हुये पंचकल्याणकों में यह पंचकल्याणक अद्वितीय रूप से सम्पन्न हुआ। तेरह फुट ऊँचे कुन्दकुन्दाचार्य के बिम्ब को प्रदान कर ऊँचे आसन पर बिठाने का सौभाग्य श्री सुशीलकुमार गंगवाल पाण्डिचेरी, वालों को प्राप्त हुआ था।

तपोनिलय के पंचकल्याणक के बाद मुनिश्री आर्जवसागरजी का ससंघ विहार आयलवाड़ी, मेलपन्दल हुआ, फिर आरनी (पुदुकामूर) पधारे। वहाँ पर ता.19.03.99 को महावीर जयन्ती एवं मुनिश्री का 11वाँ दीक्षा दिवस मनाया गया, फिर ता. 31.04.99 को पुदुकामूर में राजशेखर जैन के घर के ऊपर गृह

चैत्यालय की स्थापना की गयी। मुनिश्री वहाँ से विहार करके आयलवाड़ी आये वहाँ पर ता.04.04.99 को मानस्तम्भ बनाने के लिए शिलान्यास किया गया। फिर वहाँ से विहार करके तपोनिलय आये। वहाँ ता. 18.04.99 को अक्षय तृतीया पर्व मनाया गया, और उसी दिन वंधवासी के प्रतिमाधारियों का भक्तामर व्रत पूर्ण होने के उपलक्ष में भक्तामर विधान एवं उद्यापन किया गया। ता.02.05.99 से 09.05.99 तक ग्रीष्मकालीन शिविर लगाया गया, जिसमें इष्टोपदेश, द्रव्यसंग्रसह, तत्त्वार्थ सूत्र आदि शास्त्र पढ़ाये गये। फिर मुनिश्री का गमन कन्नलम् की ओर हुआ।

कन्नलम् में श्रुतपञ्चमीः-

कन्नलम् गाँव मं श्रुतपञ्चमी पर्व बड़े रूप से मनाया गया। मुनि श्री आर्जवसागरजी का विशेष प्रवचन भी हुआ, जिसमें उन्होंने बताया कि धरसेनाचार्य से आचार्य पुष्पदन्त, भूतबली महाराज ने कैसे आगम का ज्ञान प्राप्त किया ? और कैसे सिद्धान्त शास्त्रों की रचना की ? आदि विषयों के माध्यम से श्रुतपञ्चमी पर्व का महत्त्व बताया, और श्रावकों ने शास्त्रों की विशेष पूजायें आदि की।

नल्लवन पालयम् वर्षायोगः-

मुनिश्री ससंघ कन्नलम् से विहार करके वलत्ती, मेलमलैयणूर, तायणूर होते हुए तिरुवन्नामलै पहुँचे। वहाँ से फिर नल्लवन पालयम् में प्रवेश हुआ। मुनिश्री का भाव कर्नाटक की ओर जाने का हुआ था लेकिन यहाँ के लोगों की भक्ति एवं पुण्य ने मुनिश्री को बांध-सा-लिया मानो; और सन् 1999 का चातुर्मास नल्लवन पालयम् में ही हुआ। ता. 27.07.99 को चातुर्मास कलश स्थापना की गयी। स्थापना पर सेलम पाण्डिचेरी से भक्तगण आये। वर्षायोग में तत्त्वार्थ सूत्र और इष्टोपदेश शास्त्र का अर्थ सहित विस्तार से समझाते हुए स्वाध्याय हुआ, और धार्मिक पाठशाला खोली गयी। जिसमें बच्चे रोज शाम को आकर सम्यग्ज्ञान प्राप्त करते थे, और रविवार को सुबह पूजन करते थे। मुनिश्री की आहार-चर्या जैनों के घर-घर को पवित्र करती थी। यह अवसर इस गाँव वालों को प्रथम बार मिला और वर्षायोग में सोलहकारण पर्व में कई लोगों ने एक आहार एक उपवास से और कुछ लोगों ने एकासन से यह पर्व मनाया। दशलक्षण में श्रावक साधना संस्कार शिविर में भी बहुत लोगों ने व्रत, नियम, संयम के साथ भाग लेकर इस अनादिकालीन पर्व के महत्त्व को जानकर बहुत आनन्द की अनुभूति प्राप्त की। जहाँ पर छोटा सा मन्दिर था वह गुरुवर की आशीर्वाद एवं प्रेरणा से विशाल रूप लेने लगा और वर्षायोग के अंत में पिच्छि परिवर्तन के कार्यक्रम में वंधवासी के श्री सी.कुमार जैन परिवार वालों ने आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत पूर्वक गुरुवर आर्जवसागरजी की पुरानी पिच्छि लेने का सौभाग्य प्राप्त किया।

काट्टुमलैयनूर में कलशारोहणः-

नल्लवन पालयम् से विहार करके काट्टुमलैयनूर गये। वहाँ पर श्रावकों के निवेदन से मन्दिर के शिखर पर कलशारोहण कार्यक्रम ता. 15.12.99 को मनाया गया। गुरुवर मुनिश्री आर्जवसागरजी के सान्निध्य में बहुत भव्य रूप से यह कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। मुनिश्री ने वहाँ पर कुछ दिन प्रवास करके प्रवचन के माध्यम से धर्म प्रभावना की। फिर वहाँ से विहार करके मलपाम्बाड़ी पधारे।

तिरुवन्नामलै में अहिंसा रैली:-

तिरुवन्नामले के भक्तों के निवेदन से मुनिश्री आर्जवसागरजी मलम्बाड़ी से विहार करके तिरूवन्नामलै आये। वहाँ पर स्थानकवासी श्वेताम्बरों के महावीर भवन में ठहर करके कुछ दिनों तक प्रवचन के माध्यम से अहिंसा, व्रत आदि का संदेश दिया। फिर वहीं पर ता.02.01.2000 को सैकड़ों लोगों के साथ अहिंसा रैली पूर्वक मीनाक्षी कल्याणमण्डप में शाकाहार सम्मेलन सम्पन्न हुआ। जिसमें डी.जी.पी. श्रीपालन जैन व स्थानीय एस.पी. आदि ने आ करके धर्म लाभ लिया। कई विशेष लोगों ने अहिंसा पर वक्तव्य दिये और मुनिश्री का भी अहिंसा विषय पर पावन प्रवचन सम्पन्न हुआ। इससे वहाँ के अजैन लोगों में भी बहुत प्रभाव हुआ क्योंकि तमिलदेश में मुनियों का विहार बहुत ही कम होता है उसमें भी तमिल भाषा में अहिंसा धर्म पर उपदेश देने वाले मुनि; एक गुरुवर आर्जवसागरजी ही थे। इसलिए उनका उपदेश सुन करके अन्यमतावलम्बी बहुत लोग प्रभावित होकर शाकाहारी एवं अहिंसक बने यह बड़ा लाभ हुआ।

नल्लवन पालयम् में पंचकल्याणक:-

तिरूवन्नामलै से नल्लवन पालयम् में मुनिश्री के ससंघ का पदार्पण हुआ। वर्षायोग के आरम्भ से लेकर सात, आठ महिनों में बनकर तैयार हुए नये मन्दिर के पंचकल्याणक हेतु मुनिश्री का आगमन हुआ, और जनवरी महिने में ता. 19 से 23 तक 5 दिनों में यह श्रीमज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक महा महोत्सव सम्पन्न हुआ, जो पं. सिंहचन्द्र शास्त्री मद्रास वाले के निर्देशन में हुआ। हाऊसिंग बोर्ड मिनिस्टर एम.एल.ए. पिच्चाण्डी आदि अतिथि गण भी मुनिवर के दर्शन एवं उपदेश से लाभान्वित और इस पंचकल्याणक में आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत के साथ ब्राह्मी बनने का सौभाग्य पद्ममालिनी जैन, वंधवासी को मिला और मोक्षमार्ग में बढ़ने की भावना से धवल वस्त्र धारण किये। मुनिश्री आर्जवसागरजी ने पंचकल्याणक के विषय पर मंगल प्रवचन दिये। गुरुवर के आशीर्वाद एवं सान्निध्य से यह पंचकल्याणक बड़ी भव्यता से सानन्द सम्पन्न हुआ। इसी अवसर पर ब्र.शिवादिनादन ने मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज से दस प्रतिमा के व्रत धारण किये।

वलुदलाम्कुण्डरम् यात्रा:-

मुनिश्री ससंघ नल्लवन पालयम् से विहार करके सोमासपाडी होते हुए वलदलाम्कुण्डरम् पहाड़ी पर गये। जहाँ पर चट्टान में उकेरी हुई प्राचीन प्रतिमाओं का दर्शन किया और गुफाओं एवं पत्थर में बनी शय्याओं का अवलोकन किया।

तपोनिलय में सारस्वत् सम्मिलन:-

मुनिश्री ससंघ गाँव-गाँव में विहार करते हुए तपोनिलय पधारे। तपोलिनय में 'आर्जवसागर मण्डप' में दिनांक 11 फरवरी 2000 से 13 फरवरी तक तीन दिवसीय सारस्वत् सम्मिलन हुआ। जिसमें विषय था ''आचार्य कुन्दकुन्द और उनका वाङ्मय''। इसमें उत्तर भारत से पधारे श्री डी. राकेश शास्त्री, सागर; पं. श्री शिवचरणलालजी, मैनपुरी; श्री ब्र. अशोक जी, श्री ब्र. अनिल जी, इन्दौर और तमिल देश के श्री पार्श्वनाथन् जैन चेय्यार, श्री पं. धन्यकुमार जैन, पोन्नूर; श्री धनदेवन, वेलूर; श्री भूपालन जैन, मद्रास आदि विद्वान लोग पधारे थे। सभी ने अपना आलेख प्रस्तुत किया। पूज्य मुनिश्री 108 आर्जवसागरजी ने भी प्रतिदिन दोनों सत्रों में कुन्दकुन्द

आचार्य के जीवन परिचय एवं साहित्य पर प्रवचन दिये और समीक्षा भी की। इस सम्मेलन से सब को अपूर्व ज्ञान मिला एवं स्वाध्याय में वृद्धि हुई। जिस भूमि पर आचार्य कुन्दकुन्द ने तपस्या की एवं 84 पाहुड़ ग्रन्थों की रचना की ऐसी धरा पर यह सम्मेलन पहली बार हुआ और सब को अनान्दित करने वाला रहा। इस विद्वत् सम्मेलन के लिए आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज ने डी. राकेश को यह कहते हुए आशीर्वाद दिया कि आचार्य कुन्दकुन्द के 2000 वें द्विसहस्राब्दी दीक्षा वर्ष के उपलक्ष में यह सम्मेलन सम्पन्न होना चाहिए।

तदुपरान्त ता. 16.04.2000 को महावीर जयन्ती एवं मुनिश्री का 12वाँ दीक्षा दिवस मनाया गया। फिर ता. 01.05.2000 से 07.05.2000 तक 7 दिन के लिए ग्रीष्मकालीन शिविर लगा। पश्चात् ता.04.05.2000 को अक्षयतृतीया पर्व मनाया गया। फिर मुनिश्री विहार करके किलविल्लिवनम् गये। वहाँ पर पाठशाला एवं प्रवचन के माध्यम से श्रावकों को धर्म का मार्ग बताया पश्चात् वहाँ से मुनिश्री का गमन वंधवासी की ओर हुआ। वंधवासी में कुछ दिन ठहर करके अपनी अमृतमय वाणी से लोगों को मिथ्यामार्ग से दूर हटने का उपदेश दिया। पश्चात् यहाँ एक और मन्दिर होना चाहिए ऐसा गुरुवर के कहे जाने पर संघस्थ मुनिश्री सुभद्रसागरजी के पूर्व अवस्था के पुत्र ने अपनी भूमि को मन्दिर बनाने के लिए दान रूप में समर्पित किया और जिनालय बनाने हेतु दृढ़ निश्चय करा कर एक सम्यग्दृष्टि लोगों की ट्रस्ट कमेटी बना दी गयी।

गुरुवर श्री 108 आर्जवसागर जी महाराज ने वंधवासी से ही ब्राह्मी श्राविका आश्रम की बहिनों को आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के दर्शनार्थ भेजा था। फिर मुनिश्री का विहार एरम्बूर होते हुए आयलवाड़ी की ओर हुआ। वहाँ पर ता. 12.07.2000 को मानस्तम्भ की बिम्ब प्रतिष्ठा का महोत्सव रूप कार्यक्रम सानन्द सम्पन्न हुआ।

तपो निलय में प्रवेश:-

श्री विशाखाचार्य तपोनिलय के ट्रस्टियों के विशेष निवेदन से मुनि श्री आर्जवसागरजी ने ससंघ आयलवाड़ी से विहार करके पोन्नूरमलै के तपोनिलय में वर्षायोग हेतु मंगल प्रवेश किया।

क्रमशः.......

भगवान महावीर आचरण संस्था समिति

रजि.नं.: 01/01/01/17654/07

कार्यालय : एम-8/4 गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल फोन : 0755-2673820

सम्पर्क सूत्र :

महामंत्री **डॉ. अजित जैन** 94256 01161

संयुक्त सचिव **अरविन्द जैन,** पथरिया दमोह

कोषाध्यक्ष **इंजी. महेन्द्र जैन**

उपाध्यक्ष **राजेश जैन 'रज्जन'** दमोह

अध्यक्ष **डॉ. सुधीर जैन** 9425011357

सदस्य -**पवन जैन, श्रीमती संगीता जैन**

संरक्षक : श्रीमती जैन शीलरानी नायक, पनागर, श्री सुनील कुमार जैन एवं श्री महावीर प्रसाद जैन-सतना, श्री राजेन्द्र जैन कल्लन, दमोह, **विशेष सदस्य : दमोह :** श्री मनोज जैन दालमिल, श्री महेश जैन दिगम्बर, श्री संजीव जैन शाकाहारी, श्री जैन तरुण सर्राफ, श्री जैन पदम लहरी **सदस्य : जयपुर :** श्री जैन शांतिलाल बागड़िया, **भोपाल :** श्री अविनाश जैन, श्री अरविंद जैन, श्री अनेकांत जैन।

–महात्मा गाँधी: फरवरी 2, 1921

गाँधी जी के 94 वर्ष पूर्व में व्यक्त विचार

हिन्दी की आवश्यकता असहयोग कार्यक्रम को स्वीकार करने जिन विद्यार्थियों ने सरकारी विद्यालयों का बहिष्कार किया है, उनको मैंने दो आदेश दिये हैं। एक तो साल भर चरखा कातने और सूत तैयार करने में सन्नद्ध रहना तथा दूसरे हिन्दी भाषा सीखने की चेष्टा करना। मुझे इस बात से अतिशय प्रसन्नता है कि कलकत्ता के छात्रों ने इस प्रश्न को उठा लिया है। बंगाल और मद्रास इन्हीं दो प्रान्तों में हिन्दी का अधिक प्रचार नहीं है और इसके न होने से समस्त भारतवर्ष से वे भिन्न प्रतीत होते हैं। इस कमी के दो कारण हैं। बंगाल दो किसी अन्य देशी भाषा का सीखना-पढ़ना अपने लिये अपमानजनक समझता है और मद्रासी लोग द्राविड़ जाति के होने से हिन्दी भाषा सहज में सीख नहीं सकते हैं। यदि प्रतिदिन तीन घण्टा समय लगया जाय तो प्रत्येक बंगाली दो मास में और मद्रासी 6 मास में हिन्दी भाषा मज़े में समझ सकता है। पर उतने ही समय में अँग्रेजी भाषा का उतना ज्ञान न तो कोई बंगाली ही प्राप्त कर सकता है और न कोई द्राविड़ मद्रासी ही प्राप्त कर सकता है। और यदि अँग्रेजी को सीख भी लिया जाय तो, उसका उपयोग कितने लोगों के साथ किया जायेगा। गिनेगिनाये ही भारतवासी मिलेंगे, पर यदि हिन्दुस्तानी(हिन्दी) का ज्ञान प्राप्त कर लिया जाय तो समस्त भारतवर्ष के साथ बातचीत करने और भावविनियोग की सुविधा हो जाये। इसलिये मुझे पूरी आशा है कि अग्रिम काँग्रेस में मद्रास और बंगाल के प्रतिनिधि हिन्दी भाषा समझने के लिये तैयार होकर आवेंगे। हमारी सबसे बड़ी प्रतिनिधि सभा (वर्तमान में संसद) अपना प्रभाव अच्छी तरह नहीं डाल सकती जब तक वह उसी भाषा का प्रयोग न करे जिसे अधिकांश जनसंख्या समझ सकती हो। मैं मद्रासियों की कठिनाई को भलीभाँति समझता हूँ और उसका पूरी तरह से अनुभव करता हूँ पर मेरी समझ में देश प्रेम के सामने कोई भी कठिनाई किसी काम की नहीं है। साथ ही मैंने इस बात की भी सलाह दी है कि इस वर्ष-अर्थात् जिस समय हम लोग बराबरी के लिये स्पर्धा कर रहे हैं, विदेशी जुएँ को उतारकर स्वराज्य की चेष्टा कर रहे हैं- अँग्रेजी की पढ़ाई एकदम बन्द रहे। यदि हम अगली काँग्रेस तक वास्तव में स्वराज्य लेना चाहते हैं, तो हमें इसकी संभावना पर विश्वास करना चाहिये, उसके लिये जहाँ तक हो सके चेष्टा करनी चाहिये और उस तरह के प्रत्येक काम से परहेज़ करना चाहिये। जिससे स्वराज्य के काम में किसी तरह की बाधा पहुँचे या उसकी गति रुक जाये। **इस तरह अँग्रेजी भाषा का ज्ञान प्राप्त करना हमारे मार्ग में किसी तरह से सहायक नहीं हो सकता बल्कि कुछ न कुछ बाधा ही उपस्थित कर सकता है।** जिस अँग्रेजी भाषा को हम लोग अपने विकास के लिये बाधा समझते हैं उसी के विषय में कुछ लोगों का मत है बिना इसके हममें स्वतन्त्रता का भाव ही नहीं उत्पन्न हो सकता। इसे एक तरह का पागलपन समझना चाहिए। यदि उनका अनुमान सही है और बिना अँग्रेजी भाषा के ज्ञान के हमें स्वराज्य नहीं मिल सकता तो हम दावे से कह सकते हैं कि स्वराज्य एक दूर का सपना है। अँग्रेजी भाषा अन्तर्राष्ट्रीय व्यवसाय, राजनैतिक चालबाजियाँ तथा पश्चिमी सदाचार, संस्कृति और सभ्यता का ज्ञान प्राप्त करने के लिये आवश्यक है पर इतने के लिये ही हमें उसे अनिवार्य बना देने की कोई आवश्यकता नहीं प्रतीत होती। हममें से कुछ एक लोग ही उसका ज्ञान प्राप्त

करके आवश्यकता को मिटा सकते हैं। वे ही लोग कामों को सम्पन्न करेंगे और विदेशी साहित्य, दर्शन तथा विज्ञान से उपयोगी बातें ढूँढ निकाल कर अपने देशवासियों के समक्ष रखेंगे और उन सबका उन्हें परिचय देंगे। अँग्रेजी भाषा का यही प्रयोग उचित कहलावेगा पर वर्तमान समय में **अँग्रेजी भाषा ने हमारे ह्रदयों पर जबर्दस्ती आसन जमा लिया है और प्यारी मातृभाषा को नीचे रख दिया है। इस असमानता और विषमता का प्रधान कारण यह है कि हमारा अँग्रेजी के साथ सम्बन्ध अप्राकृतिक तरीके से है। हम लोगों को इस तरह का यत्न करना है जिससे हमारा पूर्ण विकास बिना अँग्रेजी भाषा की सहायता से हो जाये। देश में इस बात का प्रचार करना कि अँग्रेजी भाषा के ज्ञान के बिना स्त्री-पुरुषों को किसी सभा समाज में मिलना-जुलना कठिन है मानव समाज के साथ हिंसा करना है। यह भाव इतना पतित है कि इसे बर्दाश्त नहीं करना चाहिये। स्वराज्य पाने का एक शर्त यह भी है कि हमें अँग्रेजी भाषा से छुटकारा पाने के लिये पागल हो जाना चाहिये।**

संकलन :- **निर्मलकुमार पाटोदी**, विद्यानिलय, 45, शान्ति निकेतन (बॉम्बे हॉस्पीटल के पीछे)
इन्दौर-452 010 मध्यप्रदेश मो. 07869917070 मेल:- nirman.patodi@gmail.com

श्री अर्हच्चक्र विधान सम्पन्न

परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागरजी के परम शिष्य धर्मप्रभावक, अध्यात्मयोगी गुरुवर श्री आर्जवसागरजी के सान्निध्य में अतिशय क्षेत्र हरदा, नगरी में पहली बार श्रीमज्जिनेन्द्र अर्हच्चक्र महामण्डल विधान महोत्सव 24 दिसम्बर 2014 से 2 जनवरी 2015 तक हुआ। यह कार्यक्रम प्रतिष्ठाचार्य ब्र. नितिन भैयाजी 'खुरई' एवं सहविधानाचार्य ब्र. राजेश भैयाजी 'टड़ा' के निर्देशन में सम्पन्न हुआ, जिसमें ता. 24 को प्रात: देव आज्ञा, गुरु आज्ञा, आचार्य निमंत्रण के पश्चात् घट यात्रा निकली। पश्चात् मुनिश्री का प्रवचन और ध्वाजारोहण, समवसरण पर श्री जी विराजमान पश्चात् सकलीकरण इन्द्र प्रतिष्ठा, मण्डप प्रतिष्ठा, जाप स्थापना आदि हुआ। शाम को महा आरती एवं विद्वानों द्वारा प्रवचन, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि हुये। ता.25 को प्रात: जाप प्रारंभ, अभिषेक शान्तिधारा, नित्य नियम पूजा पश्चात् विधान प्रारंभ हुआ इसके बीच मुनिश्री का मंगल प्रवचन प्रारंभ हुआ। शाम को महाआरती आदि कार्यक्रम हुये इसी तरह 7 दिन तक कार्यक्रम हुये। पश्चात् ता. 2 जनवरी को पूजन के तद्उपरान्त विश्वशान्ति महायज्ञ एवं श्रीजी की भव्य शोभा यात्रा निकली, मुनिश्री का मंगल प्रवचन हुआ। इस विधान में समवसरण रचना एवं नाटक मंचन हेतु चक्रेश जैन एण्ड पार्टी, सोजना (ललितपुर) वाले एवं संगीतकार सुनील जैन एण्ड पार्टी भोपाल वाले रहे। इस महामण्डल विधान में प्रमुख पात्रों में जैसे सौधर्म इन्द्र श्री निलेश-मनीषा अजमेरा, चक्रवर्ती इन्द्र श्री पवन-अनुलेखा सिंघई, कुबेर इन्द्र श्री रविन्द्र-उषा रपरिया, महायज्ञनायक श्री विरेन्द्र-मीना कटनेरा, ध्वजारोहणकर्त्ता श्री अशोक-उषा बड़जात्या वाले, ईशान इन्द्र श्री पूनमचंद-शशिप्रभा लहरी, सानत इन्द्र श्री सुशील-रानी रपरिया, माहेन्द्र इन्द्र श्री संजय-संध्या बजाज बने। मंडप उद्‌घाटन कर्त्ता श्री मुकेश-रेणु बकेबरिया बने। इसके अलावा आठ प्रमुख इन्द्र-इन्द्राणियाँ एवं और भी इन्द्र समूह के साथ यह अर्हच्चक्र महामण्डल विधान एक ऐतिहासिक रूप में हर्षोलास के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

आँखों देखा सच

–**भानु कुमार जैन** (पत्रकार), इन्दौर

आचार्य शांतिसागरजी महाराज की परम्परा के समता शिरोमणी आचार्य श्री सीमंधरसागरजी एक जैन समाज के अद्‌भुत सन्त थे। वे भव आशा से बहुत दूर अपने खुद के कल्याण के लिए तप और साधना करते थे। समाज के कोई आयोजन में, अपने प्रचार-प्रसार व आडम्बर से दूर रहते थे। उन्होंने सादगी से साधु जीवन जिया। कर्नाटक के आ. सीमंधरसागरजी महाराज ने इन्दौर में 10 वर्षों तक शहर के कई स्थानों पर चातुर्मास किये और जब वे कहीं पर भी प्रवचन देते थे तो शास्त्र सामने होता था; उसको देखकर पढ़कर सारगर्भित, ज्ञानवर्धक प्रवचन देते थे, दिगम्बर जैन समाज की तेरहपंथी आम्नाय के कट्टर परम्परा के समर्थक साधक थे। आप 12 वर्षों की समाधि सल्लेखना की साधना में रत थे। मैं जब-जब भी उनसे मिला तो ज्ञान की चर्चायें हुईं। मैं उनसे मोदी जी की नसियाँ, तिलकनगर, नन्दानगर, छावनी में भी आशीर्वाद लेने जाया करता था। वे समय रहते क्षेम कुशल पूछकर ह्रदय से आशीर्वाद देते थे और कहते थे कल्याण हो। जब उनसे चर्चा होती थी तो मैं उनसे पूछता था आचार्यश्री आपका जन्मस्थान कहाँ का है? तो वे बताते नहीं थे काफी दिनों बाद पता चला कि वे कर्नाटक के थे। छावनी में जब उन्होंने चातुर्मास किया तो फिर मैंने मन लेने उन से पूछा कि आचार्यश्री आपके गृहस्थ जीवन में कौन-कौन हैं माता-पिता, भाई-बहिन? तो उन्होंने कहा कि जब मैंने गृहस्थ जीवन ही त्यागा तो मेरा उसके बाद गृहस्थ परिवार से कोई नाता ही नहीं रहा। मेरी आत्मा के अलावा मेरा कोई भी नहीं। जब, शरीर भी अपना नहीं है तो अपना कौन हो सकता है। छावनी के ही समाज सेवी जम्बु कुमार अजमेरा ने बताया कि एक बार आचार्यश्री के पूर्व अवस्था के भतीजे छावनी में दर्शन करने आये तो उनको यह नहीं पता चला कि ये हमारे गृहस्थ जीवन के काका हैं और न ही आचार्यश्री को; जब अजमेरा जी ने आचार्य श्री से ये पूछा कि आपके ये कौन-से रिश्तेदार हैं, तो उन्होंने कहा कि मुझे नहीं मालूम। जब भतीजे से ज्यादा पूछ-ताछ से पता चला कि जिनके दर्शन हेतु मैं छावनी गया था वे मेरे गृहस्थ जीवन के काका हैं तो वह आश्चर्य में पड़ गया। आचार्यश्री सीमंधरसागरजी महाराज तो पारिवारिक मोह-माया से दूर थे। कभी उन्होंने न तो रिश्तेदारों को याद किया ना ही घर वालों ने उनकी साधना में व्यवधान पैदा करने की कोशिश की। अभी कुछ दिन पूर्व जब मैं प.पू. आचार्यश्री सीमंधरसागरजी महाराज से मिलने गया तो आचार्यश्री सीमंधरसागरजी ने कहा कि 'समाधि हो अन्य देश में जहाँ न अपने कोय' वहाँ पर भी ज्ञान की चर्चा हुई। वहीं पर तिलक नगर वाले भी मौजूद थे और उन्होंने कुछ और भी साधना की बातें बताई तो मुझे ऐसा लगा कि ये हमारे समाज के छुपे हुये रत्न थे। तिलक नगर वाले बोले कि महाराज जी कितनी सटीक बातें बोलते हैं। फिर मैंने मुनिवर आर्जवसागरजी महाराज को बताया कि ऐसे ज्ञानी समता शिरोमणी संत से आपको अवश्य मिलना चाहिए तो महाराज ने कहा कि वो मुझे जानते हैं और मैंने समय-समय पर भाव विज्ञान पत्रिका पहुँचाई और मेरे द्वारा प्रदान की गई कृतियाँ जैनागम संस्कार, तीर्थोदय काव्य आदि पुस्तकें भी जो आचार्यश्री को नमोस्तु पूर्वक पहुँचायी थीं उन्हें वे पढ़ते रहते हैं। एक बार ही नहीं

ऐसा लाभ मुझे कई बार मिला।

मैं नमोस्तु करने मेरी माताजी के साथ एम.एस.जे. फार्म हाऊस में आ. सीमंधरसागरजी महाराज को आहार देने गया था। तब उसके बाद मुनि श्री आर्जवसागरजी के बारे में कहा कि उन्होंने आपके स्वास्थ के बारे में पूछा है और नमोस्तु बोला है तो उन्होंने कहा कि उनका साहित्य तो मिलता रहता है आने का भी बोलते हैं लेकिन आते तो हैं नहीं, जल्दी आने को बोलना। फिर मैंने सिद्ध क्षेत्र सिद्धवरकूट के पास में हरदा से विहार कर खण्डवा की ओर जा रहे मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज को आचार्य श्री जो चर्चा हुई वह बात बतलाई तो उन्होंने कहा कि आचार्यश्री ने अगर याद किया है तो अपन शीघ्र इन्दौर ही क्यों नहीं चलते हैं ? और उन्होंने खण्डवा की बजाय बीच मार्ग से इन्दौर की ओर विहार किया। वहाँ पर आ. प्रसन्न ऋषि जी महाराज मुनिवर आर्जवसागरजी महाराज को लेने के लिए एम.एस.जे. फार्म हाऊस मन्दिर के गेट पर आये। उनकी संघस्थ आर्यिका आदि फार्म हाऊस पहुँचने के थोड़े दूर पहले ही लेने आयीं। फिर आ. सीमंधरसागरजी महाराज की आहार चर्या के उपरान्त कुशल क्षेम और समाधि तपस्या के बारे में चर्चा हुई तो आ. सीमंधरसागरजी महाराज ने मुनिवर आर्जवसागरजी से कहा कि अब तो मुझे जीने और मरने की कोई आशा नहीं; मैं तो रत्नत्रय की सम्हाल में लगा हूँ। उसके बाद मुनिश्री आहार चर्या पर चले गये। उसके बाद संघस्थ लोगों ने भी आहार किया। पश्चात् आचार्य श्री सीमंधरसागरजी की वैयावृत्ति की फिर दोपहर की सामायिक के उपरान्त आचार्यश्री ने मुनिवर आर्जवसागरजी से कहा कि आपको मैं अपना उत्तर-दायित्व सौंप रहा हूँ तो आर्जवसागरजी महाराज ने कहा कि यह पद बहुत बड़ा है मैं आप से बहुत छोटा हूँ। आप कैसे मुझे लायक समझते हैं ? फिर आ. सीमंधरसागरजी ने कहा कि नहीं; तुम तो बहुत काल से दीक्षित हो सभी योग्यताएँ तुम्हारे पास हैं तुमने बहुत प्रदेशों में विहार कर बहुत भाषाएँ भी सीखीं और अनेक लोगों को मोक्षमार्ग पर लाया और चर्या में चा.च.आ. शान्तिसागरजी की परम्परा को बहुत अच्छे से निभाया है। अतः उसी परम्परा को आगे बढ़ाओ यह मेरा आदेश है। तो मुनिवर आर्जवसागरजी ने कहा कि जो आप आदेश देंगे वह मैं पूरा करूँगा और अपनी परम्परा के चा.च.आ. शान्तिसागरजी महाराज की परम्परा को आगे बढ़ाऊँगा। उसे नष्ट नहीं होने दूँगा तो आचार्यश्री ने कहा कि 25 जनवरी को प्रातः कार्यक्रम रखलो ! ठीक है। कौन कोई जिम्मेदार है? मैं, भानु कुमार जैन, वहाँ पर बैठा था तो आचार्यश्री ने मेरी तरफ इशारा कर कहा कि तुम्हें यह कार्य अच्छे ढंग से करवाना है तो मैं दूसरे दिन जब गया तो बारिश काफी हो गई थी ठंड का वातावरण था पर आचार्यश्री ने कहा कि मन्दिर में चलकर वहाँ कार्यक्रम कर लेते हैं किन्तु काफी ठंड होने की वजह से मन्दिर में तो नहीं किया और आचार्यश्री ने कहा कि यहाँ पर ही अच्छी जगह है यहीं आचार्य पद की विधि पढ़ लेते हैं तो वहाँ ही आ. प्रसन्न ऋषि महाराज को भी मुनिवर आर्जवसागरजी महाराज के साथ बिठा दिया। वहीं आर्यिकाओं और श्रावक श्राविकाओं के सामने पूरे विधि-विधान से धर्म प्रभावक, अध्यात्म योगी बहुभाषाओं का ज्ञान रखने वाले और अपने मुनि जीवन के समय से अभी तक तेरह प्रदेशों की यात्रा करने वाले मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज को अपने ही करकमलों से अपना उत्तराधिकारी बनाकर आचार्य पदारोहण का कार्यक्रम सम्पन्न कराने के साथ पिच्छी परिवर्तन का भी कार्यक्रम कराया। मैंने (भानुकुमार जैन ने) आ. सीमंधरसागरजी महाराज के समक्ष आ. कुशाग्रनंन्दी महाराजजी के द्वारा

दीक्षित आ. प्रसन्नऋषि महाराज और आचार्य पद से सुशोभित आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज के चरणों पर केसर लगाई और आ. प्रसन्नऋषिजी महाराज आदि के सामने यह आचार्य पदारोहण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। अल्प काल में हुई यह आश्चर्य जनक घटना सर्वथा सत्य है, फिर आ. सीमंधरसागरजी महाराज ने आचार्य बने आर्जवसागरजी महाराज के सिर पर हाथ रखकर और पिच्छी से छः बार आशीर्वाद देते हुये कहा कि आप चा.च.आ. शान्तिसागरजी महाराज की परम्परा को आगे बढ़ायेंगे यही भावना भाते हैं। आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज ने कहा कि आपका आशीर्वाद बना रहे आपकी और अपने गुरु की परम्परा एक ही है। इस आगमिक परम्परा को आगे बढ़ायेंगे उसमें कोई कसर या कमी नहीं रहने देंगे।

इस प्रकार गुरुदेव आ. आर्जवसागरजी बने। उनके आचार्य पद के समाचार मिलते ही सारे इन्दौर क्या पूरे भारत वासियों को जो वर्षायोग, षोडसकारण या वाचना काल, व विहार काल के प्रवासों से जुड़े हुए थे सभी को अति संतोष हुआ। लोगों ने खुशियाँ मनायीं कि हमारे गुरुवर अब आचार्य बन गये हैं हम जल्दी से जल्दी उनके दर्शनार्थ जावेंगे ऐसे हमारे पास बहुत लोगों के समाचार आये व जानकारी लेने वालों के फोन भी आये और जो-जो लोग मिले तो यही कह रहे थे कि महान गुरु को अपने पद के योग्य; सुयोग्य परम्परा और चर्या वाले मुनिराज मिले और सभी ने उत्तम प्रभावना हेतु प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप में आचार्यश्री आर्जवसागरजी के लिए अपनी शुभकामनाएँ दीं।

-**भानुकुमार जैन,** एच.आई.जी. कॉलोनी, इन्दौर मो. 9827346118

भारत में बदला इंसान

डॉ. अजित जैन, भोपाल

कहते भारत यह महान है, धर्म की ये शान है।
कहाँ गया वह ज्ञान है, बदल गया इंसान है॥
हिंसाएं नित बढ़ रहीं, सीमाएं बिखर रहीं।
पशुओं की चीख से, अशांति अखर रहीं॥
अहिंसा का न ध्यान है, भूल गए भगवान हैं।
भारत यह महान है, धर्म की ये शान है॥

बूचड़खाने खुल रहे, धर्म को हैं छल रहे।
धरती लाल हो रही, रक्त होली खिल रही॥
सौंदर्य के काज ये, संस्कृति बिखर रही।
गुरु शरण भूलकर, गुरुवचन न ध्यान है॥
धर्म होता दयामय, नित करें तप दान है।
अगर भूलेंगे सभी तो, नहीं नाम निशान है॥
भारत यह महान है, धर्म की ये शान है॥

घोर तपस्वी साधक और प्रकांड विद्वान जैन मुनिश्री क्षमासागर महाराज की समाधि, हजारों ने दी श्रद्धांजलि

घोर तपस्वी संत, दार्शनिक और दिगंबर जैन परंपरा के साधक मुनिश्री 108 क्षमासागरजी ने सागर, मध्यप्रदेश में समाधि ग्रहण कर ली, समाधिमरण के बाद निकली पद्मासन पालकी शोभायात्रा में हजारों लोग शामिल हुए। हजारों की संख्या में मौजूद लोग मुनिश्री के अंतिम विहार के साक्षी बने वे पिछले कुछ वर्षों से काफी बीमार चल रहे थे और पूरी तरह से अशक्त हो चुके थे लेकिन गंभीर स्वास्थ्य में भी उन्होंने कठोर मुनि चर्या का पालन जारी रखा प्रकांड विद्वान रहे मुनिश्री प्रेरक संत आचार्य विद्यासागर के संघ से जुड़े थे, एम टेक की शिक्षा प्राप्त मुनिश्री शिक्षा ग्रहण करने के समय से ही अध्यात्म की तरफ बढ़ चुके थे। शिक्षा पूरी होने के उपरांत उन्होंने नौकरी या व्यवसाय करने की बजाय आचार्य विद्यासागर से प्रेरित हो मुनि दीक्षा ले ली। आचार्यश्री की ज्ञान साधना और तप उनके लिए सदैव प्रेरक रहे और वे अंत समय तक उसका अनुसरण करते रहे। मुनिश्री 108 क्षमा सागर जी महाराज द्वारा आचार्यश्री जी को समर्पित कविता की कुछ पंक्तियां:-

मुक्ति, जो ज्योति-सा, मेरे हृदय में, रोशनी भरता रहा, वह देवता।
जो साँस बन, इस देह में आता रहा, वह देवता।
जिसका मिलन, इस आत्मा में, विराग का, कोई अनोखा गीत बनकर गूँजता,
प्रतिक्षण रहा, वह देवता।
मैं बँधा जिससे, मुझे जो मुक्ति का, सन्देश नव देता रहा, वह देवता।
जो समय की, तूलिका से, मेरे समय पर, निज समय लिखता रहा, वह देवता।
जो मूर्ति मैं, कोई रूप धरता, पर अरूपी ही रहा, वह देवता।
जो दूर रहकर भी, सदा से साथ मेरे है, यही अहसास देता रहा, वह देवता।
मैं जागता हूँ या नहीं, यह देखने, द्वार पर मेरे, दस्तक सदा देता रहा, वह देवता।
जो गति, मेरे नियति था, ठीक मुझ-सा ही, मुझे करता रहा, वह देवता।

मुनिश्री ने आचार्यश्री पर आधारित संस्मरण आत्मनवेषी पुस्तक एवं अमृत शिल्पी भी लिखी। आचार्यश्री का उन पर विशेष आशीर्वाद था। युवापीढ़ी को विशेष तौर पर उन्होंने अपने ओजपूर्ण और प्रेरक जीवन से बहुत प्रभावित किया और जैन समाज की नई पीढ़ी को उन्होंने अपने तार्किक प्रवचनों और प्रभावी शैली से उन्हें अध्यात्म और सद विचारों के लिये प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उन्होंने कठिन तपस्या से अपनी आत्मा का कल्याण किया है। लेकिन उनके चले जाने से जैन धर्म व जैन समाज की अपूरणीय क्षति हुई है। जैन समाज के श्रद्धालु और जैन साधु संतों के साथ विभिन्न धर्म गुरुओं ने उनके कल्याण को अपूरणीय बताया है, बताया है उनकी कवितायें जैन दर्शन और अध्यात्म् को सर्वथा सरल

तरीके से श्रद्धालुओं तक पहुँचती है और उन्हें आत्म चिंतन की ओर ले जाती है। सागर स्थित वर्णी भवन मोराजी में आचार्यश्री 108 विद्यासागर महाराज के परम शिष्य मुनिश्री 108 क्षमा सागरजी महाराज ने विधि के तहत समाधि ली। सदा त्याग, तप और अनुशासन प्रिय साधक का अंतिम संबोधन मुनिश्री भव्यसागरजी महाराज द्वारा दिया गया।

मुनिश्री क्षमा सागर का जन्म 20 सितंबर 1957 जन्म सागर के बड़ाबाजार क्षेत्र में हुआ था। संयोग यह भी है समाधिमरण भी उन्होंने बड़ाबजार क्षेत्र में ही लिया। उन्होंने सागर विश्वविद्यालय से ही उच्च शिक्षा प्राप्त की थी। मुनिश्री ने 23 साल की उम्र में मोक्ष मार्ग पर चलने के लिए आचार्य विद्यासागर महाराज जी से दीक्षा प्राप्त की थी। आचार्य विद्यासागर महाराज के संघ में उच्च शिक्षित, प्रखर वक्ता, ओजस्वी वाणी तथा सरल सौम्य व्यवहार के कारण देश भर में उनके लाखों भक्त बने। उन्होंने पगडंडी सूरज तक, मुनि क्षमासागर की कविताएं जैसे काव्य संग्रह लिखेः-

जीवन के सत्य को अंकित करने वाले मुनिश्री क्षमासागर जी द्वारा रचित एक लघु कविता-

गंतव्य यात्रा पर निकला हूँ, बार-बार लोग पूछते हैं,
कितना चलोगे...??
कहाँ तक जाना है...??
मैं मुस्कराकर आगे बढ़ जाता हूँ।
किससे कहूँ कि कहीं तो नहीं जाना,
मुझे इस बार अपने तक आना है।

वी एन आई न्यूज एजेंसी, डोंगरगढ़

मंगलकामना

परम पूज्य आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराजजी के 28वें मुनि दीक्षा के अवसर पर

(पावन अवसर 02 अप्रैल 2015: महावीर जयंती)

आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज का 28वां मुनि दिक्षा दिवस महावीर जयंती के अवसर पर भक्तगण बड़े उत्साह एवं हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। मुनिश्री की दीक्षा सन् 1988 में श्री सोनागिरीजी सिद्धक्षेत्र में संतशिरोमणि महाचार्य 108 श्री विद्यासागरजी महाराज के द्वारा दी गई थी।

चारित्र चक्रवर्ती आचार्यश्री शांतिसागरजी महाराज की परंपरा को आगे बढ़ाने का दायित्व निभाने हेतु सल्लेखनारत आचार्यश्री सीमंधरसागरजी महाराज के द्वारा मुनिश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज को 25 जनवरी सन् 2015 को सौंपा गया।

आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराजजी के 28वें मुनि दीक्षा के अवसर पर हम सभी उनकी दीर्घायु की कामना करते हैं एवं आचार्यश्री सीमंधरसागरजी महाराज के द्वारा सौंपे गए दायित्व को सफलतापूर्वक निर्वहन करने की मंगल कामना करते हैं।

आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराजजी जयवंत हों।

-भगवान महावीर आचरण संस्था समिति, भोपाल

इन्दौर नगरी

-आचार्यश्री आर्जवसागरजी

हरे-भरे उपवन सह उत्तम, सुन्दर कला की खान है।
अर्धशतक से अधिक जिनालय, पुण्य कोष पहिचान है॥
देवगणों के विमान रोकें, शिखर बड़े शुभमान हैं।
इन्दौर नगरी पूर्ण देश में, एक अलग पहिचान है॥ 1॥

सिद्धक्षेत्र, अतिशय क्षेत्रों से, परिसर बड़ा महान है।
साल-सम्हाल करें भविजन सब, उदारता की खान हैं॥
अधिक शक्ति से त्याग करें जन, निश-दिन देते दान हैं।
इन्दौर नगरी पूर्ण देश में, एक अलग पहिचान है॥ 2॥

अनुपम इन्द्रों सम भवनों से, बड़ा ही स्वाभिमान है।
पुरातत्त्व वैभव, प्रतिमाएँ, देती निज का ज्ञान हैं॥
पुण्य बढ़ाकर सद्गति देवें, वीतराग भगवान हैं।
इन्दौर नगरी पूर्ण देश में, एक अलग पहिचान है॥ 3॥

आश्रम, गुरुकुल आत्म साधना, होती कर्म ही हान है।
चले अनवरत विधान पूजा, तथाहि नित व्याख्यान हैं॥
धर्म ध्यान व चरित बढ़े नित, आत्मोन्नति का थान है।
इन्दौर नगरी पूर्ण देश में, एक अलग पहिचान है॥ 4॥

बड़े-बड़े हैं शिक्षण स्थल, रोजगार दें ज्ञान है।
औद्योगिक नगरी में जन-जन, बसें समझते शान हैं॥
धर्म प्रभावना सह रहते जन, छोड़ सभी अभिमान हैं।
इन्दौर नगरी पूर्ण देश में, एक अलग पहिचान है॥ 5॥

निकट सिद्धवर-कूट ऊन है, बावन-गजा प्रधान हैं।
साथ बनेड़िया, मक्सी उत्तम, हैं प्राचीन महान है॥
गोम्मटगिरि आदिक की रक्षा, जन करते श्रमदान हैं।
इन्दौर नगरी पूर्ण देश में, एक अलग पहिचान है॥ 6॥

सिद्धोदय है सिद्धक्षेत्र अरु, तपो स्थली महान है।
मानतुंग की स्तुति भू-लख, उनको सदा प्रणाम है॥
वर्षाते सुर रत्न पुष्प हों, अतिशय बड़ा महान है।
इन्दौर नगरी पूर्ण देश में, एक अलग पहिचान है॥ 7॥

पर्यूषण हैं पर्व मनाते, वीर जयन्ती ध्यान है।
देव-शस्त्र-गुरु पूजन करते, सुनते फिर व्याख्यान हैं॥
धार्मिक चर्चा भजन गीत बिन, नहीं करें विश्राम हैं।
इन्दौर नगरी पूर्ण देश में, एक अलग पहिचान है॥ 8॥

क्षमावाणी हैं पर्व मनाते, वत्सलत्व पहिचान है।
यात्रा करते धर्मक्षेत्र की, मिलनसार का ध्यान है॥
सुख-दुःख बांटें समता रखते, निस्वार्थी विद्वान हैं।
इन्दौर नगरी पूर्ण देश में, एक अलग पहिचान है॥ 9॥

नवीन आयतन निर्मित होते, होते पंच कल्याण हैं।
साधु संघ की सेवा करते, भेद नहीं रख, ज्ञान है॥
भव से छूटें 'आर्जवता' से, पावें सब निर्वाण हैं।
इन्दौर नगरी पूर्ण देश में, एक अलग पहिचान है॥ 10॥

रचना-18-2-2015, स्थान- हाटपीपल्या (देवास)

कोटिशः अभिनन्दन

जिन्हें लौकिकता और ममता,
प्रभावित नहीं कर पाती है,
जिन्हें स्वभाव से सहजता ,सरलता,
निर्मलता सदा भाती है,
जिनकी पावन दृष्टि में सदा
अमीर और गरीब सब हैं एक
जिनकी भक्ति व ध्यान में सदा है वीतरागता
सरागता का न लेश
जिनकी वाणी में शास्त्र की गहराई से
मिलती है मधुरता की मिठास
ऐसे हैं गुरुवर श्री विद्यासागर जी
जिनके दर्शन से होता है कर्मों का नाश
आचार्य पदारोहण पर जिन्हें
शत शत बार है वंदन

साभार- आर्जव कविताएँ

जैन तीर्थ सिद्धक्षेत्र सिद्धवरकूट का त्रिदिवसीय वार्षिक मेले का समापन समारोह प.पू. आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी के सान्निध्य में सम्पन्न

श्री सिद्धक्षेत्र सिद्धवरकूट का त्रिदिवसीय वार्षिक मेले का समापन समारोह आचार्य 108 आर्जवसागरजी महाराज के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। मेले में इन्दौर से 10 बसों एवं आसपास के शहरों से सैकड़ों की संख्या में श्रावकगण आये थे। 6 मार्च को प्रातःकाल आचार्यश्री आर्जवसागरजी ने श्रीमान् मोतीलाल जैन, दिल्ली द्वारा चल रहे 8 दिवसीय सिद्धचक्र मंडल विधान के समापन पर प्रवचन दिया। पश्चात् मेले के समवसरण महामण्डल विधान के समापन पर वहाँ पर भी प्रवचन के द्वारा धर्म प्रभावना की। पश्चात् दोपहर 2 बजे से विमानोत्सव में श्रीजी को स्वर्ण के विमान में विराजमान कर आचार्यश्री आर्जवसागरजी के साथ बैंड बाजों एवं भजनों के साथ चँवर से नृत्य करते हुए नगर भ्रमण कराकर सभागार में आ. आर्जवसागर जी के प्रवचन हुए। पुनः वापसी पर भगवान बाहुबली स्वामी की प्रतिमा पर स्वर्ण रजत कलशों द्वारा अभिषेक वीतराग भगवान के गुणानुवाद पूर्वक साधु संघ द्वारा मंत्रोच्चारण से करवाया गया। इस अवसर पर आचार्यश्री आर्जवसागरजी को श्रीफल भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया था क्षेत्र के अध्यक्ष प्रदीपकुमार सिंह कासलीवाल, नंदलाल टोंग्या, भानुकुमार जैन, बाबूलाल जैन बस सर्विस, विजय काला, संतोष मामा, आशीष चौधरी, कैलाश जैन, अरुण पहाड़िया, कैलाश मोटा घर, प्रदीप महल वाला, ज्ञानचंद जी, रतनलालजी कासलीवाल, भोखाखेड़ी, एन.एच.डी.सी. के महाप्रबंधक श्री जैन साहब आदि।

वीड़ नगर की ओर विहारः-

सिद्धक्षेत्र पर कुछ दिन ठहरकर पश्चात् वीड़ नगर की जैन समाज के निवेदन पर सिद्धवरकूट से विहार करके सनावद, देवला आदि से होते हुए ता. 20.3.15 को वीड़ नगर में बैंडबाजों एवं जय-जयकारों के साथ मंगल प्रवेश हुआ। दस वर्ष के पश्चात् इस नगर में मुनि संघ का आगमन हुआ था इसलिए लोगों में बहुत भक्ति थी, और पूरे कमेटी के लोग एवं समाज लोगों ने महावीर जयन्ती पर्व एवं आचार्यश्री आर्जवसागरजी का 28वाँ मुनि दीक्षा जयन्ती दिवस यहीं पर मनाया जावे ऐसा नम्र निवेदन किया।

अपरिहार्य कारणों से भाव विज्ञान पत्रिका का मार्च 2015 अंक प्रकाशित होने में हुये विलम्ब के लिये खेद है। भाव विज्ञान पत्रिका के प्रकाशन में हुये विलम्ब के लिये हम क्षमा प्रार्थी हैं।

प्रबंध संपादक

महावीर जयन्ती एवं 28 वाँ मुनि दीक्षा समारोह सम्पन्न

परम पूज्य सन्त शिरोमणी आचार्यश्री विद्यासागरजी के परम शिष्य अध्यात्म योगी, धर्मप्रभावक आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज के पावन सान्निध्य में खण्डवा जिले के वीड़ नगर में प्रथम बार ता. 2 अप्रैल 2015 गुरुवार को नूतन हाईस्कूल ग्राउण्ड पर महावीर जयन्ती महोत्सव एवं आचार्यश्री आर्जवसागरजी का 28 वाँ मुनिदीक्षा दिवस समारोह आचार्य पद के गौरव रूप महोत्सव के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

जिसमें प्रात: 6.00 बजे से नित्य जिनाभिषेक, पूजन के पश्चात् श्रीजी की विमानोत्सव शोभायात्रा बैंण्ड-बाजे के साथ अपार जन समूह की जय-जयकार की ध्वनि के साथ हर्षोल्लास पूर्वक हुई। तत्पश्चात् स्कूल के प्रांगण में त्रिशला देवी महिला मण्डल, वीड़ द्वारा मंगलाचरण किया गया। तदुपरान्त सन्त शिरोमणी आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज का चित्र अनावरण श्री शैलेन्द्र चाँदू लाल जैन ने किया और दीप प्रज्ज्वलन श्री मुकेश नेमिचन्द्र कुमार ने किया। पश्चात् धार्मिक पाठशाला के बच्चों द्वारा मंगलाचरण हुआ। पश्चात् आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज का पाद प्रक्षालन करने का सौभाग्य श्री चक्रेश जैन, श्री आदित्य कुमार जैन परिवार रामगंजमंडी कोटा वालों को मिला। आचार्यश्री के लिए शास्त्र दान देने का सौभाग्य श्री हर्षद जैन मेहता, श्री अश्विन जैन धर्मपत्नी श्री वैशाली जैन परिवार एवं श्री गुणवन्ती जैन सूरत को प्राप्त हुआ। पश्चात् चन्दनबाला कन्या मण्डल द्वारा धार्मिक प्रस्तुति दी गई। तदुपरान्त नव निर्माणाधीन जिनालय के दान हेतु संचालन श्री चक्रेश जैन कोटा वालों ने किया जिसमें दो प्रतिमा प्रदाता, वेदी निर्माण दाता, पिलर, बीम दान दाता आदि सब मिला कर 20 लाख रु. की दान राशि वीड़ नव जिनालय हेतु प्राप्त हुई। पश्चात् आचार्य श्री आर्जवसागरजी महाराज की पूजन बड़े गौरव के साथ भक्ति पूर्वक की गई। तदुपरान्त 28 दीपों से आरती करने का सौभाग्य श्री सुनील कुमार, नेमीचन्द्र जैन, वीड़ को प्राप्त हुआ। इस कार्यक्रम का मंच संचालन श्री भानु कुमार जैन इन्दौर ने किया। उन्होंने आचार्य श्री आर्जवसागरजी महाराज का जीवन परिचय देते हुये बताया है कि-

पूर्वनाम	-	पारस चन्द जैन,
पिताजी	-	श्री शिखर चन्द जैन
माताजी	-	श्रीमति माया बाई जैन
जन्म तिथि	-	11.09.1967 (भाद्र शुक्ल अष्टमी)
जन्म स्थल	-	फुटेरा कलाँ, दमोह (म.प्र.)
बचपन बीता	-	पथरिया जि. दमोह
शिक्षा	-	बी.ए. (प्रथम वर्ष) डिग्री कॉलेज (दमोह)
ब्रह्मचर्य व्रत	-	19.12.1984 अतिशय क्षेत्र पनागर (म.प्र.)
सातवीं प्रतिमा	-	1984 सिद्ध क्षेत्र अहारजी
क्षुल्लक दीक्षा	-	08.11.1985 सिद्ध क्षेत्र अहार जी
एलक दीक्षा	-	10.07.1987 अतिशय क्षेत्र थूबोन जी

मुनि दीक्षा - 31.03.1988 महावीर जयन्ती, सिद्ध क्षेत्र सोनागिर जी
दीक्षा गुरु - आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
आचार्य पद - 25.01.2015 (माघ शुक्ल षष्ठी) (समाधि पूर्व आचार्य श्री सीमंधरसागर जी द्वारा)
कृतियाँ - धर्मभावना शतक, जैनागम संस्कार, तीर्थोदय काव्य, परमार्थ साधना, बचपन का संस्कार, सम्यक् ध्यान शतक, जैन धर्म में कर्म व्यवस्था, नेक जीवन, पर्यूषण पीयूष, साम्य भावना, आर्जव वाणी, आर्जव कविताएँ।
पद्यानुवाद - गोम्मेटेश थुदि, वारसाणुवेक्खा, इष्टोपदेश, समाधि तंत्र

तत्पश्चात् बाहर से पधारे अतिथियों का जैसे कि श्री चक्रेश जैन, श्री आदित्य जैन परिवार और श्री संजय जैन मित्तल सपरिवार आदि रामगंजमंडी कोटा, दिल्ली से पधारे श्री लोकेश जैन, श्री योगेश जैन आदि, भोपाल से पधारे श्री डॉ. अजित जैन, सागर से पधारे श्री संजय जैन सपरिवार आदि, सूरत से पधारे श्री हर्षद भाई मेहता, श्रीमति वैशाली जैन अश्विन भाई सपरिवार, श्रीमति गुणवन्ती जैन और इन्दौर से पधारे श्री भानु कुमार जैन सपत्नीक, दमोह से पधारे श्री भरत जैन सपत्नीक, हरदा से पधारे श्री नीलेश सिंघई परिवार, बड़ौदा से पधारे श्री विवेक कुमार जैन, खातेगाँव से पधारे श्री संतोषजी पांडया, बड़वाह से संदीप कुमार जैन और ग्वालियर तथा आस-पास गाँव के पुनासा, खिड़किया, छनेरा, खण्डवा, आदि से पधारे अतिथियों का भी वीड़ कमेटी द्वारा सम्मान किया गया।

इस कार्यक्रम अन्त में आचार्य श्री आर्जवसागरजी के द्वारा अपने प्रवचन में भगवान महावीर के जीवन दर्शन पर मंगल उद्‌बोधन देते हुए यह पावन संदेश दिया गया है कि आवश्यकता आविष्कार की जननी है। जब-जब इस धरती पर त्राहि-त्राहि का वातवरण निर्मित हुआ तब-तब निश्चित रूप से महान आत्माओं ने अवतार अवश्य लिया। ऐसे ही एक समय वह था इस भारत की पावन धारा पर अश्वों, बकरों और यहाँ तक नरों तक की हिंसा से यज्ञ करते हुए हिंसा का ताण्डव नृत्य चल रहा था। तब जनता के मुख से निकला कि वर्तमान में वर्धमान की आवश्यकता है। ऐसे ही विकट वातावरण में भगवान महावीर ने जनता के आत्म-कल्याण करने के लिए ''जिओ और जीने दो'' का संदेश के साथ अहिंसामय जगत बनाने के लिए इस भूमि पर स्वर्ग से आकर अवतार लिया। वैसे तो भारत के हरेक धर्म में अहिंसा का संदेश गाया गया है। बस उसे अपने जीवन में अमल में लाने की आवश्यकता है। आज भी महापुरुषों के धर्म सूत्र याद करें तो राम महावीर के राज्य पाने में देर नहीं। अहिंसा और त्याग में वह शक्ति है जो दानव से मानव क्या भक्त से भगवान ही बना देता है।

तत् पश्चात् श्रीजी का जिनाभिषेक हुआ और सामूहिक शुद्ध भोज का कार्यक्रम रखा गया। इसप्रकार इस कार्यक्रम का आयोजन श्री दि. जैन मन्दिर निर्माण समिति एवं श्री आर्जव युवा मंच के आयोजकत्व में हर्षोलास के साथ सानन्द सम्पन्न हुआ।

-कैलाश चन्द जैन, वीड़

संयम के सजग प्रहरी आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज

गृहस्थ जीवन से संयम जीवन में आये आपको 28 वर्ष पूर्ण हो चुके हैं एवं 29 वाँ वर्ष प्रारम्भ हो रहा है। गुरुता का त्याग कर लघुता का आत्मसात कर, गुरुता और लघुता दोनों से परे अगुरुलघु बनने की आत्म साधना में संलग्न गुरु भगवान आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज के चरण कमल में वन्दन, नमन:-

सूर्य चमकता है आकाश में। आप चमक रहे हो जिन शासन में ॥

आचार्य भगवन आपको दीक्षा दिवस पर वंदन अभिनंदन, आपने संयमी जीवन के 28 बसंत निर्दोष निरतिचार रूप से पार कर लिये, संयम का एक दिन भी अद्‌भुत एवं सफल जीवन का सूचक होता है। 28 वर्ष की संयम साधना जीवन की अद्‌भुत विजया दशमी है। संयम का 29 वाँ वर्ष आत्मा की दीवाली है। जीवन की सर्वोच्च समुन्नति एवं अध्यात्म साधना की परम जागृति का नाम है दीक्षा जयन्ती।

आपकी संयम यात्रा आगे भी इसी तरह निर्वाध गति से चलती रहे। साथ ही आपके सान्निध्य में हम सभी दर्शन, ज्ञान, चारित्र और तप की आराधना में आगे बढ़ें। आपकी कृपा और सद्‌प्रेरणा से हमें यह रत्नत्रय रूप दुर्लभ संयम जीवन मिला:-

मन की अंधियारी राहो पर करो किरण संचार, जन-जन की पावन प्रज्ञा के खोलो आवृत द्वार।
उम्र हमारी सारी आपको आज समर्पित, फलों के मृदुहास लिये तुम जियो तुम जियो वर्ष हजार॥

हे जिन शासन गौरव, हे अनेक गुणों के सागर, हे सन्मार्ग दाता आप शतायु हों, जीओ हजारों बरस, तन-मन से रहे सहा सरस, हे दिव्य पथ पर गतिमान चरण; तुम्हें नमन।

शत कोटि वन्दन, छात्र छाया एवं वरदहस्त हमेशा हम पर बना रहे।

सद्‌गुणों की प्रतिमूर्ति हमारे गुरुदेव

वास्तव में आपकी वाणी में जादू भरा है, क्योंकि जीवन आपका सेन्ट परसेन्ट खरा है।
तप-जप संयम से खूब निभाया है निज को, क्योंकि आपके सिर पर गुरु विद्यासागरजी ने हाथ धरा है॥

परम पूज्य गुरुदेव आर्जवसागरजी महाराज के व्यक्तित्व में गजब का जुझारुपन है। स्वयं के आत्म कल्याण के साथ-साथ भव्य जीवों के कल्याण के लिये भी निरन्तर प्रयत्नशील रहते हैं। आगम की कसौटी पर तर्क के साथ डंके की चोट पर अपनी बात कहने में जरा भी नहीं झिझकते हैं। ऐसा नहीं कि गृहस्थों में ही लोभ होता है साधु भी शिष्य वृद्धि के लिए भक्तों के प्रभाव क्षेत्र बढ़ाने के प्रसिद्धि प्रशंसा के लिए तत्पर रहते हैं लेकिन आपको न शिष्यों का लोभ है ना प्रसिद्धि का। आपकी आस्था; प्रसिद्धि में नहीं आत्म सिद्धी में है। आपकी अभिरुचि जनरंजन में नहीं आत्मरंजन में है। आपकी अनुरक्ति प्रतिष्ठा में नहीं आत्म निष्ठा में है। आपका अनुगमन स्वयं के यशोगान में नहीं, गुरु गुणगान में है। आपकी श्रद्धा पर आसक्ति में नहीं स्व की प्रतीति में है। इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हमें देखने को मिला मुनिश्री आर्जवसागर महाराज का हरदा (नेमावर) में गुरु शिष्य मिलना, गुरु का आशीर्वाद लेकर आप आगे बढ़े खातेगाँव, हरदा होते हुये देवास नाका पर मानो गुरुदेव का कोई

इंतजार ही कर रहा हो; जी हाँ आचार्य सीमंधरसागरजी काफी अस्वस्थ व समाधि की ओर अग्रसर हो रहे थे। उन्होंने मुनिश्री को पहले भी कितनी बार बुलाया, पर अचानक योग बना मिलते ही उन्होंने अपने जीवन से आचार्य पद का त्याग कर मुनिश्री को दे दिया और स्वयं भार हीन होकर 8-10 दिन में ही समाधि को प्राप्त हो गये; ये होता है अपने लक्ष्य के प्रति सतत जागृत रहना। इस तरह के अनेकों उदाहरण आपके जीवन में मिलते हैं आप ज्ञान के खजाने हैं आपने अपनी ज्ञान राशि को राजस्थान, मध्यप्रदेश, कर्नाटक, तमिलनाडु, गुजरात आदि प्रान्तों में घूम-घूम कर जन-जीवन में महामेघ बनकर पाठशालाओं के माध्यम से हजारों-हजारों बालकों में बरसाया। अधिक क्या कहूँ बस संक्षेप में कहा जाय तो इतना ही कहूँगी आपने अपने गुरु के आदर्शों को अपने जीवन में इस प्रकार उतारा कि लगता है कि आपने-अपने गुरु को अपने आप में समा लिया शायद आपकी अपने गुरु के प्रति भावना रही तुझमें मुझमें भेद ना पाऊँ। अंत में गुरु चरणों में शत् शत् बार नमोस्तु।

स्वाध्याय: शब्द एक, अर्थ अनेक

स्वाध्याय- स्व का अध्ययन। स्वाध्याय- स्व अनुशीलन। स्वाध्याय- स्व अनुशासन। स्वाध्याय- स्व चिंतन मनन। स्वाध्याय- आत्म विश्लेषण। स्वाध्याय- निर्ग्रन्थ प्रवचन। स्वाध्याय- सद्ज्ञान में लगन। स्वाध्याय- विनय का रमण। स्वाध्याय- विवेक का चलन। स्वाध्याय- जीवन का सृजन। स्वाध्याय- भाव परिवर्तन। स्वाध्याय- सद्भाव ग्रहण। स्वाध्याय- पाप कर्मों का शमन। स्वाध्याय- दुर्विचारों का दहन। स्वाध्याय- स्वचेतन में मगन। स्वाध्याय- कषायों का विसर्जन। स्वाध्याय- सुनियत जीवन पालन। स्वाध्याय- अथाह पुण्य सृजन। स्वाध्याय- अज्ञान मोह वर्जन। स्वाध्याय- कर्म बन्धन हनन। स्वाध्याय- सद्ज्ञान में विचरण।

श्रीमति मंजु गोधा, अध्यक्ष, दि. जैन महासमिति महिला संभाग, सूरत

गुरुवर की शरण में समर्पण

ब्र.किरीट भैया, खातेगांव

भारत में हैं ऐसे संत,
जो सदा रहेंगे जयवन्त।
यही भावना आपके जीवन को,
आप हैं अध्यात्मिक बड़े संत॥
आप हमारे परमपिता,
आप ही हमारे भगवन्त।
नेमावर सिद्धोदय क्षेत्र दिया,
हम सब का मन मोह लिया।

कला नक्काशी सजे जिनालय,
क्षेत्र लोक में सजा दिया॥
गुरुवर आयें खातेगांव हरबार,
आपको नमन है शतबार॥
सदा आपकी शरण में हम खो जायेंगे,
संयम शीघ्र मिले गुरुवर
आपकी कीर्ति सदा ही गायेंगे॥

गुरुवर 108 श्री आर्जवसागर जी का गुणानुवाद

श्रवण कुमार पाटनी (जैन), खातेगांव

भारत देश का परम सौभाग्य है कि श्रमण संस्कृति के परमराजहंस आचार्यश्री 108 विद्यासागरजी के परम प्रभावक दीक्षितशिष्य आचार्यश्री 108 आर्जवसागर जी महाराज! हम सभी साधर्मीजन अपनी संपूर्ण निष्ठा, आत्मीयता, शोभा-शालीनता सह आपकी वन्दना में नतमस्तक हैं आप अपने देश भारत में अहिंसा, परोपकार का और अखंड शांति का शंखनाद करने में लवलीन हैं।

हे गुरुवर आर्जवसागर मुनिराज श्री! आपकी करुणा/वात्सल्यता का कोई ओर-छोर नहीं है। आपकी तेजोमय चारित्र संबलित वाणी सहस्र-2 जनों को परितृप्त करती है। वास्तव में आप ''सत्वेषुमैत्री'' की परमज्योति की सर्वोपरी प्रस्तुति हैं। इसलिये प्राणी मात्र आप में आत्मकल्याण को साकार हुआ अनुभव करता है।

हे मुनिराज श्री! आपने अपने लोकमंगलकारी प्रवचनों के माध्यम से लोकमानस को परितृप्त किया है। आपकी प्रत्येक धर्मसभाएँ, जहाँ मौन को भी सुना जा सकता है, लगभग समवशरण रूप ही होती है। क्योंकि आपकी प्रखर अमृतवाणी में मयूरपंख की भांति मृदुता, सुकुमारता के साथ ही वात्सल्यता होने से जैन-जैनेतर सभी प्रभावित होकर सत्पथ के मार्ग पर चलने हेतु अभिभूत हुए हैं।

हे निर्ग्रंथ मुनिश्रेष्ठ! यह हम धर्मावलंबियों के हृदय का पुनीत नवनीत है कि आपने अपनी प्रखर-प्रांजल साधना अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी वाणी द्वारा मानवमात्र को एक नया विश्वास, नयी आशा, अभिनव आस्था और चिरस्मरणीय प्रेरणा दी है। आपका यह दिव्यावदान प्राणी मात्र को अहिंसा, मनुजता, सत्य-स्नेह तथा आत्मीयता की ओर उन्मुख करेगा।

हे मुनिराज श्री! आपका 27 वाँ अमृत वर्षायोग खातेगाँव नगर में हम श्रावकों के आत्मकल्याण हेतु प्रेरणास्रोत बनकर चिरस्मरणीय रहेगा। क्योंकि चातुर्मास बेला में यह प्रथम अवसर रहा है कि 32 दिवसीय षोडसकारण व्रत विधान और 4 दिवसीय समोवशरण विधान आपके पुनीत सान्निध्य में हुये हैं, जो विगत वर्षों में हुये चातुर्मासों में ऐसे विधान नहीं हुए। इसके अतिरिक्त श्री 1008 पार्श्वनाथजी, श्री108 श्रेयांसनाथजी, श्री 1008 पुष्पदंतजी, श्री 1008 वासूपूज्य स्वामी जी, श्री 1008 शीतलनाथ जी, श्री 1008 महास्वामी जी का निर्वाणोत्सव, चा.च. आचार्य श्री 108 शांतिसागर जी का समाधि दिवस, आचार्य श्री विद्यासागरजी का 69वाँ अमृतोत्सव के साथ ही बाहर से पधारे बच्चों सहित पाठशाला का भी मांगलिक कार्यक्रम मनाने का सौभाग्य आप ही के सान्निध्य में संपन्न हुआ।

समाज के साधर्मियों पुरुष, महिला, बच्चों को आध्यात्मिक बोध कराने की दृष्टि से विभिन्न विषयों की क्लास आप के द्वारा अत्यन्त सरल शैली में क्रियान्वित की गई। आचार्य कुन्द कुन्द देवश्री एवं आचार्य पूज्यपाद जी विरचित क्रमशः वारसाणुवेक्खा तथा इष्टोपदेश ग्रंथ जिसका सरल भाषा में पद्यानुवाद आपके द्वारा

हुआ है, जो अनुकरणीय है।

हे मुनिराजश्री जी! आप ओजस्वी प्रतिभा के धनी तो हैं ही, भाषा पर आपका असाधारण अधिकार होकर शब्दों का विशाल भंडार आप में है, शब्दशक्तियों के आप ज्ञाता हैं, छंद रचना में परम प्रवीण हैं आप, अलंकार योजना में दक्ष हैं आप, तथा भाव सम्प्रेषण की शक्ति भी आप में अद्‌भुत है।

हे तपस्वी मुनिश्री! वर्ष 2014 का यह अमृतवर्षायोग चिरस्मरणीय रहेगा, क्योंकि स्थानीय साधर्मी बंधुओं के अतिरिक्त आपकी अमृतवाणी का लाभार्जन एवं दर्शनलाभ भारतदेश के सुदूर स्थानों कर्नाटक, तमिलनाडु, गुजरात, राजस्थान, दिल्ली, महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश आदि के भी यात्रीगणों ने यहाँ पधारकर लिया है। अतः हम एक बार पुनः प्रत्यक्ष/परोक्ष रूप में उन्हें उनका अभिनंदन, स्वागत, अभिवादन समर्पित करते हैं।

हे मुनिराजश्री! Face is the index of heart इस अंग्रेजी वाक्यानुसार मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से व्यक्ति के भावों का अनुमान मुख मुद्रा देखकर ही लगा लेना आपका सहज स्वभाव है।

और हे मुनिराज! ''आपने यह भी सिद्ध किया है कि आत्मा का बल वैभव, शरीर के बल वैभव से बेहतर और बलवतर है।

ऐसी ही प्रबल भावना के साथ ही हे मुनिराजश्री! छोटी-सी उम्र में व्रत को लेकर, संयम को स्वीकारा है।

गुरुवर का आशीष मिला आपको, और चमका भाग्य सितारा है।

अब बने आचार्य जिनको शत्‌शत् नमन हमारा है। ऐसे आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी मुनिराजश्री को बारम्बार नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु

क्षमा याचना-

हे तपस्वी निर्ग्रंथ मुनिराजश्री! आप करुणा के बीज हैं, प्रेम का वृक्ष आपकी संभावना है और क्षमा का फल तथा 'क्षमा वीरस्य भूषणम्' आप का सहज स्वभाव है।

ऐसे ही क्षमाफल की भावनाओं सहित हम सब क्षमा की प्रार्थना आपको समर्पित करते हुए। त्रयबार नमोस्तु, नमोस्तु, नमोस्तु! भी समर्पित करते हैं।

म.प्र. की राजधानी भोपाल के चंदन नगर में अभूतपूर्व प्रभावना

संत शिरोमणी महाचार्य प्रवर श्री 108 विद्यासागरजी महाराज के परम प्रभावक शिष्य परम पूज्य मुनिश्री स्वभावसागरजी, मुनिश्री विनीतसागर, मुनिश्री चंद्रप्रभसागरजी, मुनिश्री सुव्रतसागरजी, क्षुल्लकश्री देवानंदसागरजी महाराज ससंघ के सान्निध्य में दिनांक 16/04/2015 से 22/04/2015 तक श्री मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक महामहोत्सव सानंद सम्पन्न हुआ एवं मध्यप्रदेश राज्य में अभूतपूर्व प्रभावना हुई।

प्रकाशक भाव विज्ञान

भाव विज्ञान जैन धर्म प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

नियमावली :

1. उत्तर लिखने वाले या उसके पारिवारिक सदस्य की भाव विज्ञान पत्रिका संबंधी आजीवन सदस्यता होनी अनिवार्य है। एक परिवार से एक ही उत्तर पुस्तिका स्वीकार्य होगी । अन्य नहीं।
2. प्रश्न पत्र के पेपर पर ही उत्तर लिखकर भेजें । फोटो कॉपी मान्य नहीं होगी।
3. उत्तर पुस्तिका पर अंक देने का भाव उत्तर पुस्तिका में वर्णित उत्तरों की शुद्धता, लिखावट एवं उम्र पर निर्भर करेगा। अल्प उम्र वाले प्रतियोगी को प्रमुखता दी जावेगी।
4. उत्तर लिखकर काट दिये जाने पर या घिस दिये जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।
5. उत्तर पुस्तिका की प्रतियोगी को एक फोटोकॉपी करवा लेना चाहिये क्योंकि मुख्य उत्तर पुस्तिका में कोई गलती न हो एवं अगली भाव विज्ञान पत्रिका में आने वाले उत्तरों का प्रतियोगी मिलान कर सके।
6. पत्रिका पहुँचने के पन्द्रह दिनों के भीतर उत्तर अवश्य प्रेषित करें। पत्रिका प्रकाशित होने के एक माह के बाद प्राप्त उत्तर पुस्तिकाएँ प्रतियोगिता हेतु मान्य नहीं की जावेगी।
7. पुरस्कार की राशि मनीआर्डर या बैंक आदि से भेजी जावेगी। प्रतियोगी प्राप्त मूल्य का उपयोग अपने तीर्थ वंदना, पूजा द्रव्य दान, आहार दान, औषधदान, उपकरण दान, पाठशाला की यूनिफार्म आदि धर्म कार्य के द्रव्य में सम्मिलित कर सकते हैं।
8. अगली भाव विज्ञान पत्रिका में सभी श्रेणियों के पुरस्कार विजेताओं के नाम प्रकाशित किये जावेंगे।
9. उत्तर पुस्तिका डाक/पोस्ट से निम्न पते पर प्रेषित की जानी चाहिए।
   डॉ. प्रोफेसर सुधीर जैन, 85, डी.के. कॉटेज, दानापानी रेस्टोरेंट के पास, ई-8 एक्सटेंशन, भोपाल (म.प्र.)

* **उपरोक्त प्रतियोगिता के बारे में हमारा उद्देश्य है कि बाल-युवा पीढ़ी भी स्वाध्याय के क्षेत्र में आगे बढ़े एवं घर-घर में चले धर्म संस्कार की पाठशाला।**

प्रथम पुरस्कार : 108 योग्य संख्यक मूल्य, द्वितीय पुरस्कारः 72 योग्य संख्यक मूल्य

तृतीय पुरस्कार : 57 योग्य संख्यक मूल्य

पुरस्कारों के पुण्यार्जक श्री विनोद कुमार जैन, 591, कंचन विला, कृष्ण विहार, वी.के. कोल नगर, (अजमेर राजस्थान)

उत्तीर्ण प्रतियोगी परिचय

दिसंबर 2014

प्रथम श्रेणी

श्रीमती मिथिलेश वीरेन्द्र जैन

एफ-42, संजय काम्पलेक्स,
जयेन्द्रगढ़, लश्कर,ग्वालियर (म.प्र.)

द्वितीय श्रेणी

श्रीमती पद्मदेवी श्रीपाल पहाड़े

पद्मश्री बंगला, महावीर कॉलोनी, फारणागांव,
कोपरगांव, अहमदनगर (महा.)

तृतीय श्रेणी

श्रीमती सपना पवन जैन,

112-113, बीडीए, पंचशील नगर,
भोपाल (म.प्र.)

उत्तर पुस्तिका - दिसम्बर 2014

1. भदैनीघाट 2. इक्ष्वाकुवंश 3. पाँच लाख पूर्व
4. वसन्त लक्ष्मी विनाश 5. हाँ 6. हाँ
7. ना 8 हाँ 9 200 धनुष
10. 63 प्रकृतियों 11. प्रभास
12. तीर्थंकर अरिहन्तों के 46 मूलगुण होते हैं। जैसे जन्म के 10 अतिशय सम्बन्धी गुण, केवलज्ञान सम्बन्धी 10 अतिशय गुण, देवकृत 14 अतिशय सम्बन्धी गुण, अनन्त चतुष्टय गुण और अष्ट प्रातिहार्य सम्बन्धी गुण इस प्रकार 46 मूलगुण होते हैं।
13. 9 हजार 14. तीन लाख तीस हजार
15. 95 16. 11 हजार 17. गलत
18. सही 19. गलत 20. सही

भाव विज्ञान जैन धर्म प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता

समय : 15 दिन, अंक : 100

- ❖ 20 प्रश्नों में से प्रत्येक प्रश्न पर 5-5 अंक समान हैं।
- ❖ इन प्रश्नों में से एक प्रश्न का उत्तर दो लाइनों में वाक्य सहित लिखना अनिवार्य है।
- ❖ उत्तर राष्ट्रभाषा हिन्दी में लिखें। लिखकर काटे या मिटाए जाने पर अंक नहीं दिए जाएँगे।

सही उत्तर पर (✓) सही का निशान लगावें-

प्र.1. श्री चन्द्रप्रभु भगवान की आयु कितनी थी ?

दस लाख पूर्व वर्ष ( ) तेरह लाख पूर्व वर्ष ( ) 20 लाख पूर्व वर्ष ( )

प्र.2. श्री चन्द्रप्रभु भगवान की जन्म तिथि क्या थी ?

पौष कृष्ण एकादशी ( ) पौष कृष्ण नवमी ( ) पौष कृष्ण पञ्चमी ( )

प्र.3. श्री चन्द्रप्रभु भगवान को दीक्षा लेते ही कौन-सा ज्ञान हुआ था ?

अवधिज्ञान( ) मन:पर्ययज्ञान ( ) केवलज्ञान ( )

प्र.4. श्री चन्द्रप्रभु भगवान के समवसरण में प्रमुख गणधर कौन थे ?

श्री दत्त ( ) सुधर्म ( ) अनगार ( )

हाँ या ना में उत्तर दीजिये-

प्र.5. श्री चन्द्रप्रभु भगवान ने एक हजार राजाओं के साथ दीक्षा धारण की थी। ( )

प्र.6. तीर्थंकर दीक्षा लेते ही पिच्छि, कमण्डल धारण करते हैं। ( )

प्र.7. श्री चन्द्रप्रभु भगवान शुक्ल लेश्या वाले थे। ( )

प्र.8. तीर्थंकरों ने चार अघातियाँ कर्मों का नाश करके केवलज्ञान प्राप्त किया। ( )

रिक्त स्थानों की पूर्ति किजिए-

प्र.9. श्री चन्द्रप्रभु भगवान का जन्म .... नगर में हुआ था।

(श्रावस्ति, कौशाम्बी, चन्द्रपुर)

प्र.10. श्री चन्द्रप्रभु भगवान ने .... वृक्ष के नीचे केवलज्ञान पाया।

(जम्बूवृक्ष, नागवृक्ष, शाल्मलीवृक्ष)

प्र.11. श्री चन्द्रप्रभु भगवान ने............... उपवास के साथ दीक्षा धारण की थी।

(दो, चार, तीन)

दो पंक्तियों में उत्तर दीजिए-

प्र.12. तीर्थंकर अरिहंत में और सामान्य अरिहंतों में क्या अन्तर है?

....

....

....

सही जोड़ी मिलायें:-

प्र.13. श्री चन्द्रप्रभु भगवान के पिता का नाम - विमला

प्र.14. श्री चन्द्रप्रभु भगवान की माता का नाम - महासेन

प्र.15. श्री चन्द्रप्रभु भगवान की दीक्षा पालकी का नाम - लक्ष्मणा

प्र.16. श्री चन्द्रप्रभु भगवान के प्रथम आहार दाता का नाम - सोमदत्त।

सही (✓) या गलत (✗) का चिन्ह बनाइये-

प्र.17. श्री चन्द्रप्रभु भगवान के समवसरण में तेरानवे गणधर थे। ( )

प्र.18. श्री चन्द्रप्रभु भगवान के समवसरण में धरणा प्रमुख आर्यिका थीं। ( )

प्र.19. श्री चन्द्रप्रभु भगवान फल्गुन शुक्ला सप्तमी के दिन सायंकाल के समय मोक्ष को गये। ( )

प्र.20. श्री चन्द्रप्रभु भगवान सम्मेदशिखर के ललितकूट से मोक्ष गये। ( )

आधार-

1. उत्तर पुराण, 2. जैनागम संस्कार

प्रतियोगी-परिचय

भाव विज्ञान सदस्यता की रसीद क्रमांक :

नाम .... उम्र ....

पिता/माता/पति का नाम ....

नगर या गाँव का नाम ....

पता..

....

मोबाईल/फोन नं. ....

सदस्यों को भाव विज्ञान प्रेषित करते समय लिफाफे के पते पर रसीद क्रमांक का लेख भी किया जाता है।

भाव विज्ञान परिवार

✴✴✴✴✴ शिरोमणी संरक्षक ✴✴✴✴✴

● **मेसर्स आर.के. ग्रुप, मदनगंज-किशनगढ़, अजमेर,** ● श्री जैन निर्मल कुमार झांझरी, डीमापुर (नागालैंड)

परम संरक्षक : ● श्री जैन गौतम काला, राँची ● श्री बुधराज जैन कासलीवाल, पांडीचेरी

✴✴✴ पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक ✴✴✴

● प्रबंधकारिणी समिति, श्री १००८ पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, कीर्तिनगर, जयपुर ● सकल दिगम्बर जैन समाज, दाँतारामगढ़, जिला सीकर ● श्री कुन्थीलाल रमेशचंद नरेश कुमार जैन गदिया, नसीराबाद (अजमेर) ● **रामगंजमण्डी :** सकल दिगम्बर जैन समाज एवं वर्षायोग समिति 2011, श्री जैन ताराचंद मित्तल परिवार एवं महेशकुमार अशोक कुमार महेन्द्र कुमार जैन ठोरा।

✴✴ पुण्यार्जक संरक्षक ✴✴

● श्री जैन नीरज सुपुत्र श्रीमती चन्द्रकला पाटनी, रांची ● सुशील कुमार, अभिषेक रोहित कुमार जैन, पांडीचेरी ● श्री मिठ्ठनलाल जैन, नई दिल्ली

✴ सम्मानीय संरक्षक ✴

● श्री वर्धमान विक्रमादित्य जैन, चैन्नई ● श्री जैन पदमराज होळल, दावणगेरे ● श्री जैन सोहनलाल कासलीवाल, सेलम ● श्री जैन संजय सोगानी, राँची ● श्री जैन आकाश टोंग्या, भोपाल ● श्री महावीरप्रसाद संजयकुमार जैन, इस्पात एंटरप्राईजेस प्रा.लि., कलकत्ता ● श्रीमती जैन संगीता हरीश बजाज, टीकमगढ़ ● श्रीमती कमलाबाई अशोक जैन साहबजाज, अजमेर ● श्री जैन बी.एल. पचन्ना, बैंग्लुरू ● श्री घनश्याम जैन, कृष्णा नगर, दिल्ली ● **जयपुर :** श्री जैन कमलजी काला, कु. इन्द्रसेना जैन, ● **सूरत :** श्री नरेश जैन, (दिल्ली वाले), श्री जैन निलेश भाई शाह।

✴ संरक्षक ✴

● श्री जैन विजय अजमेरा, रीवा ● श्री के. सी. जैन, डि. एक्साइज अधिकारी, छतरपुर ● श्री अजित प्रसाद जैन सराफ, रेवाड़ी ● दिल्ली : श्री विजयपाल जैन, शाहदरा, श्री राकेश जैन, रोहिणी ● श्री दिगम्बर जैन तीर्थ बड़ा मंदिर, हस्तिनापुर (मेरठ) ● श्री संजय जैन, गुड़गांव ● श्रीमती सुषमा रवीन्द्र कुमार जैन, गाजियाबाद ● श्री जैन कल्याणमल झांझरी, कलकत्ता ● श्रीमती सुधा महेन्द्र कुमार जैन, भोपाल ● श्री कस्तूरचंद सुरेश कुमार जैन, रामगंज मण्डी, कोटा ● श्रीमती जैन हीरामणी चांदमल सेठी, गुवाहाटी ● श्री जैन विमलचंद मोहित कुमार ठोलिया, पांडीचेरी ● श्रीमति विमला मनोहर जैन, सूरत ● **जयपुर** : श्री एस.एल. जैन (बागड़िया), श्री जैन गुणसागर ठोलिया-किशनगढ़-रेनवाल, श्री जैन श्रेयांस कुमार पाटोदी, श्रीमती जैन अनिता पारस सौगानी, श्री जैन जितेन्द्र अजमेरा, श्री जैन ओम कासलीवाल, श्री जैन मंगलचंद हरकचंद मोतीलाल कमलचंद छाबड़ा, श्री विजय कुमार जैन छाबड़ा ● **उदयपुर** : श्री प्रकाशचंद जैन, श्रीमती निधी राहुल जैन-अनुपम ग्रुप ऑफ कम्पनीज, श्री जैन अशोक कुमार ड्वारा ● इंदौर : श्री सचिन जैन, स्मृति नगर

✴ विशेष सदस्य ✴

● श्री भागचन्द जैन, नसीराबाद ● सूरत : श्री जैन हर्षद भाई मेहता, श्री जैन अरविंद भाई गांधी, श्री जैन संयम संदीप भाई शाह, श्री जैन रमेश मोहनलाल दौसी, श्री जैन कोठारी बाबूलाल कचरालाल, श्री जैन कन्हैयालाल कचरालाल मेहता, श्री जैन कमलेश शाह, श्री जैन हसमुख मगनलाल शाह, श्री जैन चम्पालाल लक्ष्मीलाल सिंघवी, श्री जैन नीलकेष बालू शाह-मढ़ी, श्रीमती जैन सुनिता विद्या प्रकाश दीवान, श्री जैन अशोक कुमार गंगवाल खाच्छरियावास, श्रीमती जैन गुणमाला देवी दीपचंद सेठी, **हरदा :** श्री जैन नीलेश अजमेरा

नोट : हमारी भाव विज्ञान पत्रिका में विशेष सदस्यों तक आजीवन सदस्यों की सूची हमेशा प्रकाशित की जाती है, और विषय वस्तु से अतिरिक्त स्थान उपलब्ध होने पर नए तथा संपूर्ण सदस्यों की सूची भी प्रकाशित की जाती है।

✴ नवागत सदस्य ✴

हरदा : श्री जैन नीलेश सिंघई, श्री अजय कुमार, डॉ. नवीन जैन, श्री वीरेन्द्र कुमार जैन (फणीश), श्री अनिल कुमार जैन, श्री अभिज्ञान-आलोक जैन, श्री राजेन्द्र कुमार जैन, श्री बादामीलाल जैन भोपाल : पुष्पेन्द्र कुमार जैन (नरपत्या)

भाव विज्ञान पत्रिका की सदस्यता हेतु आवेदन-पत्र

मैं .... मधु (शहद), मांस, मद्य (नशा) का त्यागी, धर्म का अनुसरण करने वाला पिता/पति श्री ....

जिला .... प्रदेश ....से

भाव विज्ञान पत्रिका हेतु शिरोमणी संरक्षक रुपये 51000/- [ ] पुर्ण्याजक विशेषांक संरक्षक सदस्य रूपये 24500/- [ ] परम संरक्षक रुपये 21000/- [ ] पुण्यार्जक संरक्षक सदस्य रुपये 18,000/- [ ] सम्मानीय संरक्षक सदस्य रुपये 11,000/- [ ] संरक्षक सदस्य रुपये 5,100/- [ ] विशेष सदस्य रुपये 3,100/- [ ] आजीवन सदस्य रुपये 1,100/- [ ] राशि देकर आजीवन सदस्यता स्वीकार करता/ करती हूँ।

मेरा वर्तमान व्यवहारिक का पता :- ....

....

जिला .... प्रदेश ....

पिनकोड .... एस.टी.डी. कोड ....

फोन नम्बर .... मोबाईल ....

ई-मेल .... है।

दिनांक : हस्ताक्षर

कार्यालयीन उपयोग हेतु

श्री/श्रीमति .... पिता श्री .... को शिरोमणी संरक्षक/पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक/परम संरक्षक/पुण्यार्जक संरक्षक/सम्मानीय संरक्षक/संरक्षक/विशेष सदस्य/आजीवन सदस्यता क्रमांक ....प्रदान की जाती है।

दिनांक हस्ता. सम्पादक/प्रबन्ध सम्पादक

आशीर्वाद एवं प्रेरणा : संत शिरोमणी आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के धर्मप्रभावक शिष्य मुनि श्री आर्जवसागर जी महाराज

पत्रिका की विशेषताएं एवं उद्देश्य :

☛ विशिष्ट साधक आचार्यों या साधुओं के और डाक्ट्रेट व विशिष्ट विद्वानों के शिक्षाप्रद आलेखों, प्रवचनों एवं समीक्षाओं का प्रस्तुतिकरण

☛ सत् साहित्य समीक्षा। ☛ अहिंसात्मक जीवन शैली। ☛ व्यसन मुक्ति अभियान ।

☛ हिंसक पदार्थों व हिंसक सौंदर्य प्रसाधन का निरसन।

☛ नई पीढ़ी के लिए वैज्ञानिक शैली में जैन दर्शन का प्रस्तुतिकरण।

☛ रूढ़िवाद, मिथ्यात्व व शिथिलाचार रहित अनेकान्त, स्याद्वाद और सापेक्षवाद शैली में जैनत्व का प्रस्तुतिकरण।

☛ धार्मिक प्रश्नोत्तरी व काव्य संग्रह की प्रस्तुति।

☛ धार्मिक पर्व आयोजन व मुनि संघ समाचार प्रस्तुति इत्यादि।

नोट : ''भाव विज्ञान'' भोपाल के पक्ष में (ड्राफ्ट अथवा) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, टी.टी. नगर, भोपाल में नेट/कोर बैंकिंग सुविधा के अंतर्गत सेविंग बैंक एकाउंट नंबर-63016576171 एवं IFS Code SBIN0030005 में नगद राशि सीधे जमा कर प्रकाशक को रसीद की छायाप्रति प्रेषित कर सदस्यता शुल्क की रसीद प्राप्त की जा सकती है।

सदस्यता आवेदन पत्र भेजन का पता

''भाव विज्ञान'' एम-8/4, गीतांजली काम्पलैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 (म.प्र.) को प्रषित करें।

सम्पर्क : डॉ. अजित कुमार जैन - 09425601161, डॉ. सुधीर जैन - 09425011357

कृपया पत्रिका को पढ़कर अपने परिजन को दें या किसी दि. जैन मंदिर, वाचनालय अथवा किसी दि. जैन धर्म क्षेत्र पर विराजमान कर दें।

कृपया यहाँ से निकालें

खंडवा, शुक्रवार 3 अप्रैल, 2015 | 14 | दैनिक भास्कर

28 दीपों से आरती के लिए 55 ह

आचार्यश्री के चरण धोये, कई जगह शोभायात्रा का स्वागत किया

भास्कर संवाददाता | बीड़

दिगंबर जैन मुनि 108 आचार्य आर्जव सागरजी महाराज के सानिध्य में गुरुवार को महावीर जयंती विधि-विधान व उल्लास से मनाई गई। इसी दिन आचार्यश्री का 28वां दीक्षा दिवस होने से उनकी 28 दीपों से आरती की गई। इस आरती के लिए सुनील जैन व मुकेश जैन ने 55 हजार की बोली लगाकर आरती उतारी। इससे पूर्व सुबह 7 बजे दिगंबर जैन मंदिर से पुरुष भगवान महावीर की डोली और महिलाओं ने सिर पर कलश लिए जयकारा लगाते हुए शोभायात्रा निकाली। शोभायात्रा में आचार्यश्री भी शामिल हुए। श्वेतांबर जैन समाज के लोगों ने भी अपने घरों के सामने आचार्यश्री की चरण वंदना कर शोभायात्रा का स्वागत किया। गांव के विभिन्न स्थानों से होते ही शोभायात्रा स्कूल ग्राउंड पहुंची। यहां भगवान महावीर का अभिषेक किया गया। इसके बाद आचार्यश्री की 28 दीपों से आरती की। कार्यक्रम में देशभर से आए अतिथियों का स्वागत सरपंच बालकृष्ण अग्रवाल, सुरेंद्र टुटेजा, जनपद सदस्य आशीष चौरे, सुरेश खनूजा ने आचार्यश्री की फोटो भेंट कर किया।

आचार्यश्री ने कहा मैं जनवरी में बीड़ आया था तब मंदिर का काम अधूरा देखा। कारण पूछा तो पैसों की कमी सामने आई। बीड़ में जैन समाज की बहुलता है। महावीर जयंती पर विभिन्न कार्यक्रमों की बोलियां लगाई गई हैं। जिन्होंने बोलियां लगाई हैं वे ईमानदारी से और जल्द राशि जमा कर दें तो मंदिर निर्माण पूरा हो जाएगा। उन्होंने समाज से अपेक्षा की कि 2016 तक मंदिर बन जाएगा।

आचार्य आर्जव सागरजी महाराज के 28वें दीक्षा दिवस पर 28 दीपों से उनकी आरती की।

खंडवा, बुधवार 15 अप्रैल, 2015 | 14 | दैनिक भास्कर

कर्म के ज्ञान से आस्था दृढ़ होती है –आर्जव सागर महाराज

खंडवा। कर्म विश्व की सबसे बड़ी शक्ति है जो आत्मा के साथ एक दूसरे जन्म तक साथ जाती है और उसी कर्म की वजह से वह आत्मा सुख और दुख की समाप्ति स्वयं पा जाती है। यह बात घासपुरा स्थित महावीर जैन मंदिर में आचार्य आर्जव सागर महाराज ने कही। उन्होंने कहा आत्मा परमात्मा बन मोक्ष के अनंत सुख को प्राप्त न कर ले।

घासपुरा स्थित महावीर जैन मंदिर में प्रवचन देते सागर जी महाराज।

प्रवचन — आर्जव सागरजी महाराज ने दी सीख, कहा- एकाग्रता से की गई पूजा से आनंद की अनुभूति होती है

मंदिर में बैठो तो मन को एकाग्र करो : आचार्यश्री

भास्कर संवाददाता | बीड़

मनुष्य को संसार से ज्यादा समय मंदिर में देकर पूजा करना चाहिए। शांति से भगवान का ध्यान करें। भगवान की मूर्ति, शा, मुनि, आर्यिकाएं मन को ध्यान में लगाने के निमित्त मात्र हैं। मंदिर में बैठो तो मन को एकाग्र करो। हालांकि सांसारिक जीवन में रहते हुए ऐसा बहुत कम लोग कर पाते हैं। लेकिन प्रयास सभी को करना चाहिए। एकाग्रता से की गई पूजा से आनंद की अनुभूति होती है।

आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर में विराजित 108 आचार्य आर्जव सागरजी महाराज ने सोमवार सुबह प्रवचन में यह सीख दी। उन्होंने कहा मनुष्य का मन बंदर की तरह चंचल होता है। वह मंदिर में तो बैठता है लेकिन मन घर, परिवार, व्यापार में लगा रहता है। मंदिर में बैठे-बैठे ही विदेश यात्रा तक कर लेता है। ऐसा नहीं होना चाहिए। जितनी भी देर भगवान के सामने बैठो तो उनका ही ध्यान करो। आचार्यश्री ने पंडित बनारसीदास की कहानी के माध्यम से श्रोताओं को परोपकार की शिक्षा दी। उन्होंने समाज के युवाओं को तंबाखू के दुष्परिणाम बताते हुए इसे त्यागने का संकल्प लेने की बात कही। जैन समाज के युवा आचार्यश्री के गांव आगमन से बेहद उत्साहित हैं। घरों पर झंडे लगाए गए हैं। समाज के सभी लोग सुबह 7.30 से 10.30 बजे तक व्यापार-व्यवसाय बंद कर मंदिर पहुंच रहे हैं।

बच्चों को दे रहे धर्म ज्ञान

आचार्य आर्जव सागरजी महाराज प्रतिदिन शाम को बच्चों की पाठशाला लगाकर धर्म ज्ञान दे रहे हैं। धर्म के साथ बच्चों को पढ़ाई का तरीका और याददाश्त बढ़ाना भी समझा रहे हैं। बड़ी संख्या में समाज के बच्चे पाठशाला में भाग ले रहे हैं।

नईदुनिया
www.naidunia.com
इंदौर, बुधवार 22 अप्रैल 2015

जैन मंदिर परिसर में आयोजित धर्म सभा में आचार्यश्री ने कहा

भीकनगांव। बच्चे आपकी आदतों का अनुसरण करते हैं जब आप स्वयं नियम संयम में रहेंगे तो उनमें भी संस्कारित शिक्षा बोध होगी। अपने बच्चों में भी नियम-संयम संस्कार देना चाहिए। यह बात मंगलवार को जैन मंदिर परिसर में आचार्य आर्जव सागर ने कही। आचार्यश्री ने कहा कि जिसके जीवन में ज्ञान, विद्या, शील गुण नहीं, वे मानव कहलाने लायक नहीं हैं। मानव ने अपनी शक्ति को किसी आदर्श पुरुष के अनुरूप उपयोग करना चाहिए। साथ ही उन्होंने कहा कि जीवन तो सब को मिलता है, लेकिन मानव जीवन नहीं ये बहुमूल्य है। इस सद्कार्य में लगाएं। मानव जन्म से नहीं अपितु कर्म से महान बनता है।

भगवान आदिनाथ का मंगलवार की सुबह अभिषेक, शांति धारा की गई व मंदिरजी में गुड़ चढ़ाया गया। पारस कासलीवाल ने बताया कि इस दिन भगवान का पारणा (आहार) राजा सोमप्रभ और राजकुमार श्रेयांस के महल में हर्षोल्लास से पडगाहन कर ईछू रस (गन्ने रस) से संपन्न कराया गया। इसी दिन चेतनप्रकाश कासलीवाल के निवास पर संध्या को भक्तामर का पाठ व नमोकार महामंत्र का पाठ व भजन संध्या की गई।

दैनिक भास्कर — दिगंबर जैन मंदिर में 5वें दिन आचार्य आर्जव सागर ने कहा

एक सच छुपाने के लिए बोलना पड़ता है हजार झूठ

भास्कर संवाददाता | बीड

विद्या देना सबसे बड़ा दान होता है। इसे जरूर दान करना चहिए। विद्या देने से कभी कम नहीं होती। किसी को भी अच्छी राय और जानकारी देना चहिए।

दिगंबर जैन मंदिर में आचार्य आर्जव सागर ने शुक्रवार को 5वें दिन यह उद्गार व्यक्त किए। उन्होंने कहा कभी किसी का बुरा नहीं करें। हमेशा अच्छाई के बारे में सोचो। एक सच को छुपाने के लिए हजार झूठ बोलना पड़ता है। हर व्यक्ति को दूसरे की थाली में ज्यादा दिखाई देता है। लेकिन वह ये नहीं देखता कि खुद की थाली में क्या है?

प्रवचन देते आचार्य आर्जव सागर महाराज।

महावीर जयंती पर लेंगे 28वां दीक्षा समारोह

आचार्य श्री 108 आर्जव सागर महाराज का 28वां दीक्षा समारोह महावीर जयंती पर मनाया जाएगा। दिगंबर समाज के अध्यक्ष शैलेंद्र जैन, उपाध्यक्ष मनोज जैन ने बताया 2 अप्रैल की सुबह शुरु होगा। समारोह जैन मंदिर से श्वेता स्थानक होते हुए बीड़ जीन पहुंचेगा। यहां से वापस स्कूल ग्राउंड में श्रीजी का अभिषेक और आचार्य श्री का पाद प्रक्षालन, आचार्य श्री विद्यासागर की फोटो का अनावरण होगा। आचार्य श्री आर्जव सागर के प्रवचन होंगे। अंत में महावीर स्वामी की प्रतिमा का अभिषेक होगा। शाम को गुरुभक्त आचार्य की 28 दीपों से महाआरती होगी। सांस्कृतिक कार्यक्रम भी होंगे। बबलू जैन ने बताया विधायक लोकेंद्र सिंह तोमर, खंडवा महापौर सुभाष कोठारी, पूर्व विधायक ठा. राजनारायण सिंह भी शामिल होंगे।

श्री 1008 दिगम्बर जैन मंदिर की जिन प्रतिमाएँ
स्थल- आहुरानगर, सूरत (गुजरात)

पुण्यार्जक :
आर.एस. डायमण्ड एण्ड मेहता डायमण्ड,
हर्षद मेहता एवं परिवार,
108 आहुरानगर सोसायटी,
अडाजन रोड, सूरत-9

मुनि आर्जवसागरजी के सिर पर पीछी रख
मंत्र पढ़ते हुए आचार्यश्री सीमन्धरसागरजी।

सिरपर हाथ रख आचार्य पद की
संस्कार विधि करते हुए आचार्यश्री सीमन्धरसागरजी।

आचार्यपद की क्रिया को बतलाते हुए
आचार्यश्री सीमन्धरसागरजी।

आर्जवसागरजी को आचार्य पद के
मंत्र बतलाते व पढ़ते हुए आचार्यश्री।

आचार्यपद विधि करते हुए
आचार्यश्री सीमन्धरसागरजी।

आचार्यपद की भक्तियाँ पढ़ते हुए
आचार्यश्री एवं आर्जवसागरजी महाराज।

आचार्यपद की पूर्ण विधि पर पिच्छिका से
आचार्यश्री आर्जवसागरजी को आशीष देते हुए।

आचार्यपदारोहण का अवलोकन करती हुई
आचार्यश्री प्रसन्नऋषि की संघस्थ आर्यिकाएँ।

संध्या लोकस्वामी

आचार्य आर्जवसागर का बड़वाह की ओर विहार...

इंदौर । शुक्रवार । 27 फरवरी 2015

इंदौर, 27 फरवरी (नाप्र)। दिगम्बर जैन समाज के भानुकुमार जैन ने बताया कि आचार्य आर्जवसागरजी महाराज ने इंदौर से देवास होते हुए हाटपीपल्या, चापड़ा, बागली, पुजापुरा होते हुए बड़वाह की ओर विहार किया। महाराजश्री का जगह-जगह पर ग्रामीण क्षेत्रो में चौके लगाकर आहार और प्रवचन करते हुए जयकारों के नारों के साथ आदिवासी एवं अन्य समाजों के लोगों के द्वारा आरती, पादपूजन, प्रक्षालन कर बड़वाह के मार्ग पर पैदल चलकर विहार किया गया। न्यायाधीश बागली आदेश जैन, भानुकुमार जैन, नरेन्द्र जैन, शांतिलाल जैन, राजेन्द्र जैन, अशोक जैन, अभय जैन के साथ ही ग्रामीण क्षेत्रों के पंच-सरपंचों एवं महिला पुरुषों द्वारा स्वागत कर मुनिश्री के साथ चलकर विहार में सहभागिता की गई।

संध्या लोकस्वामी

जैन तीर्थ सिद्धक्षेत्र सिद्धवरकूट के तीन दिवसीय वार्षिक मेले का समापन

आचार्य आजर्वसागरजी महाराज ने दिए प्रवचन

इंदौर । बुधवार । 11 मार्च 2015

इंदौर, 11 मार्च (नाप्र)। सिद्धक्षेत्र सिद्धवरकूट के ट्रस्टी नंदलालजी टोंग्या एवं भानुकुमार जैन ने बताया कि सिद्धक्षेत्र सिद्धवरकूट के त्रिदिवसीय वार्षिक मेले का समापन समारोह आचार्य आजर्वसागर महाराज के सान्निध्य में संपन्न हुआ। मेले में इंदौर से 10 बसों एवं आसपास के शहरों से सैकड़ों की संख्या में श्रावकगण पहुंचे। मेले में प्रतिदिन संगीतमय पूजन पं. राजेन्द्रकुमार जैन द्वारा किया गया एवं मोतीलाल जैन दिल्ली द्वारा 8 दिवसीय सिद्धचक्र मण्डल विधान का पूजन किया गया। आयोजन में दिगम्बर जैन समाज इंदौर के अध्यक्ष एवं क्षेत्र के ट्रस्टी अध्यक्ष प्रदीपकुमारसिंह कासलीवाल ने कहा कि आचार्य आजर्वसागर महाराज के आशीर्वाद व प्रेरणा से कार्यक्रम मंगलपूर्ण चल रहा है। आगे भी आपका आशीर्वाद बना रहे, ऐसी भावना आती है। मंत्री विजय काला ने कहा कि आचार्य के आने से कार्यक्रम में रौनक आई।

खंडवा, सोमवार 9 मार्च, 2015 | 18 | दैनिक भास्कर

भगवान बाहुबली की शोभायात्रा निकाली

सिद्धवरकूट में मेले के दौरान भगवान बाहुबलीजी की यात्रा निकली।

ओंकारेश्वर| सिद्धक्षेत्र सिद्धवरकूट में 3 दिवसीय वार्षिक मेला लगा। हजारों श्रद्धालुओं ने मूलनायक श्री संभवनाथजी के दर्शन कर पूजन अभिषेक किया। मेले के आखिरी दिन विमानोत्सव के साथ जुलूस निकला। स्वर्ण व रजत कलशों में शुद्ध जल से भगवान बाहुबलीजी का मस्तकाभिषेक कर मंदिरों पर ध्वजारोहण हुआ। समवशरण मंडल विधान चौधरी परिवार ने किया। इस मौके पर आचार्य आर्जव सागर महाराज ने संदेश में कहा कि सिद्ध भूमियों पर असीम शांति मिलती है। देव दर्शन से पुण्य की प्राप्ति होती है। मानव जीवन में प्रत्येक व्यक्ति को तपोभूमि और सिद्ध स्थानों पर जाकर ध्यान, तप, पूजा-अभिषेक करना चाहिए।

6 | 16 मार्च 2015 | आंज की जनता

जैन तीर्थ सिद्धक्षेत्र सिद्धवरकूट का त्रिदिवसीय वार्षिक मेले का समापन समारोह संपन्न

इंदौर। सिद्धक्षेत्र सिद्धवरकूट के ट्रस्टी नंदलाल टोंग्या एवं भानुकुमार जैन ने बताया कि सिद्धक्षेत्र सिद्धवरकूट का त्रिदिवसीय वार्षिक मेले का समापन समारोह आचार्य आर्जवसागरजी महाराज के सानिध्य में संपन्न हुआ. मेले में इंदौर से 10 बसों से एवं आसपास के शहरों से सैकड़ों की संख्या में श्रावकगण पहुंचे थे. मेले का शुभारंभ श्रीमती इंदुमति स्व. बाबूलाल चौधरी द्वारा कियाा जिसमें समोवशरण मंडल विधान बनाया था जिसमें प्रतिदिन संगीतमय पूजन, पं. राजेन्द्र कुमार जैन द्वारा की गयी एवं मोतीलाल जैन दिल्ली

द्वारा भी 8 दिवसीय सिद्धचक्र मंडल विधान का पूजन किया गया. इस आयोजन में दिगम्बर जैन समाज इंदौर के अध्यक्ष एवं क्षेत्र के ट्रस्टी अध्यक्ष प्रदीपकुमारसिंह कासलीवाल ने कहा कि आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज के आर्शीवाद व प्रेरणा से कार्यक्रम मंगलपूर्ण चल रहा है आगे भी आप श्री का आर्शीवाद बना रहे ऐसी भावना भाते हैं. मंत्री विजय काला ने कहा कि आचार्यश्री के आने से कार्यक्रम में रौनक आई. इस अवसर पर आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज ने अपने प्रवचन में बताया कि जो संसार को पार लगाये उसका नाम तीर्थ होता है. यह नर्मदा के तट पर स्थित सिद्धवरकूट सिद्धक्षेत्र सबका कल्याण करने वाला है और यहां से दो चक्रवर्ती राजा और कामदेवराज मुनि दीक्षा लेकर मोक्ष को प्राप्त हुए. अतर्गत यह क्षेत्र सम्मेदशिखरजी के बाद दूसरे स्थान पर गिना जाता है. यहां कि तपो वणाएं बड़ी पवित्र है. जो आनंद शांति दायक है और संभवनाथ तीर्थंकर भगवान ने यहां पर केवल ज्ञानप्राप्त किया था. अतः यहां देवों में बारह सभा युक्त समवसरण रचाया गया था. अतः यहां वार्षिक मेले में समोवसरण विधान की रचना की जाती है. इस अवसर पर विमोनोत्सव में श्रीजी को विराजमान कर बैंडबाजों, भजनों के साथ चवरसे नृत्य करते हुए नगर भ्रमण कराकर पुनः वापसी पर भगवान बाहुबली स्वामी की प्रतिमा पर स्वर्ण रजत कलशों द्वारा अभिषेक कर मेले का समापन समारोह संपन्न हुआ. इस अवसर पर महाराजश्री को श्रीफल भेंट कर आर्शीवाद प्राप्त किया. क्षेत्र के अध्यक्ष प्रदीपकुमारसिंह कासलीवाल, संतोष मामा, नंदलाल टोंग्या, बाबूलाल जैन (जैन बस सर्विस), विजय काला, भानुकुमार जैन, आशीष चौधरी, कैलाश जैन, अरूण पहाड़िया, कैलाश मोटाघर, प्रदीप महलवाला, ज्ञानचंद रतनलाल कासलीवाल भोपाखेड़ी, एस.एन.डी.सी. के महाप्रबंधक साहब आदि उपस्थित थे.

बुधवार, 4 मार्च 2015 दिव्य महानगर

आचार्य आर्जवसागरजी महाराज का बड़वाह की ओर विहार

इंदौर। दिंगबर जैन समाज के भानुकुमार जैन ने बताया कि धर्मप्रभावक आचार्य आर्जवसागरजी महाराज इंदौर से देवास होते हुए हाटपिपल्या, चापड़ा, बागली, पुजांपुरा होते हुए बड़वाह कि ओर विहार किया। महाराजश्री का जगह-जगह पर ग्रामीण क्षेत्रों में चौके लगाकर आहार और प्रवचन करते हुए जयकारों के नारों के साथ कई ग्रामीण क्षेत्रों के आदिवासी एवं अन्य समाजों के लोगों के द्वारा आरती, पादपूजन, प्रक्षालन कर बड़वाह के मार्ग पर पैदल चलकर विहार किया। जिसमें न्यायधीश बागली आदेश जैन, नरेन्द्र जैन, शांतिलाल जैन, राजेन्द्र जैन, अभय जैन के साथ ग्रामीण के पंचसरपंचों, महिला-पुरुषों ने स्वागत कर मुनिश्री के साथ चलकर विहार में सम्मिलित हुए। महाराज के सिद्धवरकूट जाने की संभावना भी हैं।

सोमवार 16 मार्च 2015 | इन्दौर समाचार, इन्दौर

बाहुबली भगवान का महामस्तकाभिषेक समारोह सम्पन्न

सुखी रहना है तो हिंसा का त्याग करों : आचार्य आर्जवसागरजी महाराज

इन्दौर। सिद्धक्षेत्र सिद्धवरकुट के ट्रस्टी नंदलाल टोंग्या एवं भानुकुमार जैन ने बताया कि सिद्धक्षेत्र सिद्धवरकूट मेले में आचार्य आर्जवसागरजी महाराज के सानिध्य में भगवान बाहुबली का महामस्तकाभिषेक समारोह मनाया गया जिसमें इन्दौर एवं आसपास के शहरों के साथ ही दिल्ली, सूरत, तमिलनाडु से सैकड़ों की संख्या में श्रावकगण पहुंचे।

इस अवसर पर दोपहर 2 बजे से विमानोत्सव में श्रीजी को विराजमान कर बैंडबाजों एवं भजनों के साथ चवरसे नृत्य करते हुए नगर भ्रमण कराकर पुनः वापसी पर भगवान बाहुबली स्वामी की प्रतिमा पर स्वर्ण रजत कलशों द्वारा अभिषेक आचार्य आर्जवसागरजी महाराज ने मंत्रोच्चारण से करवाया।

इस अवसर पर महाराजश्री ने धर्मसभा को संबोधित करते हुए कहा कि गृहस्थ जीवन में हम लोगों द्वारा निरंतर पाप क्रियाएं होती है जिससे निरंतर पाप का बोझ बढ़ता जा रहा है। आत्मा पतन की ओर अग्रसर होती जा रही है, देश में निरंतर हिंसा का वातावरण निर्मित हो रहा है। चारों और हिंसा हो रही है जब आप किसी प्राणी को मारते हो तो उसके मुख से आह निकलती है। वहीं आह प्राकृतिक प्रकोप लेकर आती है यदि हमें सुखी रहना है तो जीवन में एक सत्र का अपना लो हिंसा का त्याग करों।

इस अवसर पर महाराजश्री को श्रीफल भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया। क्षेत्र के अध्यक्ष प्रदीपकुमार सिंह कासलीवाल, नंदलाल टोंग्या, भानुकुमार जैन, बाबूलाल जैन बस सर्विस, विजय काला, संतोष मामा, आशीष चौधरी, कैलाश जैन, अरुण पहाड़िया, कैलाश मोटाघर, प्रदीप महलवाला, ज्ञानचंद रतनलाल कासलीवाल भोपाखेड़ी, एचएनडीसी के महाप्रबंधक जैन साहब आदि मौजूद थे।

आचार्यश्री सीमन्धरसागर जी का दर्शन
करते हुए आर्जवसागरजी महाराज।

आचार्यश्री सीमन्धरसागरजी
आर्जवसागरजी से प्रतिनमोस्तु करते हुए।

आचार्यश्री सीमन्धरसागरजी से
रत्नत्रय की कुशलता पूछते हुए।

पिच्छिका से प्रतिलेखन करते हुए
आचार्यश्री सीमन्धरसागरजी।

धूप में बिठाकर आचार्यश्री की सेवा करते हुए
आर्जवसागरजी महाराज

भानुकुमार जैन भी आचार्यश्री की
तैलादि लगाकर सेवा करते हुए।

संघस्थ बहिने आचार्यश्री सीमन्धरसागरजी को
आहार देते हुए।

इन्दौर समाचार, इन्दौर सोमवार 26 जनवरी 2015

आचार्यश्री सीमंधरसागरजी महाराज से धर्मप्रभावक मुनिश्री आर्जवसागर जी महाराज का पालन मिलन समारोह सम्पन्न

इन्दौर। दिगंबर जैन प्रसन्नऋषि तीर्थ में विराजित सीमन्दरसागरजी महाराज से वर्षों से खबर ले रहे मुनिश्री आर्जवसागर जी आचार्य श्री सीमन्धरसागरजी महाराज एवं प्रसन्नऋषिजी महाराज से मिलन समारोह सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर आचार्य सीमन्धरसागर महाराज से मुनिश्री आर्जवसागरजी महाराज ने स्वास्थ्य आदि की खबरें लेने इन्दौर आए। जेएमएस फार्म पर बने प्रसन्नसागरजी तीर्थ पर ठहरे संघ ने मुनिश्री की भव्य आगवानी की। आहार चर्या के उपरान्त आचार्यश्री श्री सीमन्धरसागरजी महाराज के स्वास्थ्य को पूछते हुए उनकी औषध उपचार कर सेवा की। उन्होने भी मुनि श्री के स्वास्थ्य चर्या आदि की कुशल पूछते हुए चर्चा की। मुनिश्री ने कहा कि आपकी काया अतिवृद्धता की ओर जा रही है, आपकी सल्लेखना की साधना में जो त्याग की भावना

है वह बड़ी पूजनीय है। आपसे यही भावना करते है कि आप मेरे लायक सेवा अवश्यक बतलावे तथा हम आपकी जो चरित्र चक्रवर्ती आचार्य शांतिसागरजी महाराज से चली आ रही परम्परा की धारा को अनवरत बहाते रहेंगे। नष्ट नहीं होने देंगे, इस महान कार्य आप आशीर्वाद देवे।

इस अवसर पर महाराजश्री को श्रीफल भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया दिलीप जैन, भानुकुमार जैन, अंकुर पाटनी, मोहित जैन, धर्मेन्द्र जैन, गेंदालाल शाह आदि।

दबंग दुनिया
मूल्य ₹ 2.50
गुरुवार, 30 जनवरी, 2015

मुनि आर्जवसागरजी का आचार्य पदारोहण समारोह संपन्न

इंदौर। चारित्र चक्रवती आचार्य शांतिसागर महाराज के परंपरा के चतुर्थ आचार्य सीमंधसागरजी ने सल्लेखना की साधना के मौके पर अपना उत्तरदायित्व आचार्य पद को विधि विधान से धर्म प्रभावक आर्जव सागर मुनि को इंदौर में सौंप दिया है। दिगंबर जैन समाज के भानुकुमार जैन ने बताया यह कार्यक्रम दिगंबर जैन मंदिर ऋषिधाम एमएसजे फार्म हाउस पर हुआ। इस अवसर पर अरविंद जैन, सुरेश गांधी (सूरत), भूपेंद्र भाई मेहता (सूरत), अशोक जैन (भोपाल), नीलेश अजमेरा (हरदा), रजतकुमार जैन, मनीषा जैन आदि ने महाराजश्री को श्रीफल भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

लोकस्वामी
शुक्रवार 29 जनवरी 2015

पदारोहण संपन्न, त्याग की भावना पूजनीय

परम्परा की धारा को अनवरत बहाते रहेंगे

नगर प्रतिनिधि
इंदौर, 29 जनवरी

दिगम्बर जैन समाज के भानुकुमार जैन ने बताया कि दिगम्बर जैन मंदिर ऋषिधाम में शांति सागर महाराज के परंपरा के चतुर्थ आचार्य सीमन्धर सागर महाराज ने सल्लेखना की साधना के अवसर पर अपना उत्तरदायित्व एवं आचार्य पद को विधि विधान से आर्जव सागर मुनिराज को सौंप दिया।

इस अवसर पर आर्जव सागर महाराज ने कहा कि आपकी काया अतिवृद्धता की ओर जा रही है। आपकी सल्लेखना की साधना में जो त्याग की भावना हैं वह बड़ी पूजनीय है। आप से यही भावना भाते हैं, कि आप मेरे लायक सेवा अवश्य बताएं तथा हम आपकी चरित्र चक्रवती आचार्य शांति सा[गर] जी महाराज से चली आ रही परम्[परा] की धारा को अनवरत बहाते र[हेंगे] उसे नष्ट नहीं होने देंगे। इस मह[ान] कार्य पर आप आशीर्वाद प्रदान क[रें]। आचार्य श्री सीमन्धर सागर महाराज ने आर्जव सागर महारा[ज] के सिर पर हाथ रखकर और पी[छी] से आशीर्वाद प्रदान कर आच[ार्य] पदारोहण समारोह संपन्न किया।

इन्दौर समाचार
FRIDAY

मुनिश्री आर्जवसागर महाराज का आचार्य पदारोपण समारोह

इन्दौर। दिगम्बर जैन समाज के भानुकुमार जैन ने बताया कि दिगम्बर जैन मंदिर ऋषिधाम एम.एस.जे. फार्म हाऊस इन्दौर में चरित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागरजी महाराज के परम्परा के चतुर्थ आचार्य श्री सीमान्धर सागरजी महाराज ने सल्लेखना की साधना के अवसर पर अपना उत्तरदायित्व रूप से आचार्य पद को विधी विधान से धर्म प्रभावक आर्जव सागर मुनी राज को इन्दौर में सौंप दिया। इस अवसर पर मुनी राज श्री आर्जवसागरजी महाराज ने कहाकि आपकीकाया अतिवृद्धता की ओर जा रही है। आपकी सल्लेखना की साधना में जो त्याग की भावना है वह बड़ी पूजनीय है। आपसे यह भावना भाते हैं कि आप मेरे लायक सेवा अवश्य बतलावें तथा हमआपकी जो चरित्र चक्रवर्ती आचार्य शांति सागरजीमहाराज सेचली आ रही परम्परा की धारा को अनवंरत बहाते रहेंगे। उसे नष्ट नहीं होने देंगे। आचार्य श्री सीमन्धरसागरजी महराज ने आर्जव सागर महाराज के सिर पर हाथ रख कर और पिछी से आशीर्वाद प्रदान कर आचार्य पदारोहण समारोह सम्पन्न करवाया। इस अवसर पर भानुकुमार जैन अरविन्द जैन सुरेश गांधी भुपेन्द्र भाई मेहता अशोक जैन निलेश अजमेरा रजत कुमार जैन श्रीमती मनीषा जैन आदि

इंदौर, गुरुवार 29 जनवरी 2015
पो.रजि. MP/IDC/1070/2015-2017 RNI No. 45157/85 लाखों की पसंद सुबह का दैनिक समाचार-पत्र
पारिवारिक दस्तक

आर्जव सागर महाराज का
आचार्य पदारोहण समारोह सम्पन्न

इंदौर। दिगंबर जैन समाज के भानु कुमार जैन ने बताया कि दिगंबर जैन मंदिर सीमन्धर सागर महाराज ने संल्लेखना की साधना अपना उत्तरदायित्व रूप से आचार्य पद को विधिविधान से धर्म प्रभावक आर्जव सागर मुनिराज को इंदौर में सौंप दिया। इस अवसर पर महाराज ने कहा कि आपकी काया अतिवृद्धता की ओर जा रही है।

आपकी संल्लेखना की साधना में जो त्याग की भावना है वह बड़ी पूजनीय है। आप से यही भावना भाते हैं कि आप मेरे लायक सेवा अवश्य बतलाएं तथा हम आपकी जो चरित्र चक्रवती आचार्य शांति सागर महाराज से चली आ रही परम्परा की धारा को अनवरत बहाते रहेंगे। सीमन्धर सागर महाराज ने आर्जव सागर महाराज के सिर पर हाथ रख कर और आशीर्वाद प्रदान कर आचार्य पदारोहण समारोह सम्पन्न हुआ। भानु कुमार जैन, अरविन्द जैन, सुरेश गांधी, भूपेंद्र भाई मेहता, अशोक जैन, निलेश अजमेरा, रजत कुमार जैन, मनीषा जैन उपस्थित थे।

प्रति शनिवार
इंदौर, 14 फरवरी 2015
शनिवार दर्पण इंदौर

बुजुर्ग संतों के आशीर्वाद में बड़ी शक्ति होती है - आचार्य आर्जव सागर महाराज

सीमंधर सागरजी महाराज की श्रद्धांजलि सभा समारोह संपन्न

इंदौर (नप्र)। दिगम्बर जैन समाज के भानु कुमार जैन ने बताया कि समता शिरामणि आचार्य श्री सीमंधर सागर महाराज की समाधि होने के उपलक्ष्य में आचार्य श्री आर्जव सागर महाराज हाट पिपल्या में विराजित्त के सानिध्य में जैन मंदिर में श्रद्धांजलि सभा नवकार मंत्र शांति पाठ का आयोजन संपन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत आचार्य श्री सीमंधर सागरजी महाराज के चित्र पर दीप प्रज्ज्वलन अशोक छाबड़ा, प्रदीप पाटनी, भानु कुमार जैन, लोकेश जैन ने किया और सभी महिला एवं पुरुषों ने खड़े होकर 9 बार नमोकार मंत्र पढ़कर विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर इंदौर से एवं दिल्ली सूरत से कॉफी संख्या में लोग आए थे। आचार्य श्री आर्जव सागरजी ने आचार्य श्री सीमंधर सागर के संस्मरण सुनाते हुए कहा कि वे 56 वर्ष से मुनि एवं 50 वर्ष से आचार्य पद संभाल रहे हैं। उन्होंने 98 वर्ष की उम्र में बारह वर्ष की संलेखना आहार त्यागा एवं उपवास की साधना बढ़ाते हुए संपन्न की। वे दिन में शास्त्र स्वाध्याय और ध्यान जप में लीन रहते थे। वे आडम्बर से दूर अपनी आध्यात्मिक साधना करते थे। वे मुझे बार-बार आर्शीवाद भी भेजते थे।

जब-जब मैंने याद किया तब-तब उन्होंने मुझे बुलाया और कहा कि नमोस्तु तो भेजते हो आते क्यों नहीं, लोगों के द्वारा बताए जाने पर मैं उनके पास पहुंच ही गया और उन्होंने तो मुझे बड़ी ज़िम्मेदारियां सौंप ही दीं। उनका दर्शन मेरे जीवन को बड़ा सौभाग्य मानता हूं। बुजुर्ग संतों के आशीर्वाद में बड़ी शक्ति होती है। गरु का उपकार भूलाया नहीं जा सकता है व हमारा जीवन कुंभकार की भांति सुन्दर आकार का कर दे देते हैं। शिष्य बांस होता हैं उसे वे बांसुरी बना देते हैं। इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए, अशोक छाबड़ा जैन समाज अध्यक्ष प्रदीप पाटनी अध्यक्ष मुनी संघ समिति भानु कुमार जैन, हेमंत टोंग्या, सुभाष पाटनी, कैलाश चन्द्र बाझल पवन चांदवाड़, देवकुमार छाबड़ा राजेन्द्र टोंग्या, लोकेश जैन, नीर्मल जैन दिल्ली महिला महासमिति श्र संघ आदि ने। मंगलाचरण किया रुचि टोंग्या ने।

इंदौर, शनिवार, 7 फरवरी 2015
पीपुल्स समाचार
इंदौर, शनिवार 7 फरवरी 2015

सीमंधरसागरजी की याद में नमोकार मंत्र

इंदौर। दिगंबर जैन समाज के चरित्र चक्रवर्ती आचार्य शांतिसागरजी की परंपरा के चतुर्थ आचार्य सीमांधर सागरजी का समाधिमरण हो गया है। आचार्य आर्जवसागरजी के भारतभर में जैन समाजजनों से इस मौके पर रविवार को सुबह 8 से 10 तक विनयांजलि सभा, शांतिपाठ, नमोकार महामंत्र पाठ करने की अपील की है। नौ बार नमोकार महामंत्र से आचार्यश्री को श्रद्धासुमन अर्पित किए जाएंगे। हाटपिपल्या के मंदिर में बड़े स्तर के आयोजन में इंदौर के भानूकुमार जैन, अरविंद जैन, पद्‌म काला, हर्षद मेहता, मनीष काला, रजत जैन, राजा जैन, मनीषा जैन आदि पहुंचेंगे।

पत्रिका
इंदौर, मंगलवार, 10 फरवरी 2015
news

बुजुर्ग संतों के आशीर्वाद में बड़ी शक्ति

इंदौर @ पत्रिका. आचार्य सीमंधर सागर महाराज के समाधिस्थ होने पर आचार्य आर्जव सागर महाराज के सानिध्य में हाट पीपल्या में जैन मंदिर में श्रद्धांजलि सभा, नवकार मंत्र, शांति पाठ का आयोजन हुआ। दिगंबर जैन समाज के भानु कुमार जैन ने बताया कि सभी ने खड़े होकर नमोकार मंत्र पढ़कर श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर आर्जव सागर ने कई संस्मरण सुनाए। उन्होंने कहा कि बुजुर्ग संतों के आशीर्वाद में बड़ी शक्ति होती है। गुरु का उपकार भुलाया नहीं जा सकता है, वे हमारे जीवन को कुंभकार की भांति सुंदर आकार दे देते हैं। इस अवसर पर प्रदीप पाटनी, भानु कुमार जैन, हेमंत टोंग्या, सुभाष पाटनी आदि मौजूद थे।

SANJAY LUNAWAT GROUP वर्ष : 9 अंक : 241 इंदौर, शुक्रवार 30 जनवरी 2015 पृष्ठ : 8 कीमत : एक रुपया नगर संस्करण e-paper www.6pm
डाक पंजीयन नं. MP/ICD/1257/2012-2014
भारत का सबसे तेज बढ़ता शाम का अखबार
सांध्य दैनिक 6pm
वास्ता सिर्फ खबरों से
इंदौर, भोपाल, उज्जैन व खरगोन से एक साथ प्रकाशित

"शांति का मार्ग हमेशा सफल होता है भले ही परिणाम मिलने में देरी क्यों न हो"

मुनिश्री आर्जवसागर महाराज का पदारोपण समारोह

इंदौर। इंदौर दिगंबर जैन समाज के भानु कुमार जैन ने बताया कि दिगंबर जैन मंदिर रिषीधाम एम.एस.जे. फार्म हाउस इंदौर में चारीत्र चक्रवती आचार्य श्री शांति सागर जी महाराज के परंपरा के चतुर्थ आचार्य श्री सीमन्धर सागर जी महाराज ने सल्लेखना की साधना के अवसर पर अपना उत्तर दायित्व रूप से आचार्य पद को विधी विधान से धर्म प्रभावक आर्जव सागर मुनी राज को सौंप दिया। मुनी राज श्री आर्जव सागर महाराज ने कहा कि आपकी काया अतिवृदता की ओर जा रही हैं।

आपकी सल्लेखना की साधना में जो त्याग की भावना है वह बड़ी पुज्नीय हैं। आप से यही भावना भाते हैं, कि आप मेरे लायक सेवा अवश्य बतलावे तथा हम आपकी जो चरित्र चक्रवती आचार्य शांति सागर जी महाराज से चली आ रही परम्परा की धारा को अनवरत बहाते रहेंगे उसे नष्ट नहीं होने देंगे इस महान कार्य पर आपका आशीर्वाद प्रदान करें। आचार्य श्री सीमन्धर सागर जी महाराज ने आर्जव सागर महाराज के सिर पर हाथ रखकर और पीछी से आशीर्वाद प्रदान कर आचार्य पदारोहण समारोह संपन्न हुआ। प्रमुख रूप से इंदौर के और इंदौर के बाहर से पधारे भानु कुमार जैन इंदौर अरविंद जैन सागर, सुरेश गांधी सुरत, भुपेंद्र भाई मेहता सुरत, अशोक जैन भोपाल, निलेश अजमेरा हरदा, रजत कुमार जैन, श्रीमती मनीषा जैन आदि उपस्थित थे ने महाराज श्री को श्रीफल भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया।

भास्कर

नवकार मंत्र, शांति पाठ कर अर्पित की श्रद्धांजलि

इंदौर, बुधवार, 11 फरवरी 2015
दबंग City

सीमंधरसागरजी को दी श्रद्धांजलि

दोपहर इंदौर मंगलवार 10 फरवरी 2015

सीमंधर सागरजी महाराज की श्रद्धांजलि सभा संपन्न

सीमंधरसागर महाराज को समारोह में दी श्रद्धांजलि

न्यूज़ TODAY इंदौर, बुधवार 11.02.15

संतों के आशीर्वाद में बड़ी शक्ति

राज एक्सप्रेस इंदौर गुरुवार 12 फरवरी 2015

बुजुर्ग संतों के आशीर्वाद में बड़ी ताकत होती है: आर्जव सागर

आचार्यश्री सीमन्धरसागर जी के सिर
पर तैल मालिश करते हुए आर्जवसागरजी

प्रसन्नता के क्षणों में दोनों गुरुओं की दर्शनीय मुद्रा।

वैयावृत्ति के समय फोटो लेते हुए
सुरेश भाई गांधी, सूरत।

शास्त्र चर्चा करते हुए आचार्यश्री के साथ
आर्जवसागरजी महाराज।

अपने आचार्यपद को ग्रहण करने की
बात करते हुए आचार्यश्री सीमन्धरसागरजी।

मैं बहुत छोटा हूँ! आपके इतने बड़े
आचार्यपद को कैसे सम्हालूँगा?

तुम्हारे अन्दर योग्यता है सम्हालो;
मुझे सल्लेखना में निर्भार कर निश्चिंत करो।

ठीक है महाराज आपकी आज्ञा
शिरोधार्य है हम परम्परा की रक्षा करेंगे।

राज एक्सप्रेस बुधवार, 8 अप्रैल, 2015

आचार्य आर्जवसागर महाराज का मुनि दीक्षा दिवस समारोह सम्पन्न

इंदौर। आचार्य आर्जवसागर महाराज का 28वॉं मुनि दीक्षा दिवस समारोह खंडवा के बीड़ में भव्य पैमाने पर मनाया गया। आचार्यश्री का नगर भ्रमण कराकर समारोह स्थल पर ले जाया गया। जहां पर विशाल पांडाल में आचार्यश्री का 28वॉं मुनि दीक्षा दिवस महोत्सव का शुभारंभ आचार्य विद्यासागर महाराज के चित्र पर दीप प्रज्वलित कर किया। आर्जवसागर महाराज़ के 28वें दीक्षा दिवस समारोह पर 28 दिपों से भव्य संगीतमय आरती, चवरसे नृत्य करते हुए पूर भक्ति भाव से की। इस समारोह में महाराजश्री ने जहॉ-जहॉ चतुर्मास किया गया वहा से सैकड़ो की संख्या में उनके भक्तगण इंदौर सहित सूरत, राजस्थान, महाराष्ट्र, दिल्ली, तमिलनाडू अनेको स्थानों से पहुंचेंगे।

इस अवसर पर आचार्य आजर्वसागर महाराज ने कहा कि महावीर अखिल मानवता के भगवान हम ये ना सोचे की महावीर पर केवल जैनों का अधिकार है नहीं है वे अखिल मानवता के भगवान है महापुरुष किसी पंत परम्परा से बंध के नही रहते है वे सबके होते है। इसके लिए होते राम, कृष्ण, महावीर, जीजस, बुद्ध, मोहम्मद, नानक और सुकरात के दिये भले ही अलग हो प़र ज्योति सबकी एक है।

दोपहर इंदौर,गुरुवार 9 अप्रैल 2015

आचार्य आर्जवसागरजी महाराज का 28 वां मुनि दीक्षा दिवस समारोह संपन्न

इंदौर। दिगंबर जैन समाज के भानुकुमार जैन ने बताया कि आचार्य आर्जवसागरजी महाराज का 28वां मुनि दीक्षा दिवस समारोह खंडवा के बीड़ में मनाया गया। आचार्य श्री को नगर भ्रमण कराकर समारोह स्थल पर ले जाया गया। जहां पर विशाल पांडाल में आचार्य आर्जवसागरजी महाराज का 28वां मुनि दीक्षा दिवस महोत्सव का शुभारंभ आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराजजी के चित्र पर द्वीप प्रज्वलित कर किया। उसके पश्चात आचार्य आर्जवसागरजी महाराज का पादपूजन हर्षद भाई, अरविंद भाई, सुरेश भाई, नरेश भाई सूरत यालो ने 28000/- की बोली लेकर पाद प्रक्षालन किया। आचार्यश्री को शास्त्र भेंट रामगंज मंडी के चक्रेश जैन, संजय मित्तल ने 28000 हजार की बोली लेकर किया। आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज के 28वें दीक्षा जिसकी बोली प्रदीप जैन, प्रकाशचंद जैन ने 58000 की बोली ली। इस समारोह में महाराजश्री ने जहां-जहां चातुर्मास किया वहां से सैकड़ों की संख्या में उनके भक्तगण इंदौर सहित सूरत, राजस्थान, महाराष्ट्र, दिल्ली, तमिलनाडु अनेकों स्थानों से पहुचेंगे। इस अवसर पर महाराजश्री को श्रीफल भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया। भानुकुमार जैन, कैलाश जैन, प्रदीपकुमार जैन, पीयूष जैन, नरेंद्र जैन, मनोज जैन, मुकेश जैन, शैलेंद्र जैन, विपिन जैन, ज्योति जैन, अभिषेक जैन, निंतिन जैन, कमलेश जैन आदि ने की।

दैनिक भास्कर

मनुष्य कर्मों में सुधार लाना चाहिए-आचार्य आर्जव सागर

खंडवा। परेशानियों पर दूसरों पर दोष देना मूर्खता होती हैं। हमें परेशानियों का सामना करना चाहिए। यह बात घासपुरा स्थित महावीर जैन मंदिर में आचार्य आर्जव सागर महाराज ने कही। उन्होंने कहा हमें अपने कर्मों में सुधार लाना चाहिए।

दैनिक भास्कर

आचार्य आर्जव सागरजी का मंगल आगमन, जयकारे लगाए

बीड़। जैन समाज के संत आचार्य आर्जव सागरजी महाराज का हिंदू नववर्ष के पहले दिन बीड़ में मंगल आगमन हुआ। समाज के महिला-पुरुष शनिवार सुबह 8 बजे बुखारदास बाबा मंदिर मूंदी पहुंच गए थे। आचार्य के पहुंचते ही जयकारा लगाकर उनकी अगवानी की। समाज के शैलेंद्र जैन ने बताया आचार्यश्री को मंदिर लाया गया। 10.30 बजे आहार और दोपहर 3.30 बजे धर्म तत्व पर चर्चा की गई। आचार्य 10 दिन बीड़ में

6pm बुधवार, 8 अप्रैल 2015

आर्जवसागरजी का मुनि दीक्षा दिवस मनाया

इंदौर। दिगंबर जैन समाज के भानुकुमार जैन ने बताया कि आचार्य आर्जवसागर महाराज का 28वां मुनि दीक्षा दिवस समारोह खंडवा के बीड़ में मनाया गया।

आचार्यश्री को नगर भ्रमण कराकर समारोह स्थल पर ले जाया गया। इस अवसर पर धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्य ने कहा कि महावीर अखिल मानवता के भगवान हम ये ना सोचें कि महावीर पर केवल जैनों का अधिकार नहीं है। वे अखिल मानवता के भगवान हैं। इस अवसर पर भानुकुमार जैन, कैलाश जैन, प्रदीपकुमार जैन, पीयूष जैन, नरेंद्र जैन, मनोज जैन, मुकेश जैन, शैलेंद्र जैन, विपिन जैन, ज्योति

इंदौर, गुरुवार, 9 अप्रैल 2015 **दबंग City**

आचार्य आर्जवसागरजी का 28वां दीक्षा दिवस समारोह सम्पन्न

इंदौर। आचार्य आर्जवसागर महाराज का 28वां मुनि दीक्षा दिवस समारोह खंडवा जिले के बीड़ में मनाया गया। आचार्यश्री को नगर भ्रमण कराकर समारोह स्थल पर ले जाया गया। महोत्सव का शुभारंभ आचार्य विद्यासागर महाराज के चित्र पर दीप प्रज्जवलित कर किया गया। आर्जवसागरजी का पादपूजन हर्षद भाई, अरविंद भाई, सुरेश भाई सुरतवालों ने बोली लेकर पाद प्रक्षालन किया। इस अवसर पर भानुकुमार जैन, कैलाश जैन, प्रदीप कुमार जैन, पीयूष जैन, नरेंद्र जैन, मनोज जैन, मुकेश जैन, शैलेंद्र जैन, विपिन जैन, ज्याति जैन, अभिषेक जैन आदि ने महाजश्री का आशीर्वाद प्राप्त किया।

भास्कर संवाददाता | पंधाना

जितना बन सके भलाई के काम करो- आचार्यश्री

बीड़. जब भी साथ मिलकर बैठें तो किसी की बुराई करने से बचें। अच्छा बनने और बनाने का प्रयास करें। जितना बन सके समाज और लोगों की भलाई के काम करें। नगर के जैन मंदिर में विराजित आचार्य आर्जव सागरजी महाराज ने रविवार को प्रवचन में समाज को यह सीख दी। संतश्री ने एकांत और अनेकांत की भी विस्तृत व्याख्या की। प्रवचन सुनने के लिए समाज के महिला-पुरुष उपस्थित

जैन संत आर्जव सागरजी ने रविवार को प्रेरक

गुरुवार 16 अप्रैल, 2015

इन्दौर समाचार, इन्दौर बुधवार 08 अप्रैल 2015

आचार्य आर्जवसागर जी महाराज का 28 वां दीक्षा दिवस समारोह संपन्न

इंदौर। दिगम्बर जैन समाज के भानुकुमार जैन ने बताया कि आचार्य आर्जवसागर जी महाराज का 28 वां मुनि दीक्षा दिवस समारोह खंडवा के बीड में भव्य पैमाने पर मनाया गया है। आचार्यश्री को नगर भ्रमण कराकर समारोह स्थल पर ले जाया गया। जहां पर विशाल पांडाल में आचार्य आर्जवसागर जी महाराज का 28 वां मुनि दीक्षा दिवस महोत्सव का शुभारंभ आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज का पादपूजन हर्षद, अरविंद, सुरेश, नरेश भाई सूरतवालो ने 28000/- की बोली लेकर पाद प्रक्षालन किया। आचार्यश्री को शास्त्र भेंट रामगंज मंडी के चक्रेश जैन, संजय मित्तल ने 28 हजार की बोली लगाकर किया। आचार्यश्री आर्जवसागर जी महाराज के 28 वे दिक्षा दिवस समारोह पर 28 दिपो से भव्य संगीतमय आरती, चवरसे नृत्य करते हुए पूरे भक्ति

भाव से की जिसकी बोली प्रदीप जैन, प्रकाशचंद्र जैन ने 58 हजार की बोली ली। इस समारोह में महाराजश्री ने जहां जहां चतुर्मास किया गया वहां से सेकडों की संख्या में उनके भक्तगण इंदौर सहित सूरत, राजस्थान, महाराष्ट्र दिल्ली, तमिलनाडू अनेको स्थानों से पहुचेगे। इस अवसर पर धर्मसभा का संबोधित करते हुए आचार्य आर्जवसागर जी महाराज ने कहा कि महावीर अखिल मानवता के भगवान हम ये सोचे की महावीर पर केवल जेनों का अधिकार नही है वे महापुरूष किसी पंत परम्परा से बंध के नही रहते वे सबके होते है। इसके लिए होते राम, कृष्ण, महावीर, जीजस, बुद्व,मोहम्मद, नानक ओर सुकरात के दिये भले ही अलग हो पर ज्योति सबकी एक है। अगर हम माटी के दियो पर ध्यान देगे तो मृण्मय हो जायेगें ओर ज्योति पर ध्यान देगें तो ज्योर्तिमय हो जायेगे। दुनिया को महावीर की जरूरत है हमे चाहिए की हम महावीर को धर्म स्थलो की चार दिवारी में बांध कर रखने के बजाय सबसे आंगन के बीच में ले जाये ताकि वे आम जन मानस के काम आ सके। प्राणी मात्र के हो सके। महावीर ने जितनी जबरदस्त साधना की उतनी साधना ना कोई महापुरूष कर पाय है और ना कर पायेगा। महावीर का जीवन उनके संदेश तब भी उपयोगी थे आज भी उपयोगी है। इस अवसर पर महाराजश्री को श्रीफल भेंट कर आर्शीवाद प्राप्त किया, भानुकुमार जैन, कैलाश जैन, प्रदीपकुमार जैन, पियूष जेन, नरेन्द्र जैन, मनोज जैन, मुकेश जैन, शेलेन्द्र जैन, विपिन जैन, ज्योति जैन, अभिषेक जैन, नितिन जैन, कमलेश जैन आदि ने की।

पारिवारिक दस्तक

इंदौर, बुधवार 8 अप्रैल 2015

मुनि दीक्षा दिवस समारोह संपन्न

इंदौर। दिगंबर जैन समाज के भानुकुमार जैन ने बताया कि आचार्य आर्जवसागर महाराज का 28वां मुनि दीक्षा समारोह खंडवा के बीड़ में मनाया गया। आचार्यश्री को नगर भ्रमण कराकर समारोह स्थल पर ले जाया गया। महोत्सव का शुभारंभ आचार्यश्री

विद्यासागर महाराज के चित्र पर दीप प्रज्वलित कर किया। आर्जवसागर महाराज का पादपूजन हर्षद भाई, अरविन्द भाई, सुरेश भाई, नरेश भाई, शास्त्र भेंट रामगंज मंडी के चक्रेश जैन, संजय मित्तल ने किया। आर्जवसागर महाराज की 28 दीपों से भव्य संगीतमय आरती, चवंरसे नृत्य करते हुए पूरे भक्तिभाव से की। जिसकी प्रदीप जैन, प्रकाशचंद जैन ने बोली ली। महाराजश्री श्रीफल भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया- भानुकुमार जैन, कैलाश जैन, प्रदीप कुमार जैन, पीयूष जैन, नरेंद्र जैन, मनोज जैन, मुकेश जैन, शैलेंद्र जैन, विपिन जैन, ज्योति जैन, अभिषेक जैन, नितिन जैन, कमलेश जैन ने।

आचार्य पदारोहण पर पिच्छिका परिवर्तन
करते हुए गुरु द्वय।

आचार्य पदारोहण पर गणधरवलय
पूजन के अर्घ समर्पण करती हुईं ब्र. बहिने।

आचार्य पदारोहण पर गुरुपाद प्रक्षालन
का अद्भुत दृश्य।

आचार्य पद की विधि में सहयोगी श्रावकगण
मंत्र पढ़ते हुए।

आचार्य आर्जवसागरजी क्षपकश्री सीमन्धरसागरजी
की सेवा हेतु उपदेश देते हुए

आचार्य पदारोहण की पूर्णता पर
केशर लगाते हुए भानुकुमार जैन, इंदौर।

आचार्यश्री सीमन्धरसागरजी की
अन्तिम सेवा करते हुए आचार्यश्री आर्जवसागरजी

आचार्यश्री सीमन्धरसागरजी की सल्लेखना
के उपरान्त अन्तिम यात्रा का पावन दृश्य।

आचार्यश्री आर्जवसागरजी के सान्निध्य हुए सिद्धवरकूट मेले में
बाहुबली भगवान का मस्तकाभिषेक देखते हुए भक्तगण।

आ.श्री आर्जवसागरजी
सिद्धवरकूट में नर्मदा के किनारे।

सिद्धवरकूट में हुए सिद्ध चक्र महामण्डल विधान
में प्रवचन देते हुए आ.श्री

आचार्यश्री आर्जवसागरजी के सान्निध्य में
शास्त्र विमोचन करते हुए प्रदीप कासलीवाल आदि।

बागली में जज आदेश जैन के बंगले पर आचार्यश्री
आर्जवसागर जी महाराज आदि।

हाटपीपल्या में आचार्य सीमन्धरसागरजी की समाधि पर श्रद्धांजलि एवं
आचार्यश्री आर्जवसागरजी का प्रथम अभिनन्दन समारोह।

रजि. क्रं. MPHIN/2007/27127

आ.श्री आर्जवसागरजी महाराज के पाद प्रक्षालन करते हुए रामगंजमण्डी कोटा के भक्तगण।

आ.श्री आर्जवसागरजी की आरती करते हुए वीड़ के भक्तगण।

आ.श्री आर्जवसागर जी के लिए श्रीफल भेंट करते हुए डॉ. अजित जैन भोपाल व हर्षद भाई मेहता आदि सूरत

वीड़ नगर (खण्डवा) के भक्तगण आ.श्री आर्जवसागरजी का प्रवचन सुनते हुए।

मंच पर आसीन हो प्रवचन देते हुए आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज।

आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के चित्र का अनावरण करते हुए वीड़ के भक्तगण।

महावीर जयन्ती के विमानोत्सव पर वीड़ नगर में उमड़ा जनसमूह।

सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करती हुई कन्या मण्डल वीड़ की कन्यायें।

स्वामी एवं प्रकाशक : श्रीमती सुषमा जैन द्वारा मुद्रक : पवन कुमार जैन द्वारा पारस प्रिन्टर्स, 207/4, सांईबाबा काम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं एमआईजी-8/4, गीतांजली काम्पलेक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित।
सम्पादक - श्रीपाल जैन 'दिवा' एल-75, केशर कुंज, हर्षवर्धन नगर, भोपाल-3 (म.प्र.)